धवला पुस्तक १६

११ मोक्खाणुयोगद्दारं

महुवरमहुवरवाउलवियसियसियसुरहिगंधमल्लेहिं
मल्लिजिणमच्चियूण य मोक्खणुयोगो परूवेमो ॥१॥

मधुको करनेवाले भ्रमरों से व्याकुल ऐसे विकसित, धवल और सुगन्धित पुष्पमालाओं के द्वारा मल्लि जिनेन्द्र की पूजा करके मोक्ष-अनुयोगद्वार की प्ररूपणा करते हैं॥

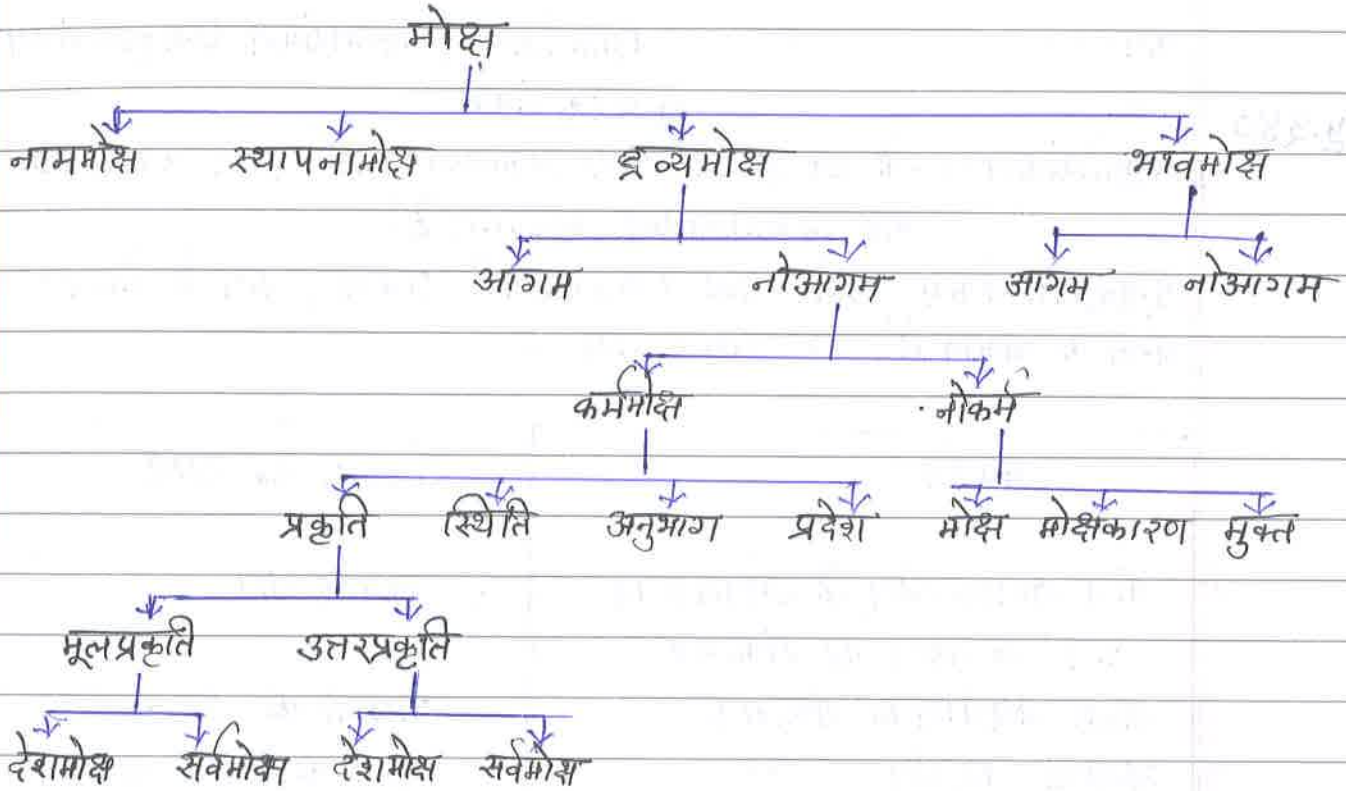

1) प्रकृतिमोक्ष → जो प्रकृति निर्जरा को प्राप्त होती है अथवा अन्य प्रकृति में संक्रांत होती है वह प्रकृतिमोक्ष कहलाता है।

2) स्थितिमोक्ष → अपकर्षण को प्राप्त हुई, उत्कर्षण को प्राप्त हुई, अन्य प्रकृति में संक्रान्त हुई और अधःस्थिति के गलने से निर्जरा को भी प्राप्त हुई स्थिति का नाम स्थितिमोक्ष है।

3) अनुभागमोक्ष → अपकर्षण को प्राप्त हुआ, उत्कर्षण को प्राप्त हुआ, अन्य प्रकृति में संक्रान्त और अधःस्थितिगलन के द्वारा निर्जरा को भी प्राप्त हुए अनुभाग को अनुभाग मोक्ष कहा जाता है।

4) प्रदेशमोक्ष → अधःस्थितिगलन के द्वारा जो प्रदेशों की निर्जरा और प्रदेशों का अन्य प्रकृतियों में संक्रमण होता है उसे प्रदेशमोक्ष कहा जाता है।

पृ. ३३९ १२ संकमाणुयोगद्वार

'मुणिसुव्वयदेसयरं पणमिय मुणिसुव्वयं जिणं देवं।
संकममणुओगमिणं जहासुअं वण्णइस्सामो ॥१॥
मुनियों के उत्तम चरित्र का उपदेश करनेवाले मुनिसुव्रत जिनेन्द्र को नमस्कार करके श्रुत के अनुसार संक्रम अनुयोग द्वार का वर्णन करते हैं।

कर्मसंक्रम चार प्रकार का है - १) प्रकृतिसंक्रम २) स्थितिसंक्रम ३) अनुभाग संक्रम ४) प्रदेश संक्रम

पृ.३४०
१) प्रकृतिसंक्रम → जो एक प्रकृति अन्य प्रकृतिस्वरूपताको प्राप्त करायी जाती है यह प्रकृतिसंक्रम कहलाता है।
मूलप्रकृतिसंक्रम नहीं होता। उत्तरप्रकृति संक्रम, बन्ध के होने पर होता है बन्ध के अभाव में वह संभव नहीं है।

	प्रकृति	संक्रमण का स्वामी
१)	पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय पांच अन्तराय का संक्रामक	सकषाय जीव
२)	साता वेदनीय का संक्रामक	असाता का बन्धक
३)	असाता वेदनीय "	साता का बन्धक सकषाय जीव
४)	सम्यक्त्व प्रकृति का "	मिथ्यादृष्टी जीव
५)	मिथ्यात्व " "	सम्यग्दृष्टी जीव
६)	सम्यग्मिथ्यात्व का "	सम्यग्दृष्टी अथवा मिथ्यादृष्टी
७)	बारह कषायों का "	सकषाय जीव, नौवे गुणस्थान तक
८)	स्त्रीवेद का "	स्त्रीवेद अनुपशान्त रहने के अन्तिम समय तक " अक्षीण " " " "
९)	नपुंसकवेद " "	नपुंसक वेदके अनुपशान्त अथवा अक्षीण रहने के अन्तिम समय तक
१०)	पुरुषवेद " "	पुरुषवेद के उपशान्त/या क्षीण होने के प्रथम समय तक
११)	तीन संज्वलनकषाय " "	अपने अपने " " " " "
१२	संज्वलन लोभकषाय "	नववें गुणस्थान में अन्तरकरण के अन्तिम समय तक
१३)	नामप्रकृतियों का (यशःकीर्तिको छोड़कर) संक्रामक	सकषाय तक

प्रकृति	संक्रमण का स्वामी
यश:कीर्ति का संक्रामक	आठवें गुणस्थान के छठे भागतक
उच्चगोत्र का "	नीचगोत्र का बन्धक दूसरे गुणस्थानतक
नीचगोत्र का "	उच्चगोत्र का बन्धक सकषाय जीव

१) दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय में परस्पर संक्रमण नहीं होता।
२) आयुकर्म की उत्तरप्रकृतियों में परस्पर संक्रमण नहीं होता।
३) जिस प्रकृति में संक्रमण होता है उसका बन्ध होना आवश्यक है। जिसका संक्रमण हो रहा है उसका बंध आवश्यक नहीं है।
४) जब तक एक आवलि सत्त्व रहता है तबतक ही संक्रमण होता है अर्थात उदयावलि में प्राप्त द्रव्य का ५ प्रकार का संक्रमण नहीं होता। उस द्रव्य का एकेक समय में स्तिबुक संक्रमण होता है।

पृ.३४२-३४३

प्रकृति का नाम	संक्रमण काल		संक्रमणअन्तर	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
१) ५ज्ञानावरणीय, ९दर्शनावरणीय, २५ मोहनीय, ५ अंतराय अनुद्वेलित नामप्रकृतियाँ	अन्तर्मुहूर्त	उपार्धपुद्गल परिवर्तन	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
२) साता व असाता वेदनीय	१ समय	अन्तर्मुहूर्त, दो	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
३) मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व	अन्तर्मुहूर्त	कुछ अधिक ६६ सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त	उपार्ध पुद्गल परिवर्तन
४) सम्यक्त्व	अन्तर्मुहूर्त	पल्योपम असंख्यात	"	"
५) नरकद्विक, देवद्विक, वैक्रियिकचतुष्क	साधिक आठवर्ष अथवा अन्तर्मुहूर्त	साधिक दोन हजार सागरोपम	एक समय	असंख्यात पुद्गल परिवर्तन
६) मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी	साधिक ८ वर्ष या अन्तर्मुहूर्त	असंख्यात पुद्गल परिवर्तन	१ समय	असंख्यात लोक
७) उच्चगोत्र	अन्तर्मुहूर्त	साधिक ३३ सा.	"	"
८ नीचगोत्र	"	३ पल्य + दो सा.	"	"
९) आहारक चतुष्क	अन्तर्मुहूर्त	पल्योपम असंख्यात	१ समय	उपार्ध पुद्गल परिवर्तन
१०) तीर्थंकर	"	साधिक 33 सा.	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
११) अनन्तानुबन्धिचतुष्क			अन्तर्मुहूर्त	साधिक दो ६६ सागरोपम

अन्तर व समय का स्पष्टीकरण।

1) ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय का संक्रमण दसवें गुणस्थानतक होता है। कोई जीव ग्यारहवें गुणस्थान को प्राप्त हुआ वहाँ एक समय रहा और मरण को प्राप्त होकर देव में गया वहाँ असंयत सम्यग्दृष्टी हुआ उसी समय संक्रमण प्रारंभ हुआ उस जीव के संक्रमण में एक समय का ही अन्तर हुआ। दो तीन आदि समय रहकर मरण को प्राप्त हुआ तो दो तीन आदि समय का अन्तर हुआ। 11 वें गुणस्थान में पूर्ण रहकर दसवें गुणस्थान को प्राप्त हुआ या मरण को प्राप्त हुआ तो उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है। आगे सर्वत्र इसीप्रकार जानना।

2) सम्यक्त्व को प्राप्त होने पर ही मिथ्यात्व का संक्रमण होता है। कोई जीव एकबार सम्यक्त्व को प्राप्त होकर पुनः मिथ्यात्व में गया। सम्यक्प्रकृति का उद्वेलन किया और पुनः उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक सम्यक्त्व को प्राप्त नहीं किया तो उसजीव का मिथ्यात्व और सम्यक्त्व प्रकृति के संक्रमण का अन्तर उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

3) सम्यक्त्व प्रकृति का उद्वेलन काल पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग है इसलिए उसका उत्कृष्ट संक्रमण काल पल्योपम ÷ असंख्यात बताया है।

4) साधिक 8 वर्ष काल → मनुष्यद्विक की उद्वेलन कर कोई जीव तेजस्कायिक या वायुकायिक में अन्य पर्याय में गया वहाँ मनुष्यद्विक का बन्ध कर अन्तर्मुहूर्त में मनुष्य में पैदा हुआ 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान को प्राप्त हुआ उसका मनुष्यद्विक का जघन्य संक्रमण काल साधिक 8 वर्ष है।

5) 11 वें गुणस्थान से नीचे उतरकर अन्तर्मुहूर्त में क्षपकश्रेणीचढ़कर केवलज्ञान को प्राप्त हुआ इस विवक्षा में मनुष्यद्विक का जघन्य संक्रमणकाल अन्तर्मुहूर्त कहा है।

6) तेजस्कायिक वायुकायिक पर्याय का उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक है अतः मनुष्यद्विक का उद्वेलन होने के पश्चात् वहाँ संक्रमण का अन्तर प्रारंभ हुआ तो उत्कृष्टरूप से इतने काल का अन्तर होगा।

7) भोगभूमि में उच्चगोत्र का ही बंध होता है इसलिए वहाँ निरन्तर तीन पल्यतक नीचगोत्र का ही संक्रमण होगा वहाँ सम्यक्त्व प्राप्त करके देव में गया फिर बीच में मिश्र गुणस्थान में जाकर दो 66 सागरोपम कालतक सम्यक्त्व में रहा तो निरन्तर नीचगोत्र का ही संक्रमण होगा अतः नीचगोत्र का उत्कृष्ट संक्रमण काल तीन पल्योपम अधिक दो छ्यासठ सागरोपम कहा है।

नरकद्विक, देवद्विक, वैक्रियिकचतुष्क का बन्ध त्रसजीव ही करता है। बंध होने के बाद उसका संक्रमण प्रारंभ हुआ आठ वर्ष में केवलज्ञान को प्राप्त हुआ तो जघन्य काल साधिक आठ वर्ष। त्रसपर्याय का उत्कृष्ट काल साधिक दो हजार सागरोपम है इसलिए उत्कृष्ट काल साधिक दो हजार सागरोपम है। एकेन्द्रिय में उत्पन्न होकर उपर्युक्त आठ प्रकृति का उद्वेलन कर एकेन्द्रिय पर्याय में असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक रहा तो उपर्युक्त ८ प्रकृतियों का उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पु.परि. है।

पृ. ३४४

संक्रामक का अल्पबहुत्व

प्रकृति का नाम	अल्पबहुत्व	विशेष अधिक प्रमाण का स्पष्टीकरण
आहारक शरीर संक्रामक	स्तोक	
सम्यक्त्व के "	असंख्यातगुणे	सम्यक्त्व से च्युत होकर मिथ्यात्व को प्राप्त हुए जीव
मिथ्यात्व के "	"	सम्यग्दृष्टि ४-५-६-७ गुणस्थानवर्ती
सम्यग्मिथ्यात्व "	विशेष अधिक	सम्यग्दृष्टि + मिथ्यात्व को प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टि
देवगतिनाम के "	असंख्यातगुणे	
नरकगति के "	विशेष अधिक	देवगति की उद्वेलना पूरी होने के पश्चात् नरकगति की उद्वेलना पूर्ण होती है उतने अधिक है।
वैक्रियिक शरीर "	विशेष अधिक	देवगति और नरकगति इन दोनों का संक्रमण करनेवाले मिलाकर
नीचगोत्र के "	अनन्तगुणे	सर्व जीव इसमें अन्तर्भूत है इसलिए अनन्तगुणे हो गये
असातावेदनीय "	संख्यातगुणे	
सातावेदनीय "	"	असातावेदनीय का बंधककाल संख्यातगुणा है इसलिए साता के संक्रामक संख्यातगुणे है।
उच्चगोत्र "	विशेष अधिक	उच्चगोत्र की उद्वेलना करनेवाले तेजद्विक जीव अधिक लेना
मनुष्यगति के "	" "	
अनन्तानुबन्धी "	" "	
यशःकीर्ति के "	" "	आठवे गुणस्थान के छठे भागके जीव विशेष अधिक लेना।
आठों कषायों के "	" "	आठवे गुणस्थान के सातवें भाग के जीव और ८ कषायों के क्षपक काल तक के नववें गुणस्थानवर्ती साधिक
स्त्यानगृद्धित्रिक, १३ नामकर्म के "	विशेष अधिक	१६ प्रकृतियों के क्षपक जीव साधिक
संज्वलनलोभ "	विशेष अधिक	अन्तरकरण काल में स्थित जीव

प्रकृति नाम	अल्पबहुत्व	अल्पबहुत्व का स्पष्टीकरण
नपुंसकवेद के संक्रामक	विशेष अधिक	नपुंसकवेद के उपशमक और क्षपककाल में स्थित जीव साधिक
स्त्रीवेद के "	" "	स्त्रीवेद के " " " "
छह नोकषायों "	" "	छह नोकषाय के " " " "
पुरुष वेद के "	" "	1 समयकम दो आवलि में स्थित जीव "
क्रोध के "		क्रोध उपशमक और क्षपक काल में स्थित
मान के "	" "	मान " " " "
माया के "	" "	माया " " " "
(5 ज्ञानावरण, 9 दर्शना. 6 शेष नामप्रकृति 5 अंतराय)	" "	लोभ " " " " और दसवें गुणस्थानवर्ती

देवगति में नरकगति में अल्पबहुत्व

	प्रकृति के नाम	अल्पबहुत्व	अल्पबहुत्व का स्पष्टीकरण
1)	आहारक शरीर नामकर्म के संक्रामक	स्तोक	
2)	सम्यक्त्व के "	असंख्यातगुणे	
3)	मिथ्यात्व के "	"	
4)	सम्यग्मिथ्यात्व के "	विशेष अधिक	
5)	नीचगोत्र के "	असंख्यातगुणे	(मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि के असंख्यातवें भाग
6)	असातावेदनीय के "	संख्यातगुणे	" " संख्यात बहुभाग
7)	सातावेदनीय के "	"	" " "
8)	उच्चगोत्र के "	विशेष अधिक	सातवीं पृथ्वी के सभी मिथ्यादृष्टि
9)	अनन्तानुबन्धीचतुष्क के "	विशेष अधिक	सभी मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि
10)	शेष कर्मों के संक्रामक	विशेष अधिक	अनन्तानुबन्धी के विसंयोजक जीव अधिक हैं।

तिर्यंचगति में

प्रकृति के नाम	अल्पबहुत्व	अल्पबहुत्व का स्पष्टीकरण
आहारक शरीर नामकर्म के संक्रामक	स्तोक	
सम्यक्त्व के "	असंख्यातगुणे	
मिथ्यात्व के "	"	
सम्यग्मिथ्यात्व के "	विशेष अधिक	
देवगति के "	असंख्यातगुणे	
नरकगति के "	विशेष अधिक	

	वैक्रियिक शरीर के संक्रामक	विशेष अधिक
	नीचगोत्र के "	अनन्त गुणे
	असाता वेदनीय के "	संख्यात गुणे
	साता वेदनीय के "	"
	उच्चगोत्र के "	विशेष अधिक
	मनुष्यगति के "	" "
	अनन्तानुबन्धिचतुष्क "	" "
	शेष कर्मों के "	" "
मनुष्यगति में	आहारक शरीर नामकर्म "	स्तोक
	मिथ्यात्व के "	संख्यातगुणे
	सम्यक्त्व के "	असंख्यातगुणे
	सम्यग्मिथ्यात्व के "	विशेष अधिक
	देवगति के "	असंख्यातगुणे
	नरकगति के "	विशेष अधिक
	वैक्रियिक शरीर के "	" "
	नीचगोत्र के "	असंख्यातगुणे
	असातावेदनीय के "	संख्यातगुणे
	सातावेदनीय के "	"
	उच्चगोत्र के "	विशेष अधिक
	अनन्तानुबन्धिचतुष्क "	" "
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, जीवों में	आहारक शरीर के "	स्तोक
	सम्यक्त्व के "	असंख्यातगुणे
	सम्यग्मिथ्यात्व के "	विशेष अधिक
	देवगति के "	असंख्यातगुणे
	नरकगति के "	विशेष अधिक
	वैक्रियिक शरीर के "	" "
	नीचगोत्र के "	असंख्यातगुणे
	असातावेदनीय के "	संख्यातगुणे
	सातावेदनीय के "	"

प्रकृती नाम	अल्पबहुत्व	अल्पबहुत्व का स्पष्टीकरण
उच्चगोत्र के संक्रामक	विशेष अधिक	
शेष कर्मों के "	" "	

विशेष

1) नीचगोत्र का बंधक उच्चगोत्र का संक्रामक है और उच्चगोत्र का बंधक नीचगोत्र का संक्रामक होता है। नीचगोत्र का बंधककाल उच्चगोत्र के बंधककाल से संख्यातगुणा है इसलिए नीचगोत्र के संक्रामक से उच्चगोत्र के संक्रामक संख्यातगुणे है। इसीप्रकार वेदनीय कर्म का भी अल्पबहुत्व जानना।

2) उच्चगोत्र के बंधककाल से सातावेदनीय का बंधककाल संख्यातगुणा है। साता वेदनीय से असातावेदनीय का बंधककाल अधिक है। असाता वेदनीय का बंध छठे गुणस्थान तक है इसलिए वहाँतक साता, असाता दोनों के संक्रामक पाये जाते हैं। सातवें गुणस्थान से केवल असाता के संक्रामक है।

3) नीचगोत्र का बंध दूसरे गुणस्थानतक ही है इसलिए वहीतक उच्चगोत्र का संक्रमण पाया जाता है।

4) तेजस्कायिक और वायुकायिक में, तथा सप्तम पृथ्वी के मिथ्यादृष्टियों में उच्चगोत्र का ही संक्रमण पाया जाता है इसलिए साता वेदनीय के संक्रामक से उच्चगोत्र के संक्रामक विशेष अधिक पाये जाते हैं।

पृ. 386 स्थानसमुत्कीर्तन

ज्ञानावरण प्रकृतिसंक्रम का १ स्थान = पांचप्रकृतिक एक स्थान
दर्शनावरण " के २ स्थान = ९, ६, प्रकृतिक
मोहनीय
वेदनीय, गोत्र, १ स्थान = १ प्रकृतिक
अंतराय १ " = ५ प्रकृतिक
नामकर्म गतिसंबंधी ४ स्थान = १, २, ३, ४ प्रकृतिक संक्रमण

जहाँ दो गति का सत्त्व है = वहाँ एक गति का ही संक्रमण होता है।
जहाँ तीन " " वहाँ दो " " "
जहाँ चार " " " तीन " " "
आठवें के छठे भाग के बाद चारों गति का संक्रमण होता है।

स्थितिसंक्रम दो प्रकार है –

१) मूलप्रकृतिस्थिति संक्रम २) उत्तरप्रकृतिस्थितिसंक्रम

अपकर्षण के कुछ नियम

१) उदयावली के भीतर की स्थितियों का अपकर्षण नहीं होता।

२) उदयावली के ऊपर की स्थितियों का अपकर्षण होता है, भले ही वह एक समय की स्थिति हो।

३) उदयावली के ऊपर की एक समय स्थिति का अपकर्षण होने पर | माना कि आवली १६ समय

अतिस्थापना (आवली − १) × 2 / ३ = (१६ − १) × 2 / ३ = १५ × 2 / ३ = १० समय अतिस्थापना

निक्षेप { (आवली − १) / ३ } + १ = (१६ − १) / ३ + १ = (१५ / ३) + १ = ६ समय निक्षेप

एक-एक समय अधिक स्थिति का निक्षेप उतना ही होता है, अतिस्थापना एक-एक समय बढ़ती है। अतिस्थापना आवलीप्रमाण प्राप्त होने तक बढ़ती है इसके बाद निक्षेप बढ़ता है।

जघन्य अतिस्थापना = (जघन्य निक्षेप × 2) − 2 = (६ × 2) − 2 = १2 − 2 = १०

उत्कृष्ट अतिस्थापना = जघन्य अतिस्थापना × असंख्यात = १ समय कमी उत्कृष्ट काण्डकप्रमाण

उत्कृष्ट काण्डक = उत्कृष्ट अतिस्थापना + १ समय = ३० को.2 सागर − अन्त: को.2 सा.

उत्कृष्ट निक्षेप = उत्कृष्ट काण्डक से विशेष अधिक = ३० को.2 सागर − (दो आवली + १)

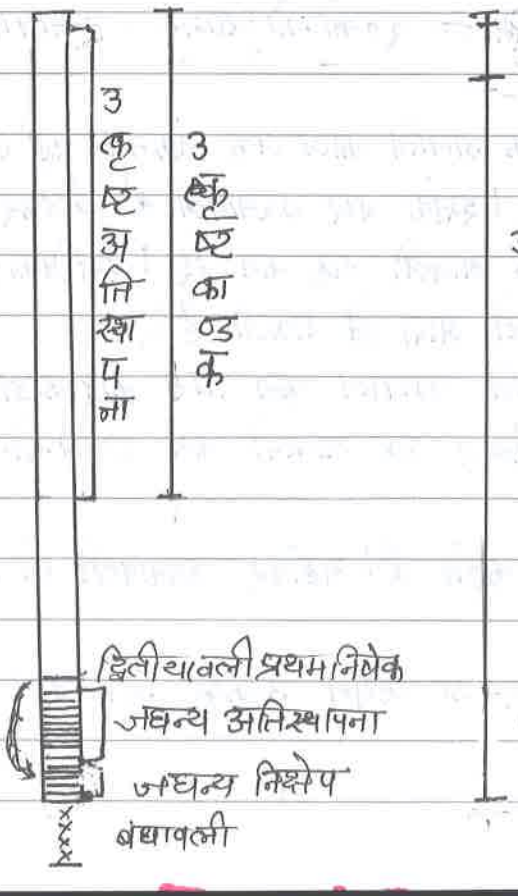

पृ. ३५८

उत्कर्षण -

1) उदयावली के भीतर की स्थिति का उत्कर्षण नहीं होता।
2) एक समय अधिक उदयावली आदि रूप स्थिति का उत्कर्षण हो सकता है।
3) बध्यमान स्थितियों में उत्कर्षण किया जाता है।
4) पूर्वसत्त्व से समय अधिक स्थिति को बांधनेवाले के पूर्वबद्ध कर्म की चरम स्थि द्विचरम आदि स्थितियों का उत्कर्षण नहीं किया जाता इसप्रकार एक आवली और एक आवली के असंख्यातवें भाग तक की नीचे की स्थितियों का उत्कर्षण नहीं होता उसके नीचे की स्थिति का उत्कर्षण किया जाता है। उसकी अपेक्षा अतिस्थापना = 1 आवली, निक्षेप = आवली का असंख्यातवाँ

जघन्य निक्षेप	स्तोक	आवली ÷ असंख्यात
जघन्य अतिस्थापना	असंख्यातगुणी	आवली
उत्कृष्ट अतिस्थापना	संख्यातगुणी	{उत्कृष्ट आबाधा − (आवली + 1 समय)}
उत्कृष्ट निक्षेप	असंख्यातगुणा	{कर्मस्थिति − (उत्कृष्ट आबाधा + आवली + 1 समय)}

प्रमाणानुगम

उत्तरप्रकृतिसंक्रम ४ प्रकार का - 1) उत्कृष्ट 2) अनुत्कृष्ट 3) जघन्य 4) अजघन्य

मतिज्ञानावरण का उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम = ३० को.को.सागर - दो आवलि

" जस्थितिसंक्रम = ३० को.को.सागर - 1 आवलि

किसी भी प्रकृति का बंध होने पर एक आवलि काल तक संक्रमण नहीं होता है इसलिए यह एक आवली कम हो जाती है। इसके बाद उदयावली को छोड़कर शेष स्थिति का संक्रमण होता है इसलिए एक आवली यह कम हुई। इस प्रकार दो आवली छोड़कर शेष सब स्थिति संक्रमण से प्राप्त हो सकती है।

संक्रमण के समय उस कर्म की स्थिति आवलि कम तीस कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होती है इसलिए उसका जस्थितिसंक्रम एक आवली कम ३० को.को. सागरप्रमाण कहा है।

आबाधासहित स्थिति को जस्थिति कहते हैं। यहांपर उदयावली को जस्थिति-संक्रम में ग्रहण किया गया है।

सभी कर्मों के उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम का कथन उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा के समान करना।

जो बन्धसे उत्कृष्ट स्थितिवाली प्रकृतियाँ है उनका उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम दो आवलि कम अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण प्राप्त होता है परन्तु जिनका बन्ध उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण न होकर संक्रम के द्वारा उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त होती है उनका उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम तीन आवलि कम उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण प्राप्त होता है।

स्थिति उदीरणा से कुछ विशेषता →

देवगति, देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इनका उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमण दो और तीन आवलियों से हीन बीस कोडाकोडी सागरोपम मात्र है। जब कि इनकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा अन्तर्मुहूर्त कम बीस को.को. सागरोपम है।

देवायु, नारकायु का उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम " " जास्थितिसंक्रम	तेतीस सागरोपम ३३ सा + (पूर्वकोटि/३ − आवली)
मनुष्यायु तिर्यंचायु उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम " " नस्थितिसंक्रम	तीन पल्योपम ३ पल्योपम + (पूर्वकोटि/३ − आवली)

चारों आयुओं का उत्कृष्ट स्थितिबन्ध ही उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम है।
इनकी यत्स्थिति एक आवली कम उत्कृष्ट आबाधासहित उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है।
इसका खुलासा — आयुबन्ध होते समय बन्धावलिप्रमाण काल जाने पर आयुबन्ध के प्रथम समय में बंधे हुए कर्म का उत्कर्षण हो सकता है अतः उसकी जास्थिति उपर्युक्त कही है। अथवा बधावलि के बाद अपकर्षण भी संभव है।
पूर्वकोटि का त्रिभाग आयुकर्म की उत्कृष्ट आबाधा है।
आयुकर्म के बन्ध के प्रथम समय से लेकर एक आवलि काल जाने पर इन बन्धस्थितियों में बन्ध होते समय उत्कर्षण होता है और बन्ध होते समय या बन्ध समय के बाद भी सदैव अपकर्षण होने लगता है। इस उत्कर्षण और अपकर्षण में एक स्थिति से प्रदेश समूह उठकर दूसरी स्थिति में निक्षिप्त होते समय स्थिति के परिणाम में आबाधाकाल भी गर्भित है। यही कारण है कि आयुकर्म की जास्थिति कहते समय नरकायु आदि की अपनी उत्कृष्ट स्थिति में एक आवलि कम उत्कृष्ट आबाधाकाल भी सम्मिलित कर लिया है।

जघन्य स्थितिसंक्रम का प्रमाणानुगम →

	प्रकृति का नाम	जघन्य स्थितिसंक्रम	अजघन्य स्थितिसंक्रम
1)	५ ज्ञाना. ४ दर्शना. ५ अंतराय	१ स्थिति	आवली + १ समय
2)	निद्रा, प्रचला	"	२ आवली + आवली असंख्यात
3)	स्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, सम्यग्मि. बारह कषाय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद	पल्योपम असंख्यात	पल्योपम असंख्यात + आवली " + अन्तर्मुहूर्त
4)	साता वेदनीय, असाता वेदनीय	अन्तर्मुहूर्त	
5)	सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ	१ स्थिति	आवली + १ समय
6)	६ नोकषाय	संख्यातवर्ष	
7)	संज्वलन क्रोध	२ मास - अन्तर्मु.	२ मास - २ आवली
8)	संज्वलन मान	१ मास - अन्तर्मु.	१ मास - २ आवली
9)	संज्वलन माया	½ मास - अन्तर्मु.	½ मास - २ आवली
10)	पुरुषवेद	८ वर्ष - अन्तर्मु.	८ वर्ष - २ आवली
11)	चार आयु	१ स्थिति	आवली + १ समय
12)	नरकद्विक, तिर्यद्विक, एकेन्द्रियादी ४ जाति, आतप, उद्योत, स्थावर सूक्ष्म, साधारण	पल्योपम असंख्यात	जघन्य स्थितिसंक्रम + आवली
13)	देवद्विक, मनुष्यद्विक, पांच शरीर बंधन, संघात, ६ संस्थान, ६ संहनन वर्णचतुष्क, अगुरुचतुष्क, विहायोद्विक, त्रसदशक, अपर्याप्त, अस्थिरषट्क निर्माण, तीर्थंकर, नीच-उच्चगोत्र	अन्तर्मुहूर्त - आवली	अंतर्मुहूर्त + आवली

स्पष्टीकरण →

1) ५ ज्ञाना., ४ दर्शना., ५ अंतराय, सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ, चार आयु इनकी १ समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थिति शेष रहने पर उदयावलि से ऊपर की एक समयमात्र स्थिति का अपकर्षण होता है इसलिए इनका जघन्य स्थितिसंक्रम एक स्थितिप्रमाण है। और यत्स्थितिसंक्रम समयाधिक आवलिप्रमाण है।

2) जिस प्रकृति की क्षपणा के अन्तिम समय में जितनी जघन्य स्थिति शेष रहती है उसमें से उदयावलि को छोड़कर शेष स्थिति का जघन्य स्थितिसंक्रम

जानना और उसमें उदयावली को मिलाकर जस्थितिसंक्रम जानना। किन्तु
2) स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, छनोकषाय इनका जस्थितिसंक्रम अन्तर्मुहूर्त अधिक कहना क्योंकि इनकी क्षपणा अन्तरायाम में होती है उसका काल अन्तर्मुहूर्त है। अत: अन्तर्मुहूर्त के ऊपर जघन्य स्थिति है उसका संक्रमण होते समय जस्थिति अन्तर्मुहूर्त अधिक अपनी अपनी जघन्यस्थितिप्रमाण जानना।
7) संज्वलन क्रोध का जघन्य स्थितिबंध दो मास, संज्वलन मान का 1 मास, संज्वलन माया का अर्ध मास और पुरुषवेद का 8 वर्षप्रमाण होता है। इनका अन्तर्मुहूर्त प्रमाण आबाधाकाल कम करनेपर जघन्य स्थितिसंक्रम का प्रमाण आ जाता है। इनका जस्थितिसंक्रम दो आवलि कम जघन्य स्थितिबंधप्रमाण है क्योंकि एक आवली बंधावली (अचलावली) की कम हो गई और संक्रम प्रारम्भ होने पर एक आवली कालतक रहता है इसलिए एक आवलि यह कम हो गई।

उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम का स्वामित्व

	प्रकृति का नाम	उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम का स्वामी
1)	5 ज्ञाना. 4 दर्श. असातावे. मिथ्यात्व 16 कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा नपुं., तैजसद्विक, वर्णादि4, अगुरु. निर्माण, हुण्डक सं., नीचगोत्र, 5 अन्तराय	उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर आवली काल बीतनेपर एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, पर्याप्त और अपर्याप्त अपर्याप्त में नारक, बा. प्रत्येकशरीर एकें, गर्भज नपुंसक
2)	साता वेदनीय इसीप्रकार हास्य, रति, पुरुष, स्त्री. वेद के स्वामित्व की प्ररूपणा करना चाहिए।	असाता की उत्कृष्ट स्थिति बांधकर फिर साता वेदनीय को बांधता हुआ असाता की एक आवलि से ही उत्कृष्ट स्थिति का सातारूप संक्रमण कर संक्रमणावली को व्यतीत कर वह जीव
3)	स्त्यानगृद्धि त्रिक, निद्रा, प्रचला	उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर प्रतिभग्न होकर
4)	सम्यक्त्व प्रकृति	मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर अन्तर्मुहूर्त में सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ जीव द्वितीय समयमें
5)	सम्यग्मिथ्यात्व	वही सम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि हो गया तब.
6)	चार आयु	अपनी-अपनी उत्कृष्ट आयुस्थिति में उत्पन्न प्रथम समयवर्ती
7	नरकगति, वैक्रियिक शरीर व गत्यानुपूर्वी, अंगोपांग	उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर पांचवी से सातवें नरक में उत्पन्न हुआ प्रथम समय से लेकर आवली काल तक

प्रकृतियों के नाम	उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम का स्वामित्व
8) तिर्यंचगति व तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, औ.शरीर, औदा. अंगोपांग	देवगति व नरकगति का उत्कृष्ट स्थिति का बंधकर निवृत्त जो देवगति व नरकगति से लौटा हुआ गर्भज तिर्यंच नपुंसकवेदी जीव
9) एकेन्द्रिय जाति	देवगति का जीव अथवा देवगति में उत्कृष्ट स्थिति बांधकर (और) हुआ एकेन्द्रिय
10) पंचेन्द्रिय जाति	उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर आवली काल बीतने पर पंचेन्द्रिय जीव
11) मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी	नरकगति की उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर मनुष्यगति को बांधता
12) इसी प्रकार देवगतिद्विक का भी कथन करना।	हुआ नरकगति की उत्कृष्ट स्थिति का मनुष्यगति रूप से संक्रमण होने पर एक आवली काल के पश्चात्
13) आहारक शरीर	आहारक शरीर की उत्कृष्ट स्थिति बांधकर एक आवली के पश्चात्
14) पांच संस्थान, पांच संहनन	उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर आवलीमात्र काल बिताकर
15) उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत	ज्ञानावरण के समान
16) आतपनामकर्म	देव और देवपर्याय से आया हुआ पृथिवीकायिक जीव

शेष प्रकृतियों का स्वामित्व भी यथायोग्य जानना।

पृ.112

प्रकृति का नाम	जघन्यस्थितिसंक्रम का स्वामित्व
1) 5 ज्ञाना., 4 दर्शना, 5 अंतराय	जिसके चरमसमयवर्ती छद्मस्थ होने में एक समय अधिक आवली शेष है वह जीव
2) निद्रा, प्रचला	जिसके 12वें गुणस्थान समाप्त होने में दो आवली और आवली का असंख्यातवाँ भाग शेष है वह जीव
3) स्त्यानगृद्धि त्रिक	नववें गुणस्थान में अन्तिम स्थि.काण्डक के चरम समय में वर्तमान क्षपक
4) साता और असाता वेदनीय	अन्तिम समयवर्ती सयोगी
5) मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व	अन्तिम स्थितिकाण्डक के चरम समय में वर्तमान दर्शनमोहक्षपक
6) अनन्तानुबन्धी कषाय	" " " " " अनन्तानुबन्धी विसंयोजक
7) आठ कषाय	" " " " " आठ कषाय क्षपक
8) नपुंसक वेद	" " " " " नपुंसकवेद क्षपक
9) स्त्रीवेद	" " " " " स्त्रीवेद क्षपक
10) छह नोकषाय	" " " " " छह नोकषाय क्षपक
11) संज्वलन क्रोध, मान, माया	अन्तिम समयप्रबद्ध के क्षेपण करने के अन्तिम समय में वर्तमान उनका क्षपक
12) संज्वलन लोभ	अन्तिम समयवर्ती सू.सां. क्षपक होने में एक समय अधिक आवली मात्र शेष है।

१३	पुरुषवेद	पुरुषवेदका क्षपकजीव अंतिम स्थितिबंध को पूर्णरूप से निक्षिप्त करता है उस समय
१४	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व होने में एक समय अधिक आवली मात्र शेष है।
१५	आयु कर्म	जिसकी आयु समाप्त होने में एक समय अधिक आवली शेष है वह जीव वह
१६	नरकद्विक, तिर्यगेकादश	इन प्रकृतियों के अंतिम स्थि.को. अंतिम फालि का निक्षेप करनेवाला जीव अनिवृत्तिकरण क्षपक
१७	शेष नामप्रकृति	अन्तिम समयवर्ती सयोगी
१८	नीचगोत्र, उच्चगोत्र	,, ,, ,,

एक जीव की अपेक्षा काल

	प्रकृति	उत्कृष्ट संक्रमण		अनुत्कृष्ट संक्रमण		जघन्य संक्रमण		अजघन्य संक्रमण	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
१)	पु.ज्ञा. ९दर्श.५ अंतराय	१ स.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु./१ स.	असं.पु.परिवर्तन	१ स.	१ स	—	अनादि अनंत अनादि सांत
२)	मिथ्यात्व/१६कषाय	,,	,,	,,	,,	,,	,,	अन्तर्मु	अर्धपु.परि.
३)	अरति, शोक, भय, जुगुप्सा	,,	,,	१ स	,,	,,	,,	,,	,,
४)	स्त्रीवेद पुंवेद, हास्य, रति	,,	आवली	१ स	,,	,,	,,	,,	,,
५)	सातावेदनीय	,,	,,	अन्तर्मु	,,	,,	,,	—	अनादि अनंत अनादि सांत
६)	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व			,,	दो ६६ सा	,,	,,	अनर्मु.	दो ६६ सा.
७)	देवायु, नरकायु	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	,,	३३ सा	,,	,,	१० हजार	३३ सा
८)	मनुष्यायु	,,	,,	,,	३ पल्य	,,	,,	१ स.	३ पल्य
९)	तिर्यंचायु	,,	,,	,,	३ पल्य	,,	,,	अन्तर्मु.	३ पल्य
१०)	नरकगति-गत्यानुपूर्वी	१ स	,,	,,	२००० सा.	,,	,,	८ वर्ष	२००० सा.
११)	तिर्यंचद्विक, एके.४जाति आतप, उद्योत, स्थावर सू. साधा.	१ स	अन्तर्मु	,,	असं.पु.परि	,,	,,	—	अनादि अनंत अनादि सांत
१२)	उत्कृष्टबंधवाली अनुत्कृष्ट	१ स	,,	,,	,,	,,	,,	—	,,
१३)	अनुत्कृष्टबंधवाली ,,	१ स	आवली	,,	,,	,,	,,		,,
१४)	देवद्विक, वैक्रियिक४	१ स	,,	,,	२००० सा	,,	,,	८ वर्ष	२००० सा
१५)	वैक्रियिकचतुष्क	१ स.	अन्तर्मु	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१६)	मनुष्यगतिद्विक	१ स.	आवली	,,	,,	,,	,,	८ वर्ष	असं.पु.परि
१७)	आहारकचतुष्क	१ स	१ स	अन्तर्मु.	पल्य÷असंख्यात	,,	,,	अन्तर्मु.	पल्य÷असं.
१८)	तीर्थंकर	,,	,,	संख्यात हजार वर्ष ,,	३३ सा	,,	,,	संख्यात हजार वर्ष	३३ सा

प्रकृति का नाम	उत्कृष्ट संक्र		अनुत्कृष्ट संक्रमण		जघन्य संक्रमण		अजघन्य संक्रमण	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
उच्चगोत्र	१स	आवली	अन्तर्मु	असं. पु.परि	१स.	१स	८वर्ष	असं. पु.परि
नीचगोत्र	१स	अन्तर्मु	,,	,,	,,	,,	—	अनादि अनंत अनादि सांत

पृ. ३५६

एक जीव की अपेक्षा अन्तर काल

	प्रकृतियों के नाम	उत्कृष्ट स्थितिसंक्रामक का अन्तर	
		जघन्य	उत्कृष्ट
१)	मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण	१ समय	असंख्यात पुद्गल परिवर्तन
	शेष ३ ज्ञाना, ९ दर्शनावरण, साता, असाता, मिथ्यात्व, १६ कषाय	अन्तर्मुहूर्त	,,
२)	नौ नोकषाय	१ समय	,,
३)	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	अन्तर्मुहूर्त	उपार्ध पुद्गल परिवर्तन
४)	पाँच अन्तराय	,,	असंख्यात ,, ,,
५)	देवायु	,,	उपार्धपुद्गल ,,
६)	नरकायु	,,	असंख्यात ,, ,,
७)	अस्थिति की अपेक्षा देवायु नरकायु	(पूर्वकोटि-१)+१० हजारवर्ष	पूर्वकोटि-१+१० हजार वर्ष
८)	मनुष्यायु, तिर्यगायु	अन्तर्मुहूर्त	असंख्यात पुद्गल परि.
९)	,, ,, अस्थिति की अपेक्षा	पूर्वकोटि-१स.	पूर्वकोटि-१स.
१०)	उत्कृष्टस्थितिबंधवाली नामप्रकृति	अन्तर्मुहूर्त	असं. पुद्गल परि
११)	शेष नामप्रकृति	एक समय	,,
१२)	आहारकचतुष्क	अन्तर्मुहूर्त	उपार्ध पुद्गल परि.
१३)	तीर्थंकर	अंतर नहीं	अंतर नहीं
१४)	उच्च व नीच गोत्र	अंतर्मुहूर्त	असं. पुद्गल परि.

	प्रकृति	जघन्य स्थितिसंक्रामक का अन्तर	
		जघन्य	उत्कृष्ट
१	देवायु, नरकायु	साधिक १०००० वर्ष	असंख्यात पुद्गल परि.
२	तिर्यगायु, मनुष्यायु	क्षुद्रभवग्रहण-१स	,, शतसागर पृथक्त्व
३	अनन्तानुबन्धी कषाय	अन्तर्मुहूर्त	उपार्धपुद्गलपरि

देवायु व नरकायु के उत्कृष्टस्थितिसंक्रमण के अन्तर का स्पष्टीकरण —

देवायु का उत्कृष्ट बंध करके बंधावली के बाद बद्ध्यमान भव में अपकर्षण के द्वारा उत्कृष्ट संक्रमण हुआ फिर अंतर हुआ, पुनः अंतर्मुहूर्त बाद उत्कृष्ट स्थिति बंध हुआ बंधावली के बाद उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमण हुआ तो वहाँ अन्तर्मुहूर्त अन्तर पाया जाता है। दो आयुबंधकाल का जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है।

देवायु का उत्कृष्ट स्थितिबंध भावलिंगी मुनिराज को ही होता है। सम्यक्त्व होने के बाद छठे, सातवे गुणस्थान में देवायु का उत्कृष्ट स्थितिबंध किया उसमें अपवर्तना घात करके कमस्थितिवाले देवों में उत्पन्न हुआ मिथ्यात्व में जाकर अर्धपुद्गलपरिवर्तन तक देवायु का उत्कृष्ट स्थितिबंध न करके अर्धपुद्गलपरिवर्तन के समाप्ति के पूर्व द्विचरम मनुष्यभव में पुनः उत्कृष्ट स्थितिबंध उत्कृष्ट संक्रमण किया इसलिये उत्कृष्ट अंतर उपार्धपुद्गलपरिवर्तन घटित होता है।

देवायु का ना० जास्थिति की अपेक्षा संक्रमण का अंतर —

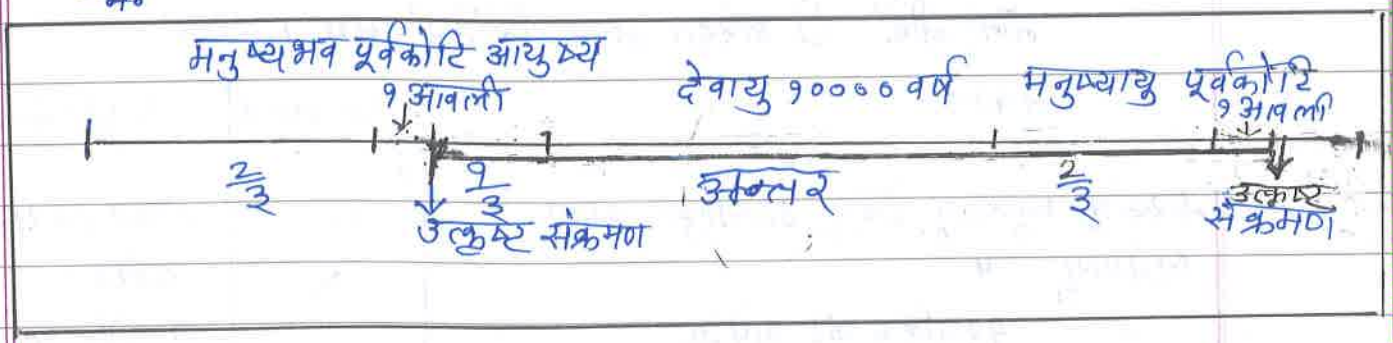

पृ. ३६२ नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय — 1) उत्कृष्ट पदविषयक 2) जघन्य पद विषयक

ज्ञानावरण के उत्कृष्टस्थिति के तीन भंग →

1) कदाचित् सब जीव असंक्रामक 2) कदाचित् बहुत असंक्रामक और एक संक्रामक
3) „ बहुत „ और „ „ संक्रामक

ज्ञानावरण के अनुत्कृष्ट स्थिति के तीन भंग →

1) कदाचित् सब जीव संक्रामक 2) कदाचित् बहुत संक्रामक और एक असंक्रामक
3) „ बहुत „ और „ „ असंक्रामक

इसीप्रकार सब प्रकृतियों के भंगविचय जानना चाहिए
„ जघन्यपदभंगविचय भी जानना। विशेष इतना है कि
तिर्यगायु की जघन्य व अजघन्य स्थिति के संक्रामक नियम से बहुत है। तिर्यगायु के जघन्य सत्त्ववाले और अजघन्य सत्त्ववाले बहुत जीव निरन्तर पाये जाते है इसलिए इसका एक ही भंग होगा —

1) बहुत संक्रामक और बहुत असंक्रामक

पृ. ३६२

स्थिति

नाना जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट संक्रमण का काल और अन्तर

प्रकृति	काल		अन्तर	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
1) सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	1 स	आवली ÷ असंख्यात	1 स	अंगुल ÷ असं.
2) नारकायु	"	"	"	पल्य ÷ असं
3) मनुष्यायु, तिर्यगायु, देवायु	"	संख्यात समय	"	अंगुल ÷ असं.
4) आहारक चतुष्क, तीर्थंकर	"	"	"	"
5) पांच ज्ञाना., ९ दर्शना. साता वेदनीय, असाता, 16 कषाय, उच्च नीचगोत्र, शेष सर्व नामप्रकृतियाँ, 5 अंतराय	"	पल्यो ÷ असं.	"	"

नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य स्थिति संक्रमण का काल

प्रकृति	जघन्यकाल	उत्कृष्ट काल
नारकायु, मनुष्यायु, देवायु, अनन्तानुबंधी कषाय	1 स	आवली ÷ असंख्यात
तिर्यगायु, "	×	सर्वकाल
" परभविक की अपेक्षा	×	आवली ÷ असंख्यात
शेष प्रकृतियों का	1 स	संख्यात समय
सर्व " अजघन्य स्थिति संक्रामक	—	सर्वकाल

नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य स्थिति संक्रामकों का अन्तर

प्रकृति	जघन्य	उत्कृष्ट अन्तर
1) 5 ज्ञाना. ९ दर्शना. साता-असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व सम्यग्मिथ्यात्व, 8 कषाय, 6 नोकषाय, संज्व. लोभ, सर्व नाम प्रकृतियाँ, उच्च-नीच गोत्र, 5 अन्तराय	1 स	6 मास
2) अनन्तानुबन्धी कषाय	1 स	24 दिनरात कुछ अधि.
3) तीन संज्वलन कषाय, पुरुषवेद	1 स	साधिक एक वर्ष
4) स्त्रीवेद और नपुंसकवेद	1 स	वर्षपृथक्त्व
5) तिर्यगायु को छोडकर शेष तीन आयु	1 स	12 मुहूर्त

पृ. २६४

उत्कृष्टरूपसे संक्रामित स्थितियों का अल्पबहुत्व

	प्रकृति	अल्पबहुत्व	स्थिति का प्रमाण
१	मनुष्यायु, तिर्यगायु	स्तोक	३ पल्य
2	" " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	३ पल्य + पूर्वकोटि का त्रिभाग – आवली
३	देवायु, नारकायु	संख्यातगुणी	३३ सागर
४	" " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	३३ सागर + पूर्वकोटि का त्रिभाग – आवली
५	आहार शरीर	संख्यातगुणी	अंत:कोडाकोडीसागर
६	" " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" + अन्तर्मुहूर्त
७	देवगति, मनुष्यगति, यश:कीर्ति, उच्चगोत्र	संख्यातगुणी	20 को. को. सागर – ३ आवली
८	" " " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	(" ~~– 3 आवली~~ आवली
९	नरकगति, तिर्यग्गति, अयशकीर्ति, ४ शरीर नामकर्म, नीचगोत्र	उतनी मात्र	20 को. को. सागर – 2 आवली
10	उपर्युक्त प्रकृतियों की जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" – 1 आवली
11	सातावेदनीय	" "	३० को. को. सागर – ३ आवली
12	" जस्थितियाँ	" "	३० को. को. सागर – 2 आवली
13	५ ज्ञाना., ९ दर्शना. असाता ५ अन्तराय	उतनी मात्र	" "
14	" " " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" – 1 आवली
15	नौ नोकषाय	विशेष अधिक	४० को. को. सागर – ३ आवली
16	" " जस्थितियाँ	" "	४० को. को. सागर – 2 आवली
17	16 कषाय	उतनी मात्र	" "
18	" " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" – 1 आवली
19	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	" "	७० को. को. सागर – अन्तर्मुहूर्त
20	जस्थितियाँ	" "	(७० को. को. सागर – अन्तर्मु) + 1 आवली
21	मिथ्यात्व	" "	७० को. को. सागर – 2 आवली
22	जस्थितियाँ	" "	" – 1 आवली

नरकगति में

	प्रकृति	अल्पबहुत्व	स्थिति का प्रमाण
1	मनुष्यायु, तिर्यगायु	स्तोक	1 पूर्वकोटी
2	" " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	1 पूर्वकोटी + ६ माह – आवली
३	नारकायु	असंख्यातगुणी	३३ सागर – आवली
४	" जस्थितियाँ	विशेष अधिक	३३ सागर
५	आहार शरीर	संख्यातगुणी	अन्त:को. को. सागर
६	" " जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" +आवली

	प्रकृति		अल्पबहुत्व	स्थितिप्रमाण
७	देवगति		संख्यातगुणी	२० को.को.सागर -
८	"	जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" +आवली
९	मनुष्यगति, यशकीर्ति, उच्चगोत्र		" "	२० को.को.सागर - ३ आवली
१०		जस्थितियाँ	" "	" - २ आवली
११	नरकगति, वैक्रि.शरीर, नीचगोत्र, औदा.		उतनी मात्र	" "
१२	तैजसकार्मण शरीर, अयशकीर्ति			
१३	उपर्युक्त प्रकृतियों की	जस्थितियाँ	विशेष अधिक	२० को.को.सागर - १ आवली
१४	सातावेदनीय		" "	३० को.को.सागर - ३ आवली
१५	"	जस्थितियाँ	" "	" - २ आवली
१६	५ ज्ञाना. ९ दर्शना., असाता, ५ अन्तराय		उतनी मात्र	" "
१७	" " "	जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" - १ आवली
१८	९ नोकषाय		" "	४० को.को.सागर - ३ आवली
१९	"	जस्थितियाँ	" "	" - २ आवली
२०	१६ कषाय		उतनी मात्र	" "
२१	"	जस्थितियाँ	विशेष अधिक	" - १ आवली
२२	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व		" "	६० को.को.सागर - अन्तर्मुहूर्त
२३		जस्थितियाँ	" "	" - " + (१ आवली)
२४	मिथ्यात्व		" "	७० को.को.सागर - २ आवली
२५		जस्थितियाँ	" "	" - १ आवली
	तिर्यंचगति में			
पृ.३६६ १	मनुष्यायु		स्तोक	३ पल्य
२	तिर्यगायु		विशेष अधिक	(३ पल्य + पूर्वकोटि/३) - २ आवली
३	दोनों की	जस्थितियाँ	" "	" - १ आवली
४	देवायु		संख्यातगुणी	२२ सागर
५	"	जस्थितियाँ	विशेष अधिक	(२२ सागर + पूर्वकोटि/३) - १ आवली
६	नरकायु		विशेष "	३३ सागर
७	"	जस्थितियाँ	"	(३३ सागर + पूर्वकोटि/३) - १ आवली
८	आहारकशरीर		संख्यातगुणी	नरकगति के समान
९		"	विशेष अधिक	"
१०	मनुष्यगति, देवगति, यशकीर्ति, उच्चगोत्र		संख्यातगुणी	"
११		जस्थितियाँ	विशेष अधिक	"

	प्रकृति		अल्पबहुत्व	स्थितिप्रमाण
12	नरकगति, तिर्यग्गति, चार शरीर,		उतनी मात्र	नरकगति के समान
13	अयशकीर्ति, नीचगोत्र			〃
14		जघन्यस्थितियाँ	विशेष अधिक	〃
15	सातावेदनीय		〃 〃	〃
16		जघन्यस्थितियाँ	〃 〃	〃
17	५ ज्ञाना, ९ दर्शना, असाता, ५ अन्तराय		उतनी मात्र	〃
18		जघन्यस्थितियाँ	विशेष अधिक	〃
19	९ नोकषाय		〃 〃	〃
20	〃	जघन्यस्थितियाँ	〃 〃	〃
21	१६ कषाय		उतनी मात्र	〃
22	〃 〃	जघन्यस्थितियाँ	विशेष अधिक	〃
23	सम्यक्त्व, मिश्र		〃 〃	〃
24	〃 〃	जघन्यस्थितियाँ	〃 〃	〃
25	मिथ्यात्व		〃 〃	〃
	〃		〃 〃	〃

इस बीजपद से मनुष्यों, देवो और एकेन्द्रियों में भी जानना चाहिये

पृ.३६७

जघन्यपद की अपेक्षा संक्रामित स्थितियों का अल्पबहुत्व

	प्रकृतियों के नाम	अल्पबहुत्व	स्थिति का प्रमाण
1	५ ज्ञाना. ६ दर्श, सम्यक्त्व, संज्वलनलोभ ४ आयु, ५ अन्तराय	स्तोक	१ स्थिति
2	उपर्युक्त प्रकृतियों की जघन्यस्थितियाँ	असंख्यातगुणी	१ आवली + १ समय
3	निद्रा और प्रचला की 〃	संख्यातगुणी	२ आवली + $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$
4	देवगति, वैक्रि. शरीर, आहारशरीर यश, नीच गोत्र	संख्यातगुणी	अन्तर्मुहूर्त
5	मनुष्यगति, औदा. शरीर, तैजसशरीर, कार्मण यशकीर्ति, उच्चगोत्र	विशेष अधिक	〃
6	जघन्यस्थितियाँ	〃 〃	अन्तर्मुहूर्त + आवली
7	साता, असातावेदनीय	〃 〃	अन्तर्मुहूर्त (ऊपर से बड़ा)
8	जघन्यस्थितियाँ	〃 〃	अन्तर्मुहूर्त + आवली

	प्रकृति		अल्पबहुत्व	
9	संज्वलन माया		संख्यातगुणी	आधा मास – अन्तर्मुहूर्त
		जस्थितियाँ	विशेष अधिक	आधा मास – 2 आवली
10	संज्वलन मान		" "	एक मास – अन्तर्मुहूर्त
11	संज्वलन क्रोध		" "	दो मास – अन्तर्मुहूर्त
12	पुरुषवेद		संख्यातगुणी	८ वर्ष – अन्तर्मुहूर्त
13	छह नोकषाय		" "	संख्यात वर्ष
14	स्त्रीवेद, नपुंसकवेद		असंख्यातगुणी	पल्योपम ÷ असंख्यात
15	स्त्यानगृद्धित्रय		"	पल्योपम ÷ असंख्यात
16	नरकगति, तिर्यंचगति		"	"
17	आठ कषाय		"	"
18	सम्यग्मिथ्यात्व		"	"
19	मिथ्यात्व		"	"
20	अनन्तानुबन्धी कषाय		असंख्यातगुणी	"
		नास्थितियाँ	विशेष अधिक	

नरकगति

1	नारकायु, सम्यक्त्व		स्तोक	1 समय स्थिति
2	" "	जस्थिति	असंख्यातगुणी	1 आवली + 1 समय
3	मनुष्यायु, तिर्यंचायु		संख्यातगुणी	अन्तर्मुहूर्त
4		"	विशेष अधिक	" + 1 आवली
5	अनन्तानुबंधी कषाय		असंख्यातगुणी	पल्योपम ÷ असंख्यात
6		जस्थिति	विशेष अधिक	" + आवली
7	आहारशरीर		असंख्यातगुणी	"
8		"	विशेष अधिक	" + आवली
9	सम्यग्मिथ्यात्व		असंख्यातगुणी	"
10	देवगति, नरकगति, वैक्रि. शरीर		असंख्यातगुणी	"
11	उच्चगोत्र		विशेष अधिक	"
12	मनुष्यगति		" "	"
13	यशःकीर्ति		" "	"
14	अयशःकीर्ति		" "	"
15	तिर्यंचगति		" "	"

१६	औदारिक शरीर, तैजस शरीर, कार्मण शरीर	विशेष अधिक
१७	सातावेदनीय	" "
१८	शेष त्रिंशिक प्रकृति	" "
१९	पुरुषवेद	" "
२०	स्त्रीवेद	" "
२१	हास्य व रति	" "
२२	नपुंसक वेद	" "
२३	अरति, शोक	" "
२४	भय, जुगुप्सा	" "
२५	बारह कषाय	" "
२६	मिथ्यात्व	"

तिर्यंचगति में

तिर्यंचायु, सम्यक्त्व	स्तोक	१ समय स्थिति
जस्थितिसंक्रम	असंख्यातगुणा	१ आवली + १ समय
मनुष्यायु	संख्यातगुणी	क्षुद्रभवग्रहण
देवायु, नरकायु	"	१०,००० वर्ष
अनन्तानुबन्धी कषाय	असंख्यातगुणी	पल्योपम ÷ असंख्यात
नरक गति, देवगति, मनुष्यगति, वैक्रियिक शरीर	"	"
आहारक शरीर, उच्चगोत्र		
सम्यग्मिथ्यात्व	संख्यातगुणी	"
यशकीर्ति	असंख्यातगुणी	$\left(\frac{\text{एक सागर}^{\times 2} - \text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}\right)$
अयशकीर्ति	विशेष अधिक	"
तिर्यंचगति	" "	"
नीचगोत्र	" "	"
औदा. शरीर, तैजसशरीर, कार्मणशरीर	" "	"
सातावेदनीय	" "	$\left(\frac{\text{एक सागर} \times 3}{7} - \frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}\right)$ - ३ आवली
शेष त्रिंशिक प्रकृतियाँ	विशेष अधिक	" - २ आवली
पुरुषवेद	" "	$\frac{\text{एक सागर} \times 4}{7} - \frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ - ३ आवली

प्रकृति	अल्पबहुत्व	स्थिति का प्रमाण
स्त्रीवेद	विशेष अधिक	1 सागर 4/6 - पल्य/असंख्यात
हास्य व रति	" "	"
अरति व शोक	" "	"
नपुंसकवेद	" "	"
भय, जुगुप्सा	" "	"
12 कषाय	" "	"
मिथ्यात्व	" "	(1 सागर - पल्य/असंख्यात) - 2 आवली
तिर्यञ्चयोनिमतियों में विशेषता		
सम्यक्त्व		पल्योपम ÷ असंख्यात
उद्वेल्यमान प्रकृतियों का	संख्यातगुणा	"
सम्यग्मिथ्यात्व	विशेष हीन	"
शेष सब तिर्यंचगति के समान		
मनुष्यगति में विशेषता		
मनुष्यायु	स्तोक	1 समय
जस्थितिसंक्रम	असंख्यातगुणा	1 आवली + 1 समय
तिर्यंचायु	संख्यातगुणा	क्षुद्रभवग्रहण
देवायु, नरकायु	"	10,000 वर्ष
शेष सब ओघ के समान		
देवगतिमें नरकगति के समान		

पृ. 369
स्थिति संक्रम 4 प्रकार - 1) भुजाकार 2) अल्पतर 3) अवस्थित 4) अवक्तव्य
किन प्रकृतियों का कितने प्रकार का संक्रम होता है उसका कोष्टक

5 ज्ञाना. 9 दर्शना, साता, असाता वेदनीय, मिथ्यात्व	3 प्रकार	भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित
मोहनीय (मिथ्यात्व छोड़कर शेष)	4 प्रकार	" " " , अवक्तव्य
उद्वेल्यमान नामप्रकृति, तीर्थंकर, उच्चगोत्र	"	" " " "
आयुकर्म	"	" " " "
शेष नामप्रकृति, नीचगोत्र, अन्तराय	3 प्रकार	अवक्तव्य संक्रम नहीं।

जिन प्रकृतियों का ९ वे, १० वें गुणस्थानतक ही संक्रम होता है उनका उपशम श्रेणी से नीचे उतरने पर १० वे ९ वे आदि गुणस्थानों में पुन: संक्रमण प्रारंभ होता है इसलिए उनका अवक्तव्य संक्रमण है।

ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ५ अंतराय इनका १२ वें गुणस्थानतक, शेष नामप्रकृति नीचगोत्र, वेदनीय इनका १३ वें गुणस्थानतक संक्रम होता है इसलिए उनका अवक्तव्य संक्रमण नहीं होता।

उद्वेल्यमान प्रकृतियों का उद्वेलन के समाप्त होने पर संक्रमण नहीं होता पुन: उनका बन्ध होने पर संक्रमण प्रारंभ होता है इसलिए उनका अवक्तव्य संक्रमण होता है।

साधिक की संदृष्टि ऊपर ऊभी रेखा दी है जैसे 33 सा (साधिक ३३ सागर)

एक जीव की अपेक्षा ४ प्रकार के संक्रमण का काल

प्रकृतियों का नाम	भुजाकार का काल		अल्पतर काल		अवस्थित काल	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
५ ज्ञानावरण	१ समय	संख्यात हजार समय	१ स	दो ६६ सा.	१ स	अन्तर्मुहूर्त
९ दर्शनावरण	१ स	११ समय	१ स	"	१ स	"
सातावेदनीय, असाता, मिथ्यात्व	१ स	2 समय	"	"	"	"
१६ कषाय, ९ नोकषाय	१ स	१७ समय	"	"	"	"
सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	१ स	१ स	अन्तर्मु	"	१ स	१ स
चार आयु	१ स	१ स			१ स	१ स
देवायु, नरकायु	"	"	अन्तर्मु.	33 सा	"	"
तिर्यंचायु, मनुष्यायु	"	"	"	३ पल्य	"	"
सब नामप्रकृतियाँ	१ स	संख्यात हजार समय	१ स	दो ६६ सा	१ स	अन्तर्मुहूर्त
तीर्थंकर	×	×	संख्यात हजार वर्ष	33 सा	×	×
आहारकचतुष्क	×	×	अन्तर्मु.	पल्य ÷ असं	×	×
पांच अन्तराय	१ स	संख्यात समय	१ स	दो ६६ सा	१ स	अन्तर्मु.
नीचगोत्र, उच्चगोत्र	१ स	दो समय	"	"	१ स	अन्तर्मु.

९ दर्शनावरण की ९ प्रकृतियों का क्रम से भुजाकार बंध हुआ, अद्धाक्षय से १ समय और संक्लेश के क्षय से १ समय भुजाकार बंध हुआ, उनका (एक आवली के बीतने पर) उसी क्रम से संक्रमण भुजाकार रूप से होगा तब दर्शनावरण की ९ प्रकृतियों का भुजाकार संक्रमण उत्कृष्ट रूप से ११ समय पाया जाता है। इसीप्रकार १६ कषाय

और नौ नोकषायों का १७ समय समझना।
ज्ञानावरण की संख्यात हजार उत्तरप्रकृतियों का क्रम से भुजाकार स्थितिबंध किया उनका बंधावली व्यतीत होने पर क्रम से भुजाकार संक्रमण संख्यात हजार समय तक होता है।

पृ. ३७१ चारित्र मोहनीय के अवक्तव्य संक्रामक भजनीय हैं क्यों कि उपशांतमोह से उतरकर १० वें, ९ वे गुणस्थान में इनका अवक्तव्य संक्रमण होता है और इसे गुणस्थान सान्तर हैं।
तीन आयुकर्म (तिर्यंच को छोड़कर) एकेन्द्रिय के बन्धयोग्य नामप्रकृतियाँ, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व के भुजाकार, अवस्थित और अवक्तव्य संक्रामक भजनीय है क्यों कि तीन आयुकर्म का बंध करनेवाले, एकेन्द्रिय से त्रस में आनेवाले मिथ्यात्व से सम्यक्त्व को प्राप्त होनेवाले जीव निरन्तर नहीं पाये जाते।

पृ. ३७२ नाना जीवों की अपेक्षा अल्पबहुत्व

	प्रकृति का नाम	संक्रामक प्रकार	अल्पबहुत्व
1)	५ ज्ञाना. ९ दर्शना, सातावेदनीय, असाता. 22 मोहनीय नीचगोत्र, ५ अंतराय	भुजाकार संक्रामक	स्तोक
		अवस्थित "	असंख्यातगुणे
		अल्पतर "	संख्यातगुणे
2)	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व / केवल अंतर्मुहूर्त कालमें संचित	अवस्थित "	स्तोक
	मिथ्यात्व से सम्यक्त्व को प्राप्त होने वाले	भुजाकार "	असंख्यातगुणे
	सम्यक्त्वसे मिथ्यात्व को प्राप्त होनेवाले	अवक्तव्य "	"
	सर्व सम्यग्दृष्टि और उद्वेलन कर रहे मिथ्यादृष्टि	अल्पतर "	असंख्यातगुणे
3)	नारकायु	अवस्थित "	स्तोक
	द्वितीयादि अपकर्ष में बढ़ाकर बंध करनेपर	भुजाकार "	असंख्यातगुणे
	नरकायु बंधक मनुष्य और तिर्यंच बंधके प्र. समयमें	अवक्तव्य "	संख्यातगुणे
	सभी नारकी निरन्तर	अल्पतर "	असंख्यातगुणे
	इसी प्रकार मनुष्यायु और देवायु का कहना चाहिये		
4)	तिर्यंचायु	अवक्तव्य संक्रामक	जगत्प्रतर ÷ असं.
		अवस्थित "	सर्वजीव पल्योपम ÷ असंख्यात

प्रकृति का नाम	संक्रामक प्रकार	अल्पबहुत्व
तिर्यंचायु	भुजाकार संक्रामक	सर्वजीव ÷ अन्तर्मुहूर्त
	अल्पतर संक्रामक	सर्व जीवों के असंख्यात बहुभाग
5) नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी	अवक्तव्य संक्रामक	स्तोक
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे
उद्वेलनकाल संचितों की अपेक्षा	अवस्थित, अल्पतर संक्रामक	असंख्यात गुणे
इसी प्रकार देवगति के सम्बन्ध में अल्पबहुत्व कहना चाहिये।		
6) मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी उच्चगोत्र	अवक्तव्य संक्रामक	स्तोक
	भुजाकार "	अनन्तगुणे
	अवस्थित "	असंख्यातगुणे
	अल्पतर "	"
7) तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी	भुजाकार "	स्तोक
	अवस्थित "	असंख्यातगुणे
	अल्पतर "	संख्यातगुणे
8) औदारिक, तैजस, कार्मण	भुजाकार "	स्तोक
	अवस्थित "	असंख्यात गुणे
	अल्पतर "	संख्यातगुणे

इसी प्रकार अनादिसत्तावाली नाम प्रकृतियों का अल्पबहुत्व कहना चाहिये।

वृद्धिसंक्रम की प्ररूपणा

पांच ज्ञानावरण संबंधी 9 दर्शनावरण, साता, असाता वेदनीय	असंख्यातगुणहानि के संक्रामक	स्तोक
	संख्यातगुणहानि के "	असंख्यातगुणे
	संख्यातभागहानि के "	संख्यातगुणे
	संख्यातगुणवृद्धि के "	असंख्यातगुणे
	संख्यातभागवृद्धि के "	संख्यातगुणे
	असंख्यातभागवृद्धि के "	अनन्तगुणे
	अवस्थित "	असंख्यातगुणे
	असंख्यात भागहानि "	संख्यात गुणे

इसी प्रकार शेष कर्मों के भी संबंध में कहना चाहिये। विशेष → सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और चार आयु कर्मों की प्ररूपणा में चार वृद्धियाँ और चार हानियों को कहना चाहिए।

पृ. ३६४

अनुभागसंक्रमण की प्ररूपणा

घातिकर्म

देशघाती — ४ ज्ञाना, ३ दर्शना, ४ संज्वलन, ९ नोकषाय, ५ अंतराय

सर्वघाती — केवलज्ञाना. ६ दर्शनावरण, १२ कषाय

देशघाती प्रकृतियों में दो प्रकार के स्पर्धक → देशघाती और सर्वघाती

लता दारु अस्थि शैल चार प्रकार के स्पर्धक है इनमें लतारूप स्पर्धक १ दारु के अनंतवे भागरूप स्पर्धक देशघाती होते हैं। शेष सर्व दारु के अनंत बहुभाग, अस्थि और शैलरूप स्पर्धक सर्वघाती होते हैं।

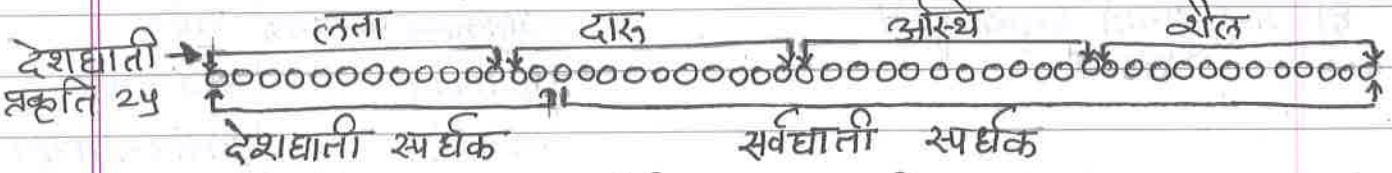

अनुभागसंक्रम → अपकर्षण को प्राप्त हुआ, उत्कर्षण को प्राप्त हुआ तथा अन्य प्रकृति को प्राप्त कराया गया भी अनुभाग अनुभागसंक्रम है।

जघन्य निक्षेप और जघन्य अतिस्थापन स्पर्धकों को छोड़कर उसके ऊपर स्थित स्पर्धक का अपकर्षण किया जाता है।

पृ. ३६६

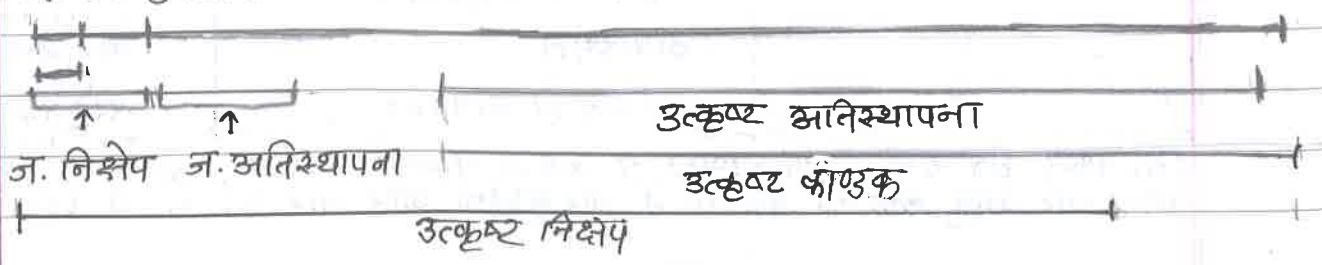

	अल्पबहुत्व	प्रमाण
प्रदेश गुणहानि स्थानान्तर	स्तोक	एक गुणहानिनि
जघन्य निक्षेप	अनन्तगुणा	अनन्त गुणहानि रूप
जघन्य अतिस्थापना	अनन्तगुणी	"
उत्कृष्ट अतिस्थापना	अनन्तगुणी	प्रथम काण्डक में
उत्कृष्ट अनुभागकाण्डक	विशेष अधिक	एक स्पर्धक अधिक
उत्कृष्ट निक्षेप (अपकर्षण की अपेक्षा)	" "	उत्कृष्ट अनुभाग – अंतिम स्पर्धक ओर उसकी अतिस्थापना

सम्यक्त्व का उत्कृष्ट संक्रम	देशघाती	द्विस्थानिक	दारु के एकभागतक
मनुष्यायु, तिर्यगायु " "	"	"	स्वांड के "
सम्यग्मिथ्यात्व, आतप का संक्रम	सर्वघाती	द्विस्थानिक	दारु के बहुभागतक
स्त्रीवेद, नपुंसकवेद का उत्कृष्ट संक्रम	"	चतुस्थानिक	शैलतक
सम्यक्त्व, चार संज्वलन, पुरुषवेद जघन्य	देशघाती	एकस्थानिक	केवल लतारूप
शेषकर्मों का जघन्य संक्रम संक्रम	सर्वघाती	द्विस्थानिक	दारु के बहुभागतक
मनुष्यायु तिर्यगायु " "	देशघाती	द्विस्थानिक	

पृ. ३८५

प्रकृति	उत्कृष्ट अनुभागसंक्रम का स्वामी
१) ५ ज्ञाना. ९ दर्शना, मिथ्यात्व, १६ कषाय ९ नोकषाय, असातावेदनीय, अप्रशस्त नामप्रकृति, नीचगोत्र, ५ अन्तराय	उत्कृष्ट अनुभाग को बांधकर आवली बीतनेपर एकेन्द्रिय, विकलत्रय, पंचेन्द्रिय, बादर अथवा सूक्ष्म पर्याप्त अथवा अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि असंख्यात वर्षायुष्क मनुष्य, तिर्यंच, १२वें स्वर्गपर्यन्त के देव
२) सातावेदनीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र	प्रथम आवलीकाल छोड़कर शेष क्षीणकषाय, सयोगकेवली
३) नारकायु	उत्कृष्ट अनुभाग बांधकर आवली बीतनेपर उस प्रथम समय से लेकर नारक भव के एक समय अधिक आवलीकाल, शेष रहनेतक
इसी प्रकार शेष आयु की प्ररूपणा है	
४) आठवें के छठेभाग की व्युच्छिन्न प्रशस्त प्रकृतियों	८वें के छठे भाग से बाद उत्कृष्ट बंध बांधने के १ आवली बीतनेपर प्रथम समय से लेकर अन्तिम समयवर्ती सयोगीतक

मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी औदारिकचतुष्क, वज्रर्षभसंहनन	सर्वविशुद्ध देव के द्वारा उत्कृष्ट अनुभाग बान्धनेपर बन्धावली के पश्चात देव, नारकी, तिर्यंच, मनुष्य एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, सूक्ष्म बादर, पर्याप्तक, अपर्याप्तक
उद्योत नामकर्म	सातवी पृथिवी में करण परिणाम के अंतिम समय में उत्कृष्ट अनुभाग का बंध करके बंधावली के पश्चात नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, सू.बा.प.अ.
नरकगति में सातावेदनीय	आन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म सांपराय उपशामक के द्वारा बांधे गये अनुभाग का घात न करके अन्यतर पृथ्वी में उत्पन्न हुआ जीव

विशेष → एकबार उत्कृष्ट अनुभाग बांधनेपर जितना स्थितिसत्त्व है उस पूर्ण स्थिति के निषेकों का अनुभाग उत्कृष्ट होता है इसलिए जबतक उस प्रकृति का अनुभाग काण्डक घात नहीं होता तबतक उत्कृष्ट संक्रमण होता ही रहता है। उत्कृष्ट अनुभाग बंध के पश्चात् कम अनुभाग बांधने पर वह उसी में अन्तर्भूत हो जाता है। सत्त्व में उत्कृष्ट अनुभाग ही दिखायी देता है।

पृ. ३७९

जघन्य अनुभाग संक्रम का स्वामी

क्षपक श्रेणीपर नववें गुणस्थान में अन्तरकरण तक पाप कर्मों का अनुभागसत्त्व सूक्ष्म एकेन्द्रिय के सत्त्व से अधिक होता है। किन्तु अन्तरकरण के पश्चात वह " " " " नीचे (कम) होता है।

	प्रकृति	जघन्य अनुभाग संक्रम का स्वामी
1)	5 ज्ञाना. 6 दर्शना, 5 अन्तराय	क्षपक दसवें गुणस्थान के 1 समय अधिक आवली शेष रहनेपर अंतिम समयवर्ती जीव
2)	संज्वलन लोभ	क्षपक सूक्ष्मसांपराय " " "
3)	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व होने में 1 समय अधिक आवली शेष रहनेपर
4)	स्त्यानगृद्धित्रय	हतसमुत्पत्तिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय, अन्य एकेन्द्रिय, विकलत्रय पंचेन्द्रिय जीव

पु)	साता, असाता, अनादिसत्त्व वाले नामकर्म, नीचगोत्र	हतसमुत्पत्तिक सत्कर्मिक लेकर जघन्य सत्कर्मसे नीचे बांधनेवाला सूक्ष्म एकेन्द्रिय, उत्पत्ति की अपेक्षा एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीव
६)	मिथ्यात्व, आठ कषाय	हतसमुत्पत्तिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय
७)	सम्यग्मिथ्यात्व	सम्यग्मिथ्यात्व का अन्तिम अनुभागकाण्डक में वर्तमान क्षपक
८)	पुरुषवेद, तीन संज्वलन	इन प्रकृतियों का क्षपक अन्तिम समयप्रबद्धों की अन्तिम फालि का पुरुषवेद का संक्रामक पुरुषवेद से श्रेणी चढ़ा हुआ जीव क्षपक लेना।
९)	नपुंसकवेद	अन्तिमकाण्डक की नपुंसकवेद से आरूढ नपुंसकवेद की अन्तिम फालि का क्षपक
१०)	स्त्रीवेद	किसी एक वेदसे आरूढ स्त्रीवेद की " " "
११)	६ नोकषाय	६ नोकषाय की अन्तिम काण्डक की " " "
१२)	चार आयु	जघन्यस्थिति बांधकर बंधावली को बितानेवाला जीव
१३)	अनन्तानुबन्धी कषाय	विसंयोजना करके जघन्य परिणाम से संयुक्त होने के प्रथम समयवर्ती
१४)	नरकगति	सर्वप्रथम संयोजन करनेवाला जीव (उद्वेलना के पश्चात् सर्वप्रथम बंध करनेवाला जीव)
१५)	उद्वेल्यमान नामप्रकृति, उच्च गोत्र	" " " "

1) हतसमुत्पत्तिक → पंचेन्द्रियादिक से एकेन्द्रिय में उत्पन्न होकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय के स्थितिबंध से अधिक स्थितियों को काण्डक घात के द्वारा घातकर एकेन्द्रिय के योग्य स्थितिसत्त्व जिसका शेष रहा है उसे हतसमुत्पत्तिक कहते हैं। जिसप्रकार स्थिति के काण्डकघात होते हैं उसी प्रकार एकेन्द्रिय में अनुभाग काण्डक घात होकर अनुभाग का घात होता है एकेन्द्रिय के योग्य अनुभाग शेष रहता है।

2) हतसमुत्पत्तिक जीव, सूक्ष्म एकेन्द्रिय से निकलकर अन्य एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रियों में उत्पन्न होता है तो वहाँ आवली काल तक जघन्य अनुभाग संक्रम ही करता है। क्यों कि अभी उस पर्याय में अधिक अनुभाग बंध करके बंधावली व्यतीत नहीं हुई है। इसलिए एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक जीवों को जघन्य अनुभाग संक्रम का स्वामी कहा है।

3)

3) पुरुषवेद के उदय से श्रेणिपर आरूढ हुये जीव के ही एक समय कम दो आवलिप्रमाण नवकसमय प्रबद्ध शेष रहते है उसके अंतिम समय में अंतिम समयप्रबद्ध की एक ही फालि शेष रहती है उसका संक्रमण करते समय जघन्य अनुभाग संक्रमण होता है। क्यों कि अंतरकरण के पश्चात् मोहनीय का प्रत्येक समय में अपवर्तना घात होता है।

४ तीनों वेदों से चढ़े हुये जीवों के स्त्रीवेद का क्षपणाकाल समान है इसलिए किसी भी वेद के उदय से चढ़ा जीव " " अन्तिम फालि में जघन्य अनुभाग संक्रमण करता है।

५) नपुंसकवेद से चढ़ा हुआ जीव नपुंसक वेद का क्षय स्त्रीवेद के साथ में करता है और पुरुषवेद और स्त्रीवेद से चढ़ा हुआ जीव नपुंसक वेद का क्षय अंतर्मुहूर्त पहले करते हैं इसलिए वे नपुंसकवेद का जघन्य संक्रमण नहीं करते। नपुंसकवेद के उदयवाला जीव ही नपुंसकवेद का जघन्य अनुभाग संक्रमण करता है।

६) आयुकर्म की जघन्य स्थिति को बांधने वाला जीव जघन्य अनुभाग को बांधता है।

७) सम्यग्दृष्टि जीव प्रशस्त कर्मों के अनुभाग का घात नहीं करता है।

८) अनेक भवों से ग्रहण किये हुये पाप कर्मों का अनुभाग सत्त्व जिन भगवान में वर्तमान होकर भी असंज्ञी के सत्त्व से अनन्तगुणा होता है। इसलिए वहाँ जघन्य अनुभाग संक्रमण नहीं कहा हतसमुत्पत्तिक में जघन्य संक्रमण कहा है।

पृ.३८२ एक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट अनुभाग संक्रमण का काल

प्रकृतियों का नाम	उत्कृष्ट संक्रमण काल		अनुत्कृष्ट संक्रमण काल	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
१) ५ ज्ञाना; ९ दर्शना; असाता, मिथ्यात्व १६ कषाय, ९ नोकषाय	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	असं. पुद्ग. परि
२) सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	अन्तर्मु.	दो ६६ सा.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
३) साता, यश, उच्च,	" "	कुछ कम पूर्वकोटि	–	अनादि अनन्त अनादि सान्त
४) उच्चगोत्र	"	"	८ वर्ष / पल्य/असं.	प्रकृतिसत्वकाल
५) मनुष्यद्विक, औदारिक चतुष्क, प्रथम संहनन, आतप उद्योत इन के बिना शेष प्रशस्त नामकर्म	"	"		
उपर्युक्त प्रकृतियों में उद्वेल्यमान प्रकृति			"	"
अनुद्वेल्यमान प्रकृति			–	अनादि अनन्त अनादि सान्त
६) देवायु, नारकायु	अन्तर्मु.	३३ सा.	अन्तर्मु.	३३ सा
७) मनुष्यायु, तिर्यगायु	"	३ पल्य	अन्तर्मु.	३ पल्य
८) तिर्यगायु	"	"	"	असं. पुद्ग. परि

	प्रकृतियों का नाम	उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमण का काल		अनुत्कृष्ट संक्रमण का काल	
९	अप्रशस्त नामप्रकृति, नीचगोत्र, पु अंतराय	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	असं. पुद्गल परि.
१०	मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी	,,	दो ६/६ सा.	,,	,,
११	औदारिकचतुष्क, प्रथम संहनन, उद्योत	,,	,,		अनादि-अनन्त अनादि सान्त
	सादि सान्त			अन्तर्मु.	अर्धपुद्गलपरि
१२	आतप	,,	,,	,,	असं. पुद्गल परि

आयुकर्म की जिस स्थिति को बांधनेवाला जिस अनुभाग की रचना करता है वह जब तक उस स्थिति का अपवर्तन नहीं करता है तब तक उतने काल उसके वह अनुभाग होता है।

एक जीवका जघन्य अजघन्य अनुभाग संक्रमण का काल

	प्रकृतियों का नाम	जघन्य संक्रमण का काल		अजघन्य संक्रमण का काल	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
१)	पु ज्ञाना. द दर्शना. पु अंतराय	१ स	१ स		अनादि अनन्त अनादि सान्त
२)	स्त्यानगृद्धित्रिक, साता, असाता, मिथ्यात्व, आठ कषाय	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	असंख्यात लोक
३)	सम्यक्त्व	१ स	१ स.	अन्तर्मु.	दो ६/६ सा
४)	चार संज्वलन, पुरुषवेद. सादिसान्त की अपेक्षा	,,	,,	,,	अर्धपुद्गलपरि अनादि अनन्त, अनादिसान्त
५)	अनन्तानुबन्धी कषाय	,,	४ समय	,,	चार संज्वलन के समान
६)	पुरुषवेद के बिना शेष ८ नोकषाय	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	,,	चार संज्वलन के समान
७)	सम्यग्मिथ्यात्व	,,	,,	,,	दो ६/६ सा.
८)	आयुकर्म, देवायु, नरकायु	१ स	४ समय	,,	३३ सा.
९	मनुष्यायु,	,,	,,	,,	३ पल्य
१०	तिर्यंचायु	,,	,,	,,	असंख्यात लोक
११)	उद्वेलनारहित शुभ, अशुभ नामप्रकृतियाँ	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	,,	,,
१२)	नीचगोत्र	,,	,,	,,	,,
१३	आहारकचतुष्क	१ स	४ समय	अन्तर्मु.	पल्य ÷ असंख्यात
१४)	तीर्थंकर	,,	,,	–	प्रकृतिसत्त्व का काल
१५)	शेष उद्वेल्यमान नामप्रकृतियाँ, उच्चगोत्र	,,	,,	१ वर्ष/पल्य असं	अपना अपना प्रकृति सत्त्व का काल

पृ. ३८७ एक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमण का अन्तर

प्रकृतियों का नाम	जघन्य	उत्कृष्ट अंतर
1) ५ ज्ञाना, ९ दर्शना, असाता, मिथ्यात्व, १६ कषाय, ९ नोकषाय नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, अप्रशस्तनामप्रकृति, नीचगोत्र ५ अन्तराय	अन्तर्मु.	असं. पुद्गल परि.
2) सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	अन्तर्मु.	उपार्धपुद्गल परि.
३ देवायु	"	"
४) मनुष्यद्विक, वज्रर्षभसंहनन, उद्योत, औदारिकचतुष्क	"	"
५) आतप	"	असं. पुद्गल परि

सातावेदनीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र तथा ८ वें के छठे भाग में व्युच्छिन्न होनेवाली प्रशस्त नामप्रकृतियों के उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमण का अंतर नहीं है। क्योंकि इनका उत्कृष्ट अनुभाग बंध अपूर्वकरण क्षपक जीव करता है। वह उत्कृष्ट अनुभाग १३ वें गुणस्थान के अंततक निरन्तर रहता है।

जघन्य अनुभाग संक्रमण का अन्तर

प्रकृतियोंका नाम	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अंतर
1) ५ ज्ञाना., ६ दर्शना, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, चार संज्वलन ९ नोकषाय, ५ अन्तराय	नहीं	नहीं
2) स्त्यानगृद्धित्रिक, साता, असाता, मिथ्यात्व, ८ कषाय तिर्यंचायु, अनुद्वेल्यमान प्रशस्त अप्रशस्त नामप्रकृति, नीचगोत्र	अन्तर्मु.	असंख्यात लोक

प्रकृतियों का नाम	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर
३) अनन्तानुबन्धी कषाय	अन्तर्मुहूर्त	उपार्धपुद्गलपरि.
४) नारकायु, देवायु, मनुष्यायु	”	असं. पुद्गल परि
५) उद्वेलन योग्य नामप्रकृति, उच्चगोत्र	पल्य÷असंख्यात	असं. पुद्गल परि
६) संयतयोग्य प्रकृति - आहारकचतुष्क, देवद्विक	”	उपार्धपुद्गलपरि
८) तीर्थंकर	अंतर नहीं	अंतर नहीं

ज्ञानावरणादिक का जघन्य अनुभाग संक्रमण नाश होते समय एक समय अधिक आवली शेष रहनेपर होता है इसलिए उनका अंतर नहीं है।

पृ. ३८१ नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय
सभी कर्मों के उत्कृष्ट अनुभाग के तीन भंग →
१) कदाचित् सब जीव असंक्रामक २) कदाचित् बहुत असंक्रामक और एक संक्रामक
३) कदाचित् बहुत असंक्रामक और बहुत संक्रामक
अनुत्कृष्ट अनुभाग के तीन भंग
१) कदाचित् सब जीव संक्रामक
२) कदाचित् बहुत संक्रामक और एक असंक्रामक
३) कदाचित् बहुत ” ” बहुत ” और अनुत्कृष्ट अनुभाग के
साता वेदनीय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र के उत्कृष्ट अनुभाग के नियम से
बहुत संक्रामक और बहुत असंक्रामक

अपूर्वकरण गुणस्थान के छठे भाग में बन्धनेवाली पुण्यप्रकृतियों का उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट बन्ध होता है क्यों कि वहाँ असंख्यात लोकमात्र अनुभागबन्धाध्यवसान स्थानों की संभावना है। इस कारण इनके उत्कृष्ट के तीन भंग और अनुत्कृष्ट के
वैसेही तीन भंग इसप्रकार छह भंग होते है

जघन्य अनुभाग संक्रम के विषय मे भंग -
५ ज्ञाना., ६ दर्शनावरण, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, ४ संज्वलन
८ नोकषाय, ३ आयु, उद्वेल्यमान नामप्रकृतियों, उच्चगोत्र, ५ अंतराय के छह भंग

उत्कृष्ट के समान जघन्य के तीन भंग जानना।
अनुत्कृष्ट के समान अजघन्य के तीन भंग जानना।
स्त्यानगृद्धि आदि तीन, साता वेदनीय, असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, आठ कषाय, तिर्यगायु, अनुद्वेल्यमान नामप्रकृतियों और नीचगोत्र के जघन्य अनुभाग के नियम से संक्रामक बहुत और असंक्रामक भी बहुत होते हैं।

नाना जीवों की अपेक्षा काल - उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमण का काल

प्रकृतियों का नाम	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
1) सातावेदनीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र		सर्वकाल
2) शेष कर्म - अप्रशस्त कर्म	अन्तर्मुहूर्त	पल्योपम ÷ असंख्यात
3) आयुकर्म	"	अंगुल ÷ असंख्यात
4) 8वें के छठे भाग की व्युच्छिन्न 26 पुण्य प्रकृतियाँ	"	पूर्वकोटि पृथक्त्व
5) अक्षपक योग्य प्रशस्त नामप्रकृति	"	पल्योपम ÷ असंख्यात

नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अनुभाग संक्रमण का काल

प्रकृतियोंका नाम	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
1) 5 ज्ञाना., 4दर्शना., सम्यक्त्व, पुरुषवेद, 4 संज्वलन, 5 अन्तराय	1 समय	संख्यात समय
2) अनन्तानुबन्धी कषाय	1 समय	आवली ÷ असंख्यात
3) सम्यग्मिथ्यात्व, 8 नोकषाय	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
4) तीन आयु	1 समय	आवली ÷ असंख्यात
5) तिर्यगायु		सर्वकाल
6) नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, तत्प्रायोग्य आनुपूर्वी, वैक्रियिक चतुष्क, उच्चगोत्र	1 समय	आवली ÷ असंख्यात
7) आहारकचतुष्क, तीर्थंकर	1 समय	संख्यात समय
8) शेष अनुद्वेल्यमान नामप्रकृति, नीचगोत्र	—	सर्वकाल

नाना जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमण का अन्तर

प्रकृतियों का नाम	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर
1) 5 ज्ञाना., 9 दर्शना, असाता, मिथ्यात्व, 16 कषाय 9 नोकषाय, 4 आयु, यशकीर्ति के बिना नामप्रकृति नीचगोत्र, 5 अन्तराय	1 समय	असंख्यात लोक
2) साता वेदनीय, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, यशकीर्ति उच्चगोत्र	अंतर नहीं	अंतर नहीं

पृ.391

जघन्य अनुभाग संक्रमण का अन्तर

प्रकृतियों का नाम	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर
1) 5 ज्ञाना., 6 दर्शना., सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्वलनलोभ स्त्रीवेद, छह नोकषाय, 5 अंतराय	1 समय	6 मास
2) 3 संज्वलन, पुरुषवेद	"	साधिक एकवर्ष
3) नपुंसकवेद	"	संख्यातवर्ष
4) अनन्तानुबन्धी कषाय	"	असंख्यात लोक
5) तीन आयु	"	"
6) सादि सत्कर्मवाली नामप्रकृतियों, उच्चगोत्र	"	"
7) शेष नामप्रकृतियों, नीचगोत्र, तिर्यगायु, मिथ्यात्व आठ कषाय, सातावेदनीय, असाता, स्त्यानगृद्धित्रिक	×	अंतरकाल नहीं

संनिकर्ष अर्थात निकटता
मतिज्ञानवरण के जघन्य अनुभाग का संक्रामक नियमसे शेष 4 ज्ञानावरण, 4 दर्शनावरण और 5 अंतराय के भी जघन्य अनुभाग का संक्रामक होता है क्यों कि 12 वे के अंत में इन सभी का जघन्य अनुभाग संक्रमण होता है निद्रा और प्रचला का दो आवली और आवली का असंख्यातवाँ भाग काल शेष रहने पर ही संक्रमण का अभाव होता है इसलिए उस समय वह निद्रा प्रचला का असंक्रामक होता है।
शेष सत्त्वरूप प्रकृतियों के अजघन्य अनुभाग का संक्रामक होता है।

पृ. ३९२ जघन्य अनुभाग संक्रमका अल्पबहुत्व

प्रकृति यों का नाम	अल्पबहुत्व	जघन्य संक्रमण का स्वामी
१) संज्वलन लोभ	सब से मन्द	दसवें गुणस्थानवर्ती क्षपक अन्त में
२) संज्वलन माया	अनन्तगुणा	नवें के चौथे भाग में
३) संज्वलन मान	"	" तीसरे "
४) संज्वलन क्रोध	"	" दूसरे "
५) पुरुषवेद	"	" प्रथम "
६) सम्यक्त्व	"	क्षायिक सम्यक्त्व होने के पूर्व १ आवलीसे
७) सम्यग्मिथ्यात्व	"	" " " "अन्तिम काण्डक में
८) मन:पर्यय ज्ञानावरण, दानान्तराय	"	१२ वें गुणस्थान के अंत में १ आवलीसे पूर्व
९) अवधिज्ञानावरण, लाभान्तराय	"	"
१०) श्रुतज्ञाना. अचक्षुदर्शना. भोगान्त.	"	"
११) चक्षुदर्शनावरण	"	"
१२ मतिज्ञाना., परिभोगान्त.	"	"
१३) केवलज्ञाना., केवलदर्शना. वीर्यान्त.	"	"
१४) प्रचला	"	" 2 आवली + आवली / असंख्यात पूर्व
१५) निद्रा	"	" "
१६) हास्य	"	नवें गुणस्थान में ६ नोकषाय के क्षय के अंत में
१७) रति	"	"
१८) जुगुप्सा	"	"
१९) भय	"	"
२० शोक	"	"
२१) अरति	"	"
२२) स्त्रीवेद	"	स्त्रीवेद के क्षय के अंत में
२३) नपुंसकवेद	"	नपुंसकवेद के "
२४) अनन्तानुबन्धी मान	"	विसंयोजक संयुक्त होने के प्रथम समय में
२५) " क्रोध	विशेष. अधिक	"
२६) " माया	"	"
२७) " लोभ	"	"
२८) वैक्रियिक शरीर	अनन्तगुणा	विसंयोजन करके प्रथम संयोजक
२९) तिर्यञ्च आयु	"	जघन्य स्थिति बंध करने वाला

प्रकृतिनाम	अल्पबहुत्व	जघन्य संक्रमण का स्वामी
३०) मनुष्यायु	अनन्तगुणा	क्षुद्रभवग्रहण का बंध करने के पश्चात्
३१) नरकगति	"	विसंयो उद्वेलना के पश्चात् प्रथम संयोजक
३२ मनुष्यगति	"	"
३३ देवगति	"	"
३४ उच्चगोत्र	"	"
३५ नारकायु	"	जघन्य स्थिति बंधक
३६ देवायु	"	"
३७ औदारिक शरीर	"	हतसमुत्पत्तिक
३८ तैजसशरीर	"	"
३९ कार्मणशरीर	"	"
४० तिर्यग्गति	"	"
४१) नीचगोत्र	"	"
४२) अयशकीर्ति	"	"
४३) प्रचलाप्रचला	"	हतसमुत्पत्तिक एकेन्द्रिय, द्वी. से पंचे. उत्पत्ति की अपेक्षा
४४) निद्रानिद्रा	"	" "
४५) स्त्यानगृद्धि	"	" "
४६) अप्रत्याख्यानावरण मान	"	" "
४७) " क्रोध	विशेष अधिक	" "
४८) " माया	"	"
४९) " लोभ	"	"
५०) प्रत्याख्यानावरण मान	"	"
५१) " क्रोध	विशेष अधिक	"
५२) " माया	"	"
५३) " लोभ	"	"
५४) असातावेदनीय	अनन्तगुणा	"
५५ यशकीर्ति	"	"
५६ सातावेदनीय	"	"
५७ मिथ्यात्व	"	"
५८) आहारशरीर	"	विसंयो उद्वेलना के पश्चात् प्रथम संयोजक

६४ पदीय अल्पबहुत्व के अनुसार यहाँ कारण समझना चाहिये। धवला पु. 12 पृ. देखें.

सू. ३३४ नरकगति में जघन्य अनुभागसंक्रम का अल्पबहुत्व

	प्रकृति नाम	अल्पबहुत्व	जघन्य संक्रमण का स्वामी
१)	सम्यक्त्वप्रकृति	सबसे मंद	
२)	सम्यग्मिथ्यात्व	अनन्तगुणा	
३)	अनंतानुबंधी मान	"	
४)	" क्रोध	विशेष अधिक	
५)	" माया	"	
६)	" लोभ	"	
७)	तिर्यगायु	अनंतगुणा	
८)	मनुष्यायु	"	
९)	नारकायु	"	
१०)	औदारिक शरीर	"	
११)	वैक्रियिकशरीर	"	
१२)	तैजसशरीर	"	
१३)	कार्मणशरीर	"	
१४)	हास्य	"	
१५)	रति	"	
१६)	नरकगति	"	
१७)	तिर्यंचगति	"	
१८)	मनुष्यगति	"	
१९)	देवगति	"	
20)	नीचगोत्र	"	
21)	अयशकीर्ति	"	
22)	प्रचला	"	
23)	निद्रा	"	
24)	प्रचलाप्रचला	"	
25)	निद्रानिद्रा	"	
26)	जुगुप्सा	"	
27)	भय	"	
28)	शोक	"	
29)	अरति	"	
30)	पुरुषवेद	"	

प्रकृति नाम	अल्पबहुत्व	जघन्य संक्रमण का स्वामी
३१) स्त्रीवेद	अनंतगुणा	
३२) नंपुसकवेद	"	
३३) मनःपर्ययज्ञानावरण	"	
३४) स्त्यानगृद्धि	"	
३५) दानान्तराय	"	
३६) अवधिज्ञाना. अवधिदर्श. लाभा.	"	
३७) श्रुतज्ञाना. अचक्षुदर्शना. .. भोगा.	"	
३८) चक्षुदर्शनावरण	"	
३९) आभिनिबो. . परिभोगा.	"	
४०) अप्रत्याख्यानावरण मान	"	
४१) " क्रोध	विशेष अधिक	
४२) " माया	"	
४३) " लोभ	"	
४४) प्रत्याख्यानावरण मान	अनंतगुणा	
४५) " क्रोध	विशेष अधिक	
४६) " माया	"	
४७) " लोभ	"	
४८) केवलज्ञाना. केवलदर्शना., असाता, वीर्यान्तराय	"	
४९) उच्चगोत्र	अनंतगुणा	
५०) अयशकीर्ति	"	
५१) सातावेदनीय	"	
५२) मिथ्यात्व	"	
५३) आहारक शरीर	"	

४८ संज्वलन	मान	अनंतगुणा
४९ संज्वलन	क्रोध	विशेष अधिक
५० "	माया	" "
५१ संज्वलन	लोभ	" "

तिर्यंचगतिमें जघन्य अनुभागसंक्रमणका अल्पबहुत्व

	प्रकृति नाम	अल्पबहुत्व	जघन्य संक्रमण का स्वामी
१)	सम्यक्त्व प्रकृति	सबसे मन्द	
२)	सम्यग्मिथ्यात्व	अनन्तगुणा	
३)	अनन्तानुबन्धी मान	"	
४)	" क्रोध	विशेष अधिक	
५)	" माया	"	
६)	" लोभ	"	
७)	वैक्रियिकशरीर	अनन्तगुणा	
८)	तिर्यगायु	"	
९)	मनुष्यायु	"	
१०)	नरकगति	"	
११)	मनुष्यगति	"	
१२)	देवगति	"	
१३)	उच्चगोत्र	"	
१४)	नारकायु	"	
१५)	देवायु	"	
१६)	औदारिकशरीर	"	
१७)	तैजसशरीर	"	
१८)	कार्मणशरीर	"	
१९)	हास्य	"	
२०)	रति	"	
२१)	तिर्यंचगति	"	
२२)	नीचगोत्र	"	
२३)	अयशकीर्ति	"	
२४)	प्रचला	"	
२५)	निद्रा	"	
२६)	प्रचलाप्रचला	"	
२७)	निद्रानिद्रा	"	
२८)	जुगुप्सा	"	
२९)	भय	"	

	प्रकृति नाम	अल्पबहुत्व	जघन्य संक्रमण का स्वामी
३०)	शोक	अनन्तगुणा	
३१)	अरति	"	
३२)	पुरुषवेद	"	
३३)	स्त्रीवेद	"	
३४)	नपुंसकवेद	"	
३५)	मनःपर्यय ज्ञानावरण	"	
३६)	स्त्यानगृद्धि	"	
३७)	दानान्तराय	"	
३८)	अवधिज्ञानावरण, अवधि-दर्शनावरण, लाभान्तराय	"	
३९)	श्रुतज्ञानावरण, भोगान्तराय	"	
४०)	चक्षुदर्शनावरण	"	
४१)	मतिज्ञानावरण, परिभोगा.	"	
४२)	अप्रत्याख्यानावरण मान	"	
४३)	" क्रोध	विशेष अधिक	
४४)	" माया	"	
४५)	" लोभ	"	
४६)	प्रत्याख्यानावरण मान	अनन्तगुणा	
४७)	" क्रोध	विशेष अधिक	
४८)	" माया	"	
४९)	" लोभ	"	
५०)	संज्वलन मान	अनन्तगुणा	
५१)	" क्रोध	विशेष अधिक	
५२)	" माया	"	
५३)	" लोभ	"	
५४)	केवलज्ञाना. केवलदर्शना, असाता वीर्यान्तराय	अनन्तगुणा	
५५)	यशकीर्ति	"	
५६)	साता वेदनीय	"	
५७)	मिथ्यात्व	"	

पृ. पृ. ३९८

संक्रमण ४ प्रकार -

१) भुजाकार → पूर्व में कम स्पर्धकों का संक्रमण करके पश्चात् बहुत स्पर्धकों का संक्रमण करना। पूर्व से अधिक अनुभाग बंध होने पर

२) अल्पतर → पूर्व में बहुत स्पर्धकों का संक्रमण करके पश्चात् कम स्पर्धकों का संक्रमण करना। यह अनुभागकाण्डक घात के बिना नहीं होता।

३) अवस्थित → पूर्वोत्तर समयों में उतना मात्र ही संक्रमण होना।

४) अवक्तव्य → पूर्व में असंक्रामक होकर पश्चात् संक्रमण करना।

अनुभाग काण्डक की प्रथम फालि में अल्पतर संक्रमण होता है, द्वितीय फालि से चरम फालितक अवस्थित संक्रमण होता है।

प्रथम काण्डक में सबसे अधिक स्पर्धकों का घात होता है फिर द्वितीयादि काण्डकों में शेष रहे एकभाग प्रमाण अनुभाग के अनन्त बहुभाग का घात होता जाता है इसलिए प्रथम फालि में पूर्व से अल्पतर अनुभाग संक्रमण होता है

१) ५ ज्ञाना. ९ दर्शना., साता असाता, मिथ्यात्व =	अवक्तव्य छोड़कर शेष तीन संक्रमण
२) १६ कषाय, ९ नोकषाय -	चारों प्रकार के संक्रमण
३) सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	भुजाकार छोड़कर शेष तीन संक्रमण
४) ४ आयु, सादिसत्वरूप नामप्रकृति, उच्चगोत्र	४ प्रकार का संक्रमण
५) तीर्थंकर	अल्पतर छोड़कर शेष तीन संक्रमण
६) अनादिसत्वरूप नामप्रकृति, नीचगोत्र, ५ अंतराय	अवक्तव्य " " " "

एक जीव की अपेक्षा भुजाकारादि संक्रमणों का काल

प्रकृतिनाम	भुजाकार काल		अल्पतर		अवस्थित	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
५ ज्ञानावरण, ९ दर्शना. मिथ्यात्व	१स	अन्तर्मु.	१स	१स	१स	साधिक दो ६६ सा.
१६ कषाय, ९ नोकषाय, साता, असाता	"	"	"	"	"	"
उच्च - नीचगोत्र, ५ अंतराय	"	"	"	"	"	"
आहारक चतुष्क	"	"	"	"	"	पल्योपम असंख्यात
सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	×	×	"	"	अन्तर्मु.	साधिक दो ६६ सा.
तीर्थंकर	१स	अन्तर्मु.	×	×	१स	साधिक ३३ सा.
देवायु, नरकायु	१स	अन्तर्मु.	१स	१स	१स	"
मनुष्यायु, तिर्यंचायु	"	"	"	"	"	साधिक ३ पल्य.
शेष नामप्रकृति	१स	अन्तर्मु.	"	"	"	साधिक दो ६६ सा.

पृ.४००

अल्पबहुत्व

प्रकृतिनाम	संक्रामक नाम	अल्पबहुत्व	संख्या
ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, साता, असाता, मिथ्यात्व अनादि सत्कर्मिक नामकर्म, नीचगोत्र, ५ अन्तराय	अल्पतर संक्रामक	स्तोक	अनन्त
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे	"
	अवस्थित "	"	"
१६ कषाय, ९ नोकषाय	अवक्तव्य "	स्तोक	संख्यात
	अल्पतर "	अनन्तगुणे	अनन्त
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे	अनन्त
	अवस्थित "	संख्यातगुणे	अनन्त
सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	अल्पतर "	स्तोक	असंख्यात
	अवक्तव्य "	असंख्यातगुणे	"
	अवस्थित "	असंख्यातगुणे	"

अल्पतर संक्रमण करनेवाले एकेन्द्रिय जीव भी है इसलिए उनकी संख्या अनन्त है। अल्पतर का काल कम है उससे भुजाकार का काल असंख्यात गुणा है इसलिए अल्पतर संक्रामक से भुजाकार संक्रामक असंख्यात गुणे है। उससे अवस्थित का काल असंख्यातगुणा है इसलिए उसमें संचित अवस्थित संक्रामक जीव असंख्यातगुणे है।

प्रकृति नाम	संक्रामक नाम	अल्पबहुत्व	
नारकायु, देवायु	अल्पतर संक्रामक	स्तोक	
	अवक्तव्य "	संख्यातगुणे	
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे	
	अवस्थित "	"	
मनुष्यायु	अल्पतर "	स्तोक	
	अवक्तव्य "	विशेष अधिक	
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे	
	अवस्थित "	संख्यातगुणे	
तिर्यगायु	अवक्तव्य "	स्तोक	असंख्यात
	अल्पतर "	अनन्तगुणे	अनन्त
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे	
	अवस्थित "	संख्यातगुणे	

नरकगति	अवक्तव्य संक्रामक	स्तोक
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे
	अल्पतर "	"
	अवस्थित "	"
देवगति, वैक्रियिक शरीर		नरकगति के समान
मनुष्यगति, उच्चगोत्र	अवक्तव्य "	स्तोक
	अल्पतर "	अनन्तगुणे
	भुजाकार "	असंख्यातगुणे
	अवस्थित "	संख्यातगुणे
आहारक शरीर, तीर्थंकर	अवक्तव्य "	स्तोक
	भुजाकार "	संख्यातगुणे
	अल्पतर "	संख्यातगुणे
	अवस्थित "	असंख्यातगुणे

पृ. ४०२ उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमण वृद्धि व हानि का स्वामित्व

ज्ञानावरणादि अप्रशस्त	स्वामी
१) उत्कृष्ट अनुभाग संक्रम वृद्धि	उसके योग्य जघन्य अनुभाग सत्त्ववाला जीव जब सबसे उत्कृष्ट अनुभाग बन्ध करता है उसके आवली बाद बीतने पर वह जीव
२) उत्कृष्ट अनुभाग संक्रम हानि	उत्कृष्ट अनुभाग सत्त्ववाला प्रथम अनुभागकाण्डक घात कर... चुकने पर शेष अनुभाग का संक्रम करते समय
३) उत्कृष्ट अनुभाग संक्रम अवस्थान	उत्कृष्ट वृद्धि के पश्चात् दूसरे समय में
सातावेदनीय, यश, उच्चगोत्र ४) उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमवृद्धि	अकषाय क्षपक एक समय अधिक आवलिकालवर्ती
५) उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमहानि	दसवें गुणस्थान में उत्कृष्ट अनुभाग को बाधकर वह जीव नीचे मिथ्यात्व को प्राप्तकर प्रथम अनुभागकाण्डक घात कर चुकने पर शेष अनुभाग का संक्रामक
६) उत्कृष्ट अवस्थान	उत्कृष्ट वृद्धि होने पर द्वितीय समय में

अनुभाग ज्यादा से ज्यादा
उत्कृष्ट वृद्धि = एक साथ स्पर्धकों का बढ़ना।
उत्कृष्ट हानि = एक साथ ज्यादा से ज्यादा स्पर्धकों का कम होना।

अभव्ययोग्य उत्कृष्ट अनुभागों में से जितने मात्र स्पर्धकों को मिथ्यादृष्टि मध्यम परिणामों के द्वारा घातता है, सूक्ष्मसाम्परायिक द्वारा रचे गये उत्कृष्ट अनुभाग का भी घात करनेवाला जीव उतने मात्र ही स्पर्धकों को घातता है। इस कारण भव्य अथवा अभव्य के द्वारा रचित उत्कृष्ट अनुभाग का मध्यम परिणाम युक्त मिथ्यादृष्टि के द्वारा अनुभागकाण्डक घात कर चुकने पर अनुभाग संक्रम की उत्कृष्ट हानि होती है।
प्रायोग्य लब्धि में भव्य और अभव्य दोनों जीव पापप्रकृतियों का अनुभागकाण्डक घात करते हैं उसी प्रकार एकेन्द्रियों में उत्पन्न होने पर भव्य अभव्य दोनों भी पुण्य व पापप्रकृतियों का अनुभाग काण्डक घात करते हैं

जघन्य अनुभाग संक्रमण वृद्धि व हानि का स्वामित्व

प्रकृतिनाम	स्वामी
१) ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ५ अंतराय १) जघन्य अनुभाग संक्रम वृद्धि	हतसमुत्पत्तिक सू. एकेन्द्रिय जघन्य सत्व से एक प्रक्षेप अधिक बांधकर बंधावली बीतने पर वह जीव
२) जघन्य अनुभाग संक्रम हानि ३) जघन्य अवस्थान	बारहवें गुणस्थान में एक समय अधिक आवली शेष रहने पर जघन्य वृद्धि होने पर अनन्तर समय में वह जीव
निद्रा प्रचला जघन्य वृद्धि	ज्ञानावरण के समान जानना
जघन्य हानि जघन्य अवस्थान	बारहवे गुणस्थान में दो आवली + आवली शेष रहने पर असंख्यात जघन्य वृद्धि के पश्चात्
स्थानगृद्धित्रिक जघन्य वृद्धि	हतसमुत्पत्तिक जघन्य सत्व से प्रक्षेप अधिक बांधने पर आवली काल बीतने के पश्चात्
जघन्य हानि	उसी वृद्धिगत अनुभाग को अन्तर्मुहूर्त में घातनेवाले संक्रमण करनेवाले के
जघन्य अवस्थान	जघन्य वृद्धि या हानि के पश्चात्

सम्यक्त्व प्रकृति	जघन्य हानि	क्षायिक सम्यक्त्व होने में एक समय अधिक आवली शेष है उसके
	जघन्य वृद्धि	नहीं है।
	जघन्य अवस्थान	अंतिम अनुभागकाण्डक की द्वितीय फाली में वर्तमान
सम्यग्मिथ्यात्व	जघन्य हानि	चरम अनुभागकाण्डक के प्रथम समय में वर्तमान
	जघन्य अवस्थान	उसी के अनन्तर समय में (अंतिमकांडक के द्वितीय समय में)
	जघन्य वृद्धि	नहीं है।
अनन्तानुबन्धी चतुष्क	जघन्य वृद्धि	विसंयोजक जब संयोजक होता है उसके बाद दो समय अधिक आवली संयुक्त जीव के
	जघन्य हानि	विसंयोजक संयोजना करने के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त में अनन्त बहुभाग प्रमाण प्रथम काण्डक के घात करने के पश्चात्
	जघन्य अवस्थान	जघन्य हानि के पश्चात्
तीन संज्वलन पुरुषवेद	जघन्य हानि	जघन्य अनुभागबन्ध का संक्रमण करते हुए अन्तिम समय में क्षपक के
	जघन्य वृद्धि	हतसमुत्पत्तिक सू. एके. के जघन्य अनुभाग में एक प्रक्षेप अधिक बंध करने पश्चात् आवली बीतनेपर
	जघन्य अवस्थान	जघन्य वृद्धि में
संज्वलन लोभ	जघन्य हानि	१०वें गुणस्थान समाप्त होने में १ समय अधिक आवली शेष क्षपक
	जघन्य अवस्थान, जघन्य वृद्धि	तीन संज्वलन के समान
८ नोकषाय	जघन्य हानि	अंतिम अनुभाग काण्डक के प्रथम समय में वर्तमान जीव
	जघन्य अवस्थान व वृद्धि	हतसमुत्पत्तिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव प्रक्षेप अधिक बांधनेपर
सादि सत्त्ववाली नाम प्रकृतियाँ	जघन्य वृद्धि	संयोजन के पश्चात् आवली काल बीतनेपर
	जघन्य हानि	अनन्तानुबन्धि के समान
	जघन्य अवस्थान	"
अनादि सत्त्ववाली नाम प्रकृतियाँ नीचगोत्र	जघन्य वृद्धि	हतसमुत्पत्तिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव प्रक्षेप अधिक बांधने पर
	जघन्य हानि	उस प्रक्षेप को अन्तर्मुहूर्त में घातकर संक्रम करनेवाले के
	जघन्य अवस्थान	जघन्य वृद्धि या हानि के पश्चात्
उच्चगोत्र		अनन्तानुबन्धी के समान

अल्पबहुत्व

प्रकृति	वृद्धि हानि का नाम	अल्पबहुत्व
५ ज्ञाना, ९ दर्शना, असाता, मिथ्यात्व, १६ कषाय, ९ नोकषाय, अप्रशस्त नामप्रकृतियाँ, नीचगोत्र, ५ अन्तराय, आतप	उत्कृष्टहानि	स्तोक
	उत्कृष्टवृद्धि	विशेष अधिक
	उत्कृष्टअवस्थान	वृद्धि समान
साता, प्रशस्तनामप्रकृतियाँ, उच्चगोत्र	उत्कृष्ट हानि	स्तोक
	उत्कृष्ट वृद्धि	अनन्तगुणी
	" अवस्थान	वृद्धिसमान
आयुकर्म	" हानि	स्तोक
	" वृद्धि	विशेष अधिक
	" अवस्थान	वृद्धिसमान
५ ज्ञाना, ६ दर्शना, ४ संज्वलन, ९ नोकषाय, ५ अंतराय	जघन्य हानि	स्तोक
	" वृद्धि	अनन्तगुणी
	" अवस्थान	वृद्धि समान
स्त्यानगृद्धि त्रय, साता, असाता, मिथ्यात्व, ८ कषाय	जघन्य वृद्धि, हानि अवस्थान	तीनों समान है।
अनन्तानुबन्धी कषाय	जघन्य वृद्धि	स्तोक
	जघन्य हानि, अवस्थान	अनन्तगुणे
सम्यक्त्व प्रकृति	जघन्य हानि	स्तोक
	अघन्य अवस्थान	अनन्तगुणा
सम्यग्मिथ्यात्व	ज.हानि अवस्थान	दोनों समान
चार आयुकर्म	जघन्यवृद्धि अवस्थान	स्तोक
	जघन्यहानि	अनन्तगुणी
सादिक नामप्रकृति, उच्चगोत्र	हानि, वृद्धि, अवस्थान	आयुकर्म के समान
अनादि " नीचगोत्र	" " "	सातावेदनीय के समान
तीर्थंकर	जघन्य वृद्धि, अवस्थान हानि	दोनों समान है नहीं है।

1) आयु को छोड़कर शेष कर्मों के अनुभाग स्थितिघात के बिना भी घाते जाते हैं।
2) चारु आयुकर्मों के अनुभागों का घात स्थितिघात के बिना नहीं होता।

प्र

एक जीव की अपेक्षा वृद्धि व हानियों का काल

	जघन्यकाल	उत्कृष्टकाल
1) छह प्रकार का हानिसंक्रम	1 समय	1 समय
2) प्रतिसमय अपवर्तना घातवाली प्रकृतियोंका अनन्तगुणहानि संक्रमण	"	अन्तर्मुहूर्त
3) पांच प्रकारकी वृद्धि संक्रम	1 समय	आवली ÷ असंख्यात
अनन्तगुणवृद्धि संक्रम	1 समय	अन्तर्मुहूर्त

एक जीव की अपेक्षा वृद्धि व हानियों का अंतर

	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर
पांच वृद्धि और पांच हानि	1 समय + अन्तर्मुहूर्त	असंख्यात लोक
अनन्तगुणवृद्धि और हानि	1 समय	अन्तर्मुहूर्त

अल्पबहुत्व

1) मतिज्ञानावरण	अनन्तभागहानि संक्रामक	स्तोक
	असंख्यातभागहानिसंक्रामक	असंख्यातगुणे
	संख्यातभागहानि "	संख्यातगुणे
	संख्यातगुणहानि "	"
	असंख्यात गुणहानि "	असंख्यातगुणे
	अनन्तभागवृद्धि "	"
	असंख्यातभागवृद्धि "	"
	संख्यातभागवृद्धि "	संख्यातगुणे
	संख्यातगुणवृद्धि "	असंख्यात गुणेवृद्धि
	असंख्यातगुणवृद्धि "	असंख्यातगुणे
	अनन्तगुणहानि "	"
	अनन्तगुणवृद्धि "	असंख्यातगुणे
	अवस्थित संक्रामक	संख्यातगुणे

इसी प्रकार चार ज्ञानावरण, 9 दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, अनादि नामकर्मों, नीचगोत्र, पांच अन्तराय, मिथ्यात्व के विषय में कथन करना चाहिये।

प्रकृति नाम	हानिवृद्धि का नाम	अल्पबहुत्व
१६ कषाय, ९ नोकषाय मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र शेष पदों की प्ररूपणा ज्ञानावरण के समान	अवक्तव्य संक्रामक अनन्तभागहानि संक्रामक	स्तोक अनन्तगुणे
देवगतिद्विक, नरकगतिद्विक, वैक्रियिकचतुष्क	असंख्यातभागहानि संक्रामक संख्यातभागहानि " संख्यातगुणहानि " असंख्यातगुणहानि " अनन्तभागवृद्धि " असंख्यातभागवृद्धि " संख्यातभागवृद्धि " संख्यातगुणवृद्धि " असंख्यातगुणवृद्धि " अवक्तव्य संक्रामक अनन्तगुणहानि संक्रामक अनन्तगुणवृद्धि संक्रामक अनन्तभागहानि संक्रामक अवस्थित "	स्तोक संख्यातगुणे संख्यातगुणे असंख्यातगुणे " " संख्यातगुणे " असंख्यातगुणे " " " " "

प्र. पृ. ६०९

प्रदेशसंक्रम

जो प्रदेशाग्र अन्य प्रकृति में संक्रांत किया जाता है इसको प्रदेशसंक्रम कहते हैं
मूलप्रकृतिसंक्रम नहीं है।
उत्तरप्रकृति संक्रम ५ प्रकारका है →
1) उद्वेलनसंक्रम, विध्यातसंक्रम, अधःप्रवृत्तसंक्रम, गुणसंक्रम, सर्वसंक्रम

1) उद्वेलनसंक्रमण →
जैसे रस्सी को बलपूर्वक उधेडने से उसका रस्सीपना नष्ट हो जाता है उसीप्रकार जिन प्रकृतियों का बन्ध किया था उनको उद्वेलनभागहार के द्वारा अपकर्षण करके अन्य प्रकृतिरूप करना इस प्रकार से उनको नष्ट करने का नाम उद्वेलन है।

उद्वेलन प्रकृति १३ हैं,	उद्वेलनसंक्रमण के स्वामी
1) आहारकद्विक	असंयत चारों गति के जीव
2) सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	चारों गति के मिथ्यादृष्टि
3) देवद्विक, नरकद्विक, वैक्रियिकचतुष्क	एकेन्द्रिय, विकलत्रय
4) मनुष्यद्विक, उच्चगोत्र	तेजस्कायिक, वायुकायिक

1) उद्वेलन प्रकृतियों का प्रथम अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त अधःप्रवृत्तसंक्रमण होता है।
2) द्विचरम काण्डक पर्यन्त उद्वेलनसंक्रमण होता है।
3) अन्तिम काण्डक की द्विचरम फालिपर्यन्त गुणसंक्रमण होता है।
4) अन्तिम काण्डक की अन्तिम फालि में सर्वसंक्रमण होता है।
5) अधःप्रवृत्त संक्रम फालिरूप से और उद्वेलन संक्रमण काण्डकरूप से होता है।

2) विध्यातसंक्रमण → विध्यात अर्थात मंदविशुद्धि
मंदविशुद्धिवाले जीव के बन्धरहित प्रकृतियों का जो संक्रमण होता है वह विध्यातसंक्रमण है। यह संक्रमण सातवें अप्रमत्त गुणस्थानतक होता है। जिन गतियों में जिन प्रकृतियों का बन्ध नहीं होता वहाँ उनका विध्यात संक्रमण होता है। जैसे नरकगति में देवद्विक, नरकद्विक, वैक्रियिक चतुष्कादि को " " "

3) अधःप्रवृत्तसंक्रमण → जहाँ जिन प्रकृतियों का बंध संभव है वहाँ उन प्रकृतियों के बन्ध के होनेपर और उसके न होनेपर भी अधःप्रवृत्त संक्रम होता है। अपवाद → 1) सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व इन दो प्रकृतियों का, और अन्य भी उद्वेलन प्रकृतियों का बन्ध न होने पर भी अधःप्रवृत्त संक्रम होता है। 2) देवगति आदि २९ पुण्य प्रकृतियों का ९ वें १० वें गुणस्थान में

बन्ध न होनेपर भी अधःप्रवृत्त संक्रम होता है। (3) पुरुषवेद और तीन संज्वलन का बन्ध व्युच्छित्ति होने पर भी एक समय कम दो आवली तक नवक समयप्रबद्धों का अधःप्रवृत्त संक्रम होता है।

4) गुणसंक्रमण →

प्रतिसमय असंख्यात गुणित श्रेणि के क्रम से अन्यप्रकृतिरूप जो प्रदेशों का संक्रमण होता है वह गुणसंक्रमण है। यह आठवें गुणस्थान से १०वें तक बन्धरहित अप्रशस्त प्रकृतियों का ही होता है। उद्वेलन प्रकृतियों का अंतिम काण्डक में द्विचरमफालितक गुणसंक्रमण होता है। मिथ्यात्व का प्रथमोपशम सम्यक्त्व प्राप्त होने पर गुणसंक्रमण पूरण कालतक और क्षायिक सम्यक्त्व के अपूर्वकरण से अंतिम कांडक की द्विचरमफालीतक गुणसंक्रमण होता है। अनन्तानुबन्धि की विसंयोजना के अपूर्वकरण से " " " " " ।

5) सर्वसंक्रमण →

अन्तिम काण्डक की अन्तिम फालि - शेष बचे सर्व कर्मपरमाणुओं का अन्य प्रकृतिरूप होना सर्वसंक्रमण है।
जिन प्रकृतियों का नाश दसवें गुणस्थानतक होता है और उनमें भी जिन प्रकृतियोंका परमुखोदय रूपसे नाश होता है उन्हीं का सर्वसंक्रमण होता है और उद्वेलन प्रकृतियों का सर्वसंक्रमण होता है।

जिन प्रकृतियों में संक्रमण का द्रव्य दिया जाता है उनका बन्ध अवश्य होना चाहिये। दसवें गुणस्थानतक ही बन्ध होता है उसके ऊपर केवल एक साता वेदनीय का केवल प्रकृति और प्रदेशबन्ध ही होता है इसलिए दसवे गुणस्थान के ऊपर संक्रमण नहीं होता है।
दसवें गुणस्थान के ऊपर केवल अनुदयवाली प्रकृतियों का द्रव्य उदयप्रकृति में स्तिबुक संक्रमण द्वारा संक्रमित होकर उनका अभाव होता है।
स्तिबुक संक्रमण को संक्रमण में नहीं लिया है क्योंकि वह केवल एक स्थिति के सर्व प्रदेशों का ही संक्रमण होता है। उपर्युक्त 5 संक्रमण अर्थात वास्तव में संक्रमण के लिए पाँच भागहार के नाम हैं।

संक्रमण भागहार → 1
गुणसंक्रमण भागहार → पल्य ÷ असंख्यात   असंख्यात गुणा
अधःप्रवृत्त सं. भागहार → "   "
विध्यात सं. " → अंगुल ÷ असंख्यात   "
उद्वेलन सं " → "   "

पृ. 410-420

प्रकृतिसंख्या	प्रकृतियों के नाम	संक्रमण संख्या	संक्रमण के नाम
39	5 ज्ञानावरण, 4 दर्शनावरण, 5 अंतराय, 1 साता वेदनीय, 1 संज्व. लोभ, 1 पंचे. जाति, 1 तैजस 1 कार्मण, 1 समचतुरस्त्र सं. 4 वर्णादि, 1 अगुरु. 1 परघात, 1 उच्छ्वास, 1 प्र. विहायोगति, 10 त्रसदशक, 1 निर्माण = 39	1	अधःप्रवृत्त
30	3 स्त्यानत्रिक, 12 संज्व. बिना कषाय, 1 नंपुसकवेद 1 स्त्रीवेद, 2 अरति शोक, 11 तिर्यक् एकादश (तिर्यंचद्विक, एकेन्द्रियादि 4 जाति, आतप, उद्योत स्थावर, सूक्ष्म, साधारण = 11) = 30	4	अधःप्रवृत्त, विध्यात. गुणसंक्रमण, सर्वसंक्रमण
7	1 निद्रा, 1 प्रचला, अशुभवर्णादि-4, 1 उपघात = 7	2	अधःप्रवृत्त, गुणसंक्रमण
20	1 असाता वेदनीय, 1 अप्र. विहायोगति, 5 अंतके संस्थान, 5 संहनन, नीचगोत्र, 1 अपर्याप्त 6 अस्थिरादि = 20	3	विध्यात, अधःप्रवृत्त गुणसंक्रमण
12	आहार-2, 1 मिश्र, देव-2, नारक-4, उच्चगोत्र-1, मनुष्य-2 (सम्यक्त्वबिना शेष 12 उद्वेलन प्रकृति)	5	अधःप्रवृत्त, विध्यात उद्वेलन, गुणसंक्रमण सर्वसंक्रमण
4	संज्वलन क्रोध-1, मान-1, माया-1 पुरुषवेद = 4	2	अधःप्रवृत्त, सर्वसंक्रमण
4	औदारिक-2 वज्रर्षभ. संहनन-1 तीर्थंकर-1 = 4	2	अधःप्रवृत्त, विध्यातसंक्रम
4	1 हास्य, 1 रति, 1 भय, 1 जुगुप्सा	3	अधःप्रवृत्त, गुणसंक्र. सर्व.
1	मिथ्यात्व	3	विध्यात, गुण, सर्वसंक्र.
1	सम्यक्त्व	4	अधः, उद्वेलन, गुण, सर्व

पृ.४२१ उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम का स्वामित्व

प्रकृति नाम	स्वामित्व
१) ५ ज्ञाना., ४ दर्शना, ५ अंतराय	गुणितकर्मांशिक सातवी पृथिवी से तिर्यंच में उत्पन्न आवली कालवर्ती तद्भवस्थ होने पर
२) निद्रा, प्रचला	गुणित कर्मांशिक चरम समयवर्ती सूक्ष्म सांपरायिक क्षपक
३) स्त्यानगृद्धित्रय	गुणित " अनिवृत्तिकरण क्षपक, सर्वसंक्रमण द्वारा अंतिम फालि का संक्रामक
४) सातावेदनीय	" " सातवी पृथिवी से तिर्यंच में उत्पन्न प्रथम साता का बन्ध करके असाता का बन्ध किया, उसके आवली काल बीतने पर
५) असातावेदनीय	गुणित कर्मांशिक चरम समयवर्ती सू. सांपरायिक क्षपक
६) मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व	" " दर्शनमोहनीय क्षपक सर्वसंक्रम द्वारा अन्तिम फालि का संक्रामक
७) सम्यक्त्व	गुणित कर्मांशिक सातवी पृ. नारकी आयु में अंतर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्व को प्राप्त होकर गुणसंक्रमणपूरण करके सम्यक्त्व को पूर्ण करके मिथ्यात्व को प्राप्त प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि
८) अनन्तानुबन्धी कषाय	सातवी पृथिवी का गुणितकर्मांशिक सर्वलघु अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रहनेपर अनन्तानुबन्धी की विसंयोजक अंतिम फालि संक्रामक
९) आठ कषाय	गुणित कर्मांशिक अनिवृत्तिकरण क्षपक अंतिम " "
१०) नपुंसक वेद	" " देव ईशान कल्प में बारबार नपुंसक वेद को बांधकर स्त्री या पुरुषवेद के साथ उत्पन्न होकर सर्वलघु काल में क्षपणा में उद्यत हो नपुंसकवेद की अन्तिम, फालि का संक्रामक
११) स्त्रीवेद	गुणित कर्मांशिक भोगभूमि में पल्योपम के असंख्यातवें भाग में मृत्यु को प्राप्त होकर, फिर देव में जघन्य आयु, तत्पश्चात् मनुष्य में उत्पन्न होकर सर्वलघु काल में क्षपणा में उद्यत अंतिम फालि संक्रामक
१२) पुरुषवेद	सर्वलघुकाल में अन्यतर लिंग के साथ क्षपणा में उद्यत, पुरुषवेद का सर्वसंक्रमण से "
१३) ६ नोकषाय	" " " " छह नोकषायों की अन्तिम फालि का संक्रामक
१४) संज्वलन क्रोध	सर्वलघुकाल में क्षपणा में उद्यत सर्वसंक्रमण द्वारा सं.क्रोध का संक्रामक
१५) संज्वलन मान	" " " " " सं. मान का संक्रामक
१६) संज्वलन माया	" " " " " सं. माया का संक्रामक
१७) संज्वलन लोभ	बार बार कषायों का उपशमकरके, सर्वलघुकाल में क्षपणा में उद्यत अन्तरकरण क्रिया के अन्तिम समय में (उसके पश्चात् संज्व. लोभ का संक्रमण नहीं होता)

१८) नरकगति द्विक	गुणितकर्मांशिक पूर्वकोटिपृथक्त्व तक बन्ध करके क्षपणा में उद्यत नरकद्विक की अन्तिम फालि का संक्रामक
१९) तिर्यग्गतिद्विक	गुणितकर्मांशिक सातवी पृथ्वी से निकलकर तिर्यंच फिर मनुष्य हो सर्वलघुकाल में क्षपणा में उद्यत अन्तिम फालि संक्रामक यथावसर
२०) देवद्विक, वैक्रियिक चतुष्क	गुणितकर्मांशिक पूर्वकोटिपृथक्त्व तक इन्हें बांधकर क्षपणा में उद्यत बन्धव्युच्छित्ति के पश्चात् बन्धावली के व्यतीत होने पर
२१) आहारक चतुष्क	चार बार उपशम श्रेणी चढ़कर क्षपणा में उद्यत बंधव्युच्छित्ति के पश्चात् बन्धावली के व्यतीत होने पर
२२) औदा. तैजस, कार्मण शरीर उनके अंगोपांग, बन्धन, संघात	ज्ञानावरण के समान
२३) प्रशस्त संस्थान, प्रशस्त संहनन सुभग, आदेय, सुस्वर	१३२ सागर सम्यक्त्व, ४ बार उपशमश्रेणी चढ़कर गुणित कर्मांशिक, आठवें गुणस्थान के छठे भाग में बंधव्युच्छित्ति होने के पश्चात् आवली काल बीतने पर क्षपक
विशेषता २४) वज्रर्षभनाराच संहनन	अंतिम देवभव के अन्तिम समय में
२५) प्रशस्त ध्रुवबन्धी नामकर्म	सुभगादि के समान, केवल सम्यक्त्व काल ह्रस्व करना
२६) परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क प्रशस्त विहायोगति	" "
२७) यशकीर्ति	८ वें गुणस्थान के छठे भाग के अन्तिम समय में
२८) एकेन्द्रिय, आतप, स्थावर	गुणित कर्मांशिक ईशानदेव, वहाँ से आकर कषायों का उपशम न कर सर्वलघुकाल में क्षपणा में उद्यत १६ प्र. के क्षपणा के अंतिम समय में
२९) उद्योत	उपर्युक्त जीव
३०) अप्रशस्त संस्थान, संहनन वर्णादि ४, उपघात, अप्र. विहा. नीचगोत्र, अस्थिरषट्क	गुणितकर्मांशिक सातवी पृथ्वी से निकलकर लघुकाल में क्षपणा में उद्यत सूक्ष्मसाम्परायिक के अन्तिम समय में
३१) विकलत्रय, सूक्ष्मत्रय	तिर्यंचो और मनुष्यों में पूर्वकोटिपृथक्त्व तक परिभ्रमण करके सर्व लघुकाल में क्षपणा में उद्यत ९ वें गुणस्थान में १६ प्र. क्षपक के अन्तिम समय में
३२) अपर्याप्त की विशेषता	दसवें गुणस्थान क्षपक के अंतिम समय में
३३) उच्चगोत्र	गुणित कर्मांशिक ४ बार कषायों को उपशमा कर मिथ्यात्व को प्राप्त, लघुकाल में सिद्धि प्राप्त करनेवाला नीचगोत्र बन्ध के अंतिम समय में

पृ. 432

जघन्य प्रदेश संक्रम का स्वामित्व

प्रकृतिनाम	स्वामी
1) मतिश्रुत-मनःपर्ययकेवलज्ञानावरण चक्षु, अचक्षु, केवलदर्शनावरण	अभव्ययोग्य सर्वजघन्य सत्त्व के साथ 4 बार उपशमश्रेणी बहुतबार संयमासंयम, संयम को प्राप्त होकर अवधिज्ञान सहित क्षपणा में उद्यत अन्तिम समयवर्ती सू. सांपरायिक
2) अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण	मतिज्ञानावरण के समान, विशेषता → अवधिज्ञान रहित होनो
3) निद्रा प्रचला	" " " → अवधिज्ञान का नियम नहीं
4) स्त्यानगृद्धित्रय	क्षपित कर्मांशिक अन्तर्मुहूर्त संसार शेष रहने पर अधः प्रवृत्तकरण हुआ उसके अंतिम समय में
5) सातावेदनीय	जघन्य सत्कर्मिक कषायों उपशम न कर क्षपक हुआ असाता के बन्ध के अंतिम समय में
6) असातावेदनीय	जघन्य सत्कर्मिक 4 बार कषायों को उपशमा कर क्षय करता है उसके अधःप्रवृत्त के अन्तिम समय में
7) मिथ्यात्व	क्षपित कर्मांशिक अन्तर्मुहूर्त में सिद्ध होनेवाला दर्शनमोह का क्षपक अधःप्रवृत्तकरण के अन्तिम समय में
8) सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	जघन्य सत्कर्मिक दो 66 सागरतक सम्यक्त्व का पालन कर मिथ्यादृष्टि हुआ उद्वेलना के द्विचरम काण्डक के अंतिम समय में
9) अनन्तानुबन्धी कषाय	जघन्य सत्कर्मिक 4 बार कषायों का उपशमकर, मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ पुनः अनंतानुबंधी का बन्ध करके, पुनः दीर्घ काल सम्यक्त्व का पालन कर विसंयोजना को प्राप्त अधःप्रवृत्तकरण के अन्तिम समय में
10) 8 कषाय, अरति, शोक	जघन्य सत्कर्मिक 4 बार कषायों को उपशमा कर क्षपणा करते हुये अधःप्रवृत्तकरण के अन्तिम समय में
11) हास्य, रति, भय, जुगुप्सा	8 कषाय के समान, विशेष → आवली कालवर्ती अपूर्वकरण
12) तीन संज्वलन, पुरुषवेद	जघन्ययोग से बांधे गये समयप्रबद्ध का संक्रमण के अंतिम समय में (नववें गुणस्थान में अपनी-अपनी बन्धव्युच्छित्ति के पश्चात् 1 समय कम दो आवली के अंतिम समय में)
13) संज्वलन लोभ	जघन्य सत्कर्मिक कषायों का उपशम न करके क्षय करनेवाला आवली कालवर्ती अपूर्वकरण
14) स्त्रीवेद, नपुंसकवेद	दो 66 सागर सम्यक्त्व का पालन कर, 4 बार उपशम कर, क्षय करने में प्रवृत्त अधःप्रवृत्तकरण के अन्तिम समय में

15) नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, देवद्विक, वैक्रियिकचतुष्क →	उद्वेलित कर्म के साथ अंतर्मुहूर्त काल संयुक्त होकर 7वी पृथ्वी में जाकर पुनः पंचे. तिर्यंच, पुनः एकेन्द्रिय में उत्पन्न होकर उद्वेलना काल में द्विचरम काण्डक के
16) मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र →	तेजकायिक वायुकायिक " " " " " अंतिम समय में
17) तिर्यंचगति, तिर्यंच " उद्योत →	१६३ सागर और चार पल्योपम तक घुमाकर क्षपणा में उद्यत अधःप्रवृत्तकरण के अंतिम समयवर्ती क्षपक
18) आहारकचतुष्क	उद्वेलनाकाल के द्विचरम कांडक के अंतिम समय में
19) औदारिकचतुष्क	३ पल्योपम आयुष्क मनुष्य, तिर्यंच अंतिम समयमें
20) तैजसादि प्रशस्त प्रकृति	आवली कालवर्ती अपूर्वकरण क्षपक
21) प्रशस्त संस्थान, प्रशस्त संहनन	" " " "
22) अप्रशस्त संस्थान, अप्रशस्त संहनन, अप्र. विहायो, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीच	नपुंसकवेद के समान
23) आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त साधारणशरीर	तिर्यंचगति के समान, विशेषता - १८५ सागर और ४ पल्योपम तक घुमाकर फिर क्षपणा में उद्यत हुआ
24) तीर्थंकर	जघन्य योग से समयप्रबद्ध बांधकर आवली के पश्चात्

1) ऊपर सर्वत्र अधःप्रवृत्तकरण के अंतिम समय में जघन्य संक्रमण कहा है क्यों कि अपूर्वकरण के प्रथम समय से गुणसंक्रमण प्रारंभ होता है उसमें संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणितरूप से प्राप्त होता है। अधःप्रवृत्तकरण में विध्यात संक्रमण होता है उसका द्रव्य असंख्यातगुणा कम है।

2) उद्वेलन प्रकृतियों का द्विचरमकाण्डक के अंतिम समय में जघन्य संक्रमण कहा है क्यों कि अंतिम काण्डक में उनका गुणसंक्रमण होता है।

3) जघन्य संक्रमण दिखाने के लिए अधिक काल तक बंध का अभाव और अधिक काल तक संक्रमण बताया गया है। सत्वद्रव्य कम होगा तो संक्रमणद्रव्य कम होगा।

4) उच्चगोत्र, मनुष्यद्विक की उद्वेलना तेजकायिक, वायुकायिक जीव करता है।

पृ.४४१

उत्कृष्ट प्रदेश संक्रम का काल

सब कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमण का काल जघन्य व उत्कर्ष से एक समय मात्र है। पाँच दर्शनावरण, अनन्तानुबन्धी प्रकृतियों का अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम का काल अनादि अपर्यवसित (अनन्त), अनादि सान्त और सादि सान्त भी है। अभव्य की अपेक्षा अनादि अनन्त और भव्य की अपेक्षा अनादि सान्त है उपशम श्रेणी चढ़कर नीचे उतरने पर पुनः संक्रमण प्रारंभ होता है इसलिए सादि सान्त भी है।

अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम का काल

प्रकृतियों का नाम	जघन्य काल	उत्कृष्टकाल
१) ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ५ अंतराय	अन्तर्मुहूर्त	अनन्तकाल
२) ५ दर्शनावरण (५ निद्रा)	"	उपार्धपुद्गलपरि.
३) साता, असाता वेदनीय	एक समय	अन्तर्मुहूर्त
४) मिथ्यात्व	अन्तर्मुहूर्त	६६ सागरोपम
५) सम्यग्मिथ्यात्व	"	दो ६६ सागरोपम
५) सम्यक्त्व प्रकृति	"	पल्योपम ÷ असंख्यात
६) अनंतानुबंधी कषाय, शेष चारित्रमोहनीय	"	उपार्धपुद्गलपरि.
७) सादि सत्कर्मवाली नामप्रकृतियाँ (तीर्थंकर आहा. द्विक)	अन्तर्मुहूर्त	प्रकृतिसंक्रमण के समान
८) अनादि सत्कर्मवाली प्रकृतियाँ	अन्तर्मुहूर्त	उपार्धपुद्गलपरि.
९) शेष प्रकृतियों का	"	अनन्तकाल
१०) उच्चगोत्र	अन्तर्मुहूर्त+१स.	३३ सागरोपम
११) नीचगोत्र	१ समय	दो ६६ सागरोपम

पृ.४४२

उत्कृष्ट प्रदेश संक्रमण अल्पबहुत्व

प्रकृति	अल्पबहुत्व
१) सम्यक्त्व प्रकृति में	सब से स्तोक
२) केवलज्ञानावरण में	असंख्यातगुणा
३) केवलदर्शनावरण में	विशेष अधिक
४) प्रचला में	असंख्यातगुणा
५) निद्रा में	विशेष अधिक
६) अप्रत्याख्यानावरण मान	असंख्यातगुणा
७) " क्रोध	विशेष अधिक

अप्रत्याख्यानावरण माया	विशेष अधिक
" लोभ	" "
प्रत्याख्यानावरण मान	" "
" क्रोध	" "
" माया	" "
" लोभ	" "
अनन्तानुबन्धी मान	विशेष अधिक
" क्रोध	" "
" माया	" "
" लोभ	" "
मिथ्यात्व	" "
सम्यग्मिथ्यात्व में	" "
प्रचलाप्रचला में	असंख्यातगुणा
निद्रानिद्रा में	विशेष अधिक
स्त्यानगृद्धि में	" "
आहारक शरीर नामकर्म में	अनन्तगुणा
यशकीर्ति में	"
वैक्रियिक शरीर नामकर्म में	असंख्यातगुणा
औदारिक शरीर " में	विशेष अधिक
तैजसशरीर " में	" "
कार्मणशरीर " में	" "
देवगति नामकर्म में	असंख्यातगुणा
मनुष्यगति नामकर्म में	विशेष अधिक
सातावेदनीय	संख्यातगुणा
संज्वलनलोभ	"
दानान्तराय में	विशेष अधिक
लाभान्तराय में	"
भोगान्तराय में	"
उपभोगान्तराय में	"
वीर्यान्तराय में	"
मनःपर्ययज्ञानावरण में	"

अप्रत्याख्यानावरण माया	विशेष अधिक
" लोभ	" "
प्रत्याख्यानावरण मान	" "
" क्रोध	" "
" माया	" "
" लोभ	" "
अनन्तानुबन्धी मान	विशेष अधिक
" क्रोध	" "
" माया	" "
" लोभ	" "
मिथ्यात्व	" "
सम्यग्मिथ्यात्व में	" "
प्रचलाप्रचला में	असंख्यातगुणा
निद्रानिद्रा में	विशेष अधिक
स्त्यानगृद्धि में	" "
आहारक शरीर नामकर्म में	अनन्तगुणा
यशकीर्ति में	"
वैक्रियिक शरीर नामकर्म में	असंख्यातगुणा
औदारिक शरीर " में	विशेष अधिक
तैजसशरीर " में	" "
कार्मणशरीर " में	" "
देवगति नामकर्म में	असंख्यातगुणा
मनुष्यगति नामकर्म में	विशेष अधिक
सातावेदनीय	संख्यातगुणा
संज्वलनलोभ	"
दानान्तराय में	विशेष अधिक
लाभान्तराय में	"
भोगान्तराय में	"
उपभोगान्तराय में	"
वीर्यान्तराय में	"
मनःपर्ययज्ञानावरण में	"

अवधिज्ञानावरण में	विशेष अधिक	
श्रुतज्ञानावरण में	"	
मतिज्ञानावरण में	"	
अवधिदर्शनावरण में	"	
अचक्षुदर्शनावरण में	"	
चक्षुदर्शनावरण में	"	
उच्चगोत्र में	संख्यातगुणा	
नरकगति नामकर्म में	असंख्यातगुणा	
अयशकीर्ति में	"	
असातावेदनीय में	संख्यातगुणा	
नीचगोत्र में	विशेष अधिक	
तिर्यग्गति नामकर्म में	असंख्यातगुणा	
हास्य में	संख्यातगुणा	
रति में	विशेष अधिक	
स्त्रीवेद में	संख्यातगुणा	
शोक में	विशेष अधिक	
अरति में	" "	
नपुंसकवेद	" "	
जुगुप्सा	" "	
भय	" "	
पुरुषवेद	संख्यातगुणा	
संज्वलन क्रोध	"	
" मान	विशेष अधिक	
माया	विशेष अधिक	
पृ ५४४ नरकगति		
सम्यक्त्वप्रकृति	सबसे स्तोक	
सम्याग्मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा	
अप्रत्याख्यानावरण मान	"	
" क्रोध	विशेष अधिक	
" माया	"	

प्रत्याख्यान

अप्रत्याख्यानावरण लोभ	विशेष अधिक	प्रत्याख्यानावरण मान	असंख्यातगुणा
केवलज्ञानावरण	"	" क्रोध	विशेष अधिक
प्रचला	"	माया	"
निद्रा	"	लोभ	"
प्रचलाप्रचला	"		
निद्रानिद्रा	"		
स्त्यानगृद्धि	"		
केवलदर्शनावरण (दर्शना)	"		
मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा		
अनंतानुबन्धी मान	"		
" क्रोध	विशेष अधिक		
" माया	"		
" लोभ	"		
नरकगति	अनन्तगुणा		
वैक्रियिक शरीर	असंख्यातगुणा		
देवगति	संख्यातगुणा		
आहारकशरीर	असंख्यातगुणा		
यशकीर्ति	"		
औदारिकशरीर	संख्यातगुणा		
तैजसशरीर	विशेष अधिक		
कार्मणशरीर	"		
अयशकीर्ति	असंख्यातगुणा		
तिर्यचगति	विशेष अधिक		
मनुष्यगति	"		
हास्य	संख्यातगुणा		
रति	विशेष अधिक		
साता वेदनीय	संख्यातगुणा		
स्त्रीवेद	"		
शोक	विशेष अधिक		
अरति	"		
नंपुसकवेद	"		
जुगुप्सा	"		

भय	विशेष अधिक
पुरुषवेद	"
संज्वलन मान	"
" क्रोध	"
" माया	"
" लोभ	"
दानान्तराय	"
लाभान्तराय	"
भोगान्तराय	"
परिभोगान्तराय	"
वीर्यान्तराय	"
मनःपर्ययज्ञानावरण	"
अवधिज्ञानावरण	"
श्रुतज्ञानावरण	"
मतिज्ञानावरण	"
असातावेदनीय अवधिदर्शनावरण	"
अचक्षुदर्शनावरण	"
चक्षुदर्शनावरण	"
असातावेदनीय	संख्यातगुणा
उच्चगोत्र →	विशेष अधिक
नीचगोत्र →	"

तिर्यंचगति –

1	सम्यक्त्वप्रकृति	सबसे स्तोक
2	सम्यग्मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा
3	अप्रत्याख्यानावरण मान	"
4	" क्रोध	विशेष अधिक
5	" माया	"
6	" लोभ	"
7	प्रत्याख्यानावरण मान	"
8	" माया	"

९	प्रत्याख्यानावरण माया	विशेष अधिक
१०	" लोभ	"
११	केवलज्ञानावरण	"
१२	प्रचला	"
१३	निद्रा	"
१४	प्रचलाप्रचला	"
१५	निद्रानिद्रा	"
१६	स्त्यानगृद्धि	"
१७	केवलदर्शनावरण	"
१८	मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा
१९	अनन्तानुबन्धी मान	"
20	" क्रोध	विशेष अधिक
21	" माया	"
22	" लोभ	"
23	नरकगति	अनन्तगुणा
24	आहारकशरीर	असंख्यातगुणा
25	यशकीर्ति	"
26	वैक्रियिकशरीर	संख्यातगुणा
27	औदारिकशरीर	विशेष अधिक
28	तैजसशरीर	"
29	कार्मणशरीर	"
30	अयशकीर्ति	संख्यातगुणा
31	देवगति	विशेष अधिक
32	तिर्यंचगति	"
33	मनुष्यगति	"
34	हास्य	संख्यातगुणा
35	रति	विशेष अधिक
36	साता वेदनीय	संख्यातगुणा
37	स्त्रीवेद	"
38	शोक	विशेष अधिक
39	अरति	"
40	नंपुसकवेद	"

४१	जुगुप्सा	विशेष अधिक
४२	भय	"
४३	पुरुषवेद	"
४४	संज्वलन मान	"
४५	" क्रोध	"
४६	" माया	"
४७	" लोभ	"
४८	दानान्तराय	"
४९	लाभान्तराय	"
५०	भोगान्तराय	"
५१	परिभोगान्तराय	"
५२	वीर्यान्तराय	"
५३	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
५४	अवधिज्ञानावरण	"
५५	श्रुतज्ञाना॰	"
५६	मतिज्ञाना॰	"
५७	अवधिदर्शना॰	"
५८	अचक्षुदर्शनावरण	विशेष अधिक
५९	चक्षुदर्शनावरण	"
६०	असाता वेदनीय	असंख्यातगुणा
६१	उच्चगोत्र	विशेष अधिक
६२	नीचगोत्र	"

इसीप्रकार तिर्यंच योनिमतियोंमें भी समझना चाहिए। मनुष्य और मनुष्यनियोंमें अल्पबहुत्व मूलोघके समान है। देव और देवियोंका अल्पबहुत्व नारकियोंके समान है।

असंज्ञी

	असंज्ञी जीवों में	
१	सम्यक्त्वप्रकृति	सबसे स्तोक
२	सम्यग्मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा
३	अप्रत्याख्यानावरण मान	"
४	" क्रोध	विशेष अधिक
५	" माया	"
६	" लोभ	"
७	प्रत्याख्यानावरण मान	"
८	" क्रोध	"

९	प्रत्याख्यानावरण माया	विशेष अधिक
१०	लोभ	"
११	अनन्तानुबन्धी मान	"
१२	क्रोध	"
१३	माया	"
१४	लोभ	"
१५	केवलज्ञानावरण	"
१६	प्रचला	"
१७	निद्रा	"
१८	प्रचलाप्रचला	"
१९	निद्रानिद्रा	"
२०	स्त्यानगृद्धि	"
२१	केवलदर्शनावरण	"
२२	नरकगति	अनन्तगुणा
२३	आहार शरीर	असंख्यातगुणा
२४	यशकीर्ति	"
२५	वैक्रियिक शरीर	"
२६	औदारिक शरीर	विशेष अधिक
२७	तैजस शरीर	"
२८	कार्मण शरीर	"
२९	अयशकीर्ति	असंख्यातगुणा
३०	देवगति	विशेष अधिक
३१	तिर्यंचगति	"
३२	मनुष्यगति	"
३३	हास्य	संख्यातगुणा
३४	रति	विशेष अधिक
३५	सातावेदनीय	संख्यातगुणा
३६	स्त्रीवेद	"
३७	शोक	विशेष अधिक
३८	अरति	विशेष अधिक
३९	नपुंसकवेद	"
४०	जुगुप्सा	"
४१	भय	विशेष अधिक
४२	पुरुषवेद	"
४३	संज्वलन मान	"
४४	" क्रोध	"
४५	" माया	"
४६	" लोभ	"
४७	दानान्तराय	"
४८	लाभान्तराय	"
४९	भोगान्तराय	"
५०	परिभोगान्तराय	"
५१	वीर्यान्तराय	"
५२	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
५३	अवधिज्ञानावरण	"
५४	श्रुतज्ञानावरण	"
५५	मतिज्ञानावरण	"
५६	अवधिदर्शनावरण	"
५७	अचक्षु "	"
५८	चक्षु "	"
५९	असातावेदनीय	संख्यातगुणा
६०	उच्चगोत्र	विशेष अधिक
६१	नीचगोत्र	"

इसी प्रकार एकेंद्रिय और विकलेन्द्रियों के विषय में भी जानना चाहिए।

पृ.४९८

जघन्यप्रदेशसंक्रम अल्पबहुत्व

	प्रकृति	अल्पबहुत्व
१	सम्यक्त्व प्रकृति	सब से स्तोक
२	सम्यग्मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा
३	मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा
४	अनन्तानुबन्धी मान	"
५	" क्रोध	विशेष अधिक
६	" माया	विशेष अधिक
७	" लोभ	विशेष अधिक
८	प्रचलाप्रचला	असंख्यातगुणा
९	निद्रानिद्रा	विशेष अधिक
१०	स्त्यान गृद्धि	" "
११	अप्रत्याख्यानावरण मान	असंख्यातगुणा
१२	" क्रोध	विशेष अधिक
१३	" माया	"
१४	" लोभ	"
१५	प्रत्याख्यानावरण मान	"
१६	क्रोध	"
१७	माया	"
१८	लोभ	"
१९	केवलज्ञानावरण	"
20	प्रचला	"
21	निद्रा	"
22	केवलदर्शनावरण	"
23	नरकगति	अनन्तगुणा
24	देवगति	असंख्यातगुणा
25	वैक्रियिक शरीर	संख्यातगुणा
26	आहारक शरीर	असंख्यातगुणा
27	मनुष्यगति	संख्यातगुणा
28	उच्चगोत्र	"
29	तिर्यंचगति	असंख्यातगुणा
30	नपुंसकवेद	"

31	नीचगोत्र	संख्यातगुणा
32	स्त्रीवेद	असंख्यातगुणा
33	औदारिकशरीर	"
34	संज्वलन क्रोध	"
35	संज्वलन मान	विशेष अधिक
36	पुरुषवेद	"
37	संज्वलन माया	"
38	यशकीर्ति	असंख्यातगुणा
39	तैजसशरीर	संख्यातगुणा
40	कार्मणशरीर	विशेष अधिक
41	अयशकीर्ति	संख्यातगुणा
42	हास्य	"
43	रति	विशेष अधिक
44	सातावेदनीय	संख्यातगुणा
45	शोक	संख्यातगुणा
46	अरति	विशेष अधिक
47	जुगुप्सा	"
48	भय	"
49	संज्वलन लोभ	"
50	दानान्तराय	"
51	लाभान्तराय	"
52	भोगान्तराय	"
53	उपभोगान्तराय	"
54	वीर्यान्तराय	"
55	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
56	अवधि "	"
57	श्रुतज्ञानावरण	"
58	मतिज्ञानावरण	"
59	अवधिदर्शनावरण	"
60	अचक्षु "	"
61	चक्षु "	"
62	असातावेदनीय	संख्यातगुणा

पृ. ४४९

नरकगति में जघन्य प्रदेश संक्रम

सम्यक्त्व प्रकृति	सबसे स्तोक
सम्यग्मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा
मिथ्यात्व	''
अनन्तानुबन्धी मान	''
'' क्रोध	विशेष अधिक
'' माया	''
'' लोभ	''
प्रचलाप्रचला	असंख्यातगुणा
निद्रानिद्रा	विशेष अधिक
स्त्यानगृद्धि	''
अप्रत्याख्यानावरण मान	असंख्यातगुणा
'' क्रोध	विशेष अधिक
'' माया	''
'' लोभ	''
प्रत्याख्यानावरण मान	''
'' क्रोध	''
'' माया	''
'' लोभ	''
केवलज्ञानावरण	''
प्रचलाप्रचला	विशेष अधिक
निद्रा	''
केवलदर्शनावरण	''
आहारशरीर	अनन्तगुणा
देवगति	असंख्यातगुणा
मनुष्यगति	संख्यातगुणा
वैक्रियिकशरीर	''
नरकगति	''
उच्चगोत्र	''
तिर्यंचगति	असंख्यातगुणा
स्त्रीवेद	संख्यातगुणा
नीचगोत्र	''

यशकीर्ति	असंख्यातगुणा
औदारिक शरीर	संख्यातगुणा
तैजसशरीर	विशेष अधिक
कार्मणशरीर	"
अयशकीर्ति	संख्यातगुणा
पुरुषवेद	"
हास्य	"
रति	विशेष अधिक
साता वेदनीय	संख्यातगुणा
शोक	"
अरति	विशेष अधिक
जुगुप्सा	"
भय	"
संज्वलन मान	"
" क्रोध	"
" माया	"
" लोभ	"
दानान्तराय	"
लाभान्तराय	"
भोगान्तराय	"
परिभोगान्तराय	"
वीर्यान्तराय	"
मनःपर्ययज्ञानावरण	"
अवधिज्ञानावरण	"
श्रुतज्ञानावरण	"
मतिज्ञानावरण	"
अवधिदर्शनावरण	"
अचक्षुदर्शनावरण	"
चक्षुदर्शनावरण	"
असाता वेदनीय	संख्यातगुणा

पृ. ४५१

तिर्यंचगति -

तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें प्रकृत अल्पबहुत्व की प्ररुपणा उच्चगोत्र तक मूल- ओघके समान है।

औदारिक शरीर	असंख्यातगुणा	
तिर्यंचगति	संख्यातगुणा	
स्त्रीवेद	"	
नंपुसकवेद	"	
नीचगोत्र	"	
यशकीर्ति	असंख्यातगुणा	
तैजसशरीर	संख्यातगुणा	
कार्मणशरीर	विशेष अधिक	
अयशकीर्ति	संख्यातगुणा	
पुरुषवेद	"	
हास्य	"	
रति	विशेष अधिक	
साता वेदनीय	संख्यातगुणा	
शोक	"	
अरति	विशेष अधिक	
जुगुप्सा	"	
भय	"	असातावेदनीय तक नरकगति के समान है।

इसी प्रकार तिर्यंच योनिमतियोंमें भी प्रकृत संक्रम दण्डककी प्ररुपणा है।

मनुष्यगति -

मनुष्यगतिमें यह प्ररुपणा आहारक शरीर तक मूल-ओघके समान है।

तिर्यंचगति	असंख्यातगुणा
नंपुसकवेद	"
नीचगोत्र	संख्यातगुणा
स्त्रीवेद	असंख्यातगुणा
मनुष्यगति	"

औदारिकशरीर	असंख्यातगुणा
संज्वलन क्रोध	"
" मान	विशेष अधिक
पुरुषवेद	"
संज्वलन माया	"
उच्चगोत्र	असंख्यातगुणा
यशकीर्ति	"

शेष पद ओघके समान है। इसीप्रकार मनुष्यनियों में प्रकृत प्ररूपणा करना चाहिए।

देवगति -

देवोंमें केवलदर्शनावरण तक मूल-ओघके समान है।

आहार शरीर	अनन्तगुणा
नरकगति	असंख्यातगुणा
तिर्यंचगति	"
नपुंसकवेद	"
नीचगोत्र	संख्यातगुणा
स्त्रीवेद	असंख्यातगुणा
देवगति	"
वैक्रियिकशरीर	संख्यातगुणा
मनुष्यगति	असंख्यातगुणा
औदारिक शरीर	"
उच्चगोत्र	"
यशकीर्ति	"
तैजसशरीर	संख्यातगुणा

इसके आगे यह प्ररूपणा नारकियों के समान है।

असंज्ञी जीव

1	सम्यक्त्वप्रकृति	सबसे स्तोक
2	सम्यग्मिथ्यात्व	असंख्यातगुणा
3	मिथ्यात्व	"
4	अनन्तानुबन्धी मान	"
5	" क्रोध	विशेष अधिक
6	" माया	"
7	" लोभ	"
8	अप्रत्याख्यानावरण मान	असंख्यातगुणा
9	" क्रोध	विशेष अधिक
10	" माया	"
11	" लोभ	"
12	प्रत्याख्यानावरण मान	"
13	" क्रोध	"
14	" माया	"
15	" लोभ	"
16	केवलज्ञानावरण	"
17	प्रचला	"
18	निद्रा	"
19	प्रचलाप्रचला	"
20	निद्रानिद्रा	"
21	स्त्यानगृद्धि	"
22	केवलदर्शनावरण	"
23	नरकगति	अनन्तगुणा
24	देवगति	असंख्यातगुणा
25	वैक्रियिकशरीर	संख्यातगुणा
26	आहारकशरीर	असंख्यातगुणा
27	मनुष्यगति	संख्यातगुणा
28	उच्चगोत्र	"
29	यशकीर्ति	असंख्यातगुणा
30	औदारिकशरीर	संख्यातगुणा

३१	तैजसशरीर	विशेष अधिक
३२	कार्मणशरीर	"
३३	तिर्यचगति	संख्यातगुणा
३४	हास्य	"
३८	रति	विशेष अधिक
३९	साता वेदनीय	संख्यातगुणा
४०	शोक	"
४१	अरति	विशेष अधिक
४२	नंपुसकवेद	"
४३	जुगुप्सा	"
४४	भय	"
४५	संज्वलन मान	"
४६	" क्रोध	"
४७	" माया	"
४८	" लोभ	"
४९	दानान्तराय	"
५०	लाभान्तराय	"
५१	भोगान्तराय	"
५२	परिभोगान्तराय	"
५३	वीर्यान्तराय	"
५४	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
५५	अवधिज्ञानावरण	"
५६	श्रुतज्ञानावरण	"
५७	मतिज्ञानावरण	"
५८	अवधिदर्शनावरण	"
५९	अचक्षुदर्शनावरण	"
६०	चक्षुदर्शनावरण	"
६१	असाता वेदनीय	असंख्यातगुणा
६२	नीचगोत्र	विशेष अधिक

३४	अयशकीर्ति	विशेष अधिक
३५	पुरुषवेद	संख्यात गुणा
३६	स्त्रीवेद	" "

जिसप्रकार असंज्ञियों में यह प्ररुपणा की गयी है उसी प्रकार एकेन्द्रियों, द्वीन्द्रियों, त्रीन्द्रियों और चतुरिन्द्रियों में भी उसे करना चाहिए।

पृ. ४५३

भुजाकार संक्रम

1) भुजाकार → पहले कम प्रदेशों का संक्रमण कर अनन्तर समय में अधिक प्रदेशों का संक्रमण करना भुजाकार संक्रमण है। गुणसंक्रमण के काल में गुणकाररूप से संक्रमण बढ़ता जाता है।

2) अल्पतर संक्रमण → पहले ज्यादा प्रदेशों का संक्रमण कर बाद में कम प्रदेशों का संक्रमण करना अल्पतर संक्रमण है।

3) अवस्थित संक्रमण → पूर्व समय में जितने प्रदेशों का संक्रमण हुआ उतने ही प्रदेशों का संक्रमण करना अवस्थित संक्रमण है।

4) अवक्तव्य संक्रमण → संक्रमण का अभाव होकर पुनः संक्रमण प्रारंभ होता है उसे अवक्तव्य संक्रमण कहते हैं।

संक्रमण का स्वामी

५ ज्ञाना. ९ दर्शना. मिथ्यात्व, १६ कषाय. भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, ५ अंतराय, ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियाँ	भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित संक्रामक कोई भी एक जीव अवक्तव्य संक्रामक उपशमश्रेणी से गिरनेवाला
साता, असाता, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, हास्य रति, अरति, शोक, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, उच्चगोत्र नीचगोत्र, परिवर्तमान नामप्रकृति	ऊपर के समान, विशेषता → इनका अवस्थित संक्रम नहीं है।

भुजाकारादि संक्रमण का काल

प्रकृतियों का नाम	भुजाकार		अल्पतर		अवस्थित	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
1) ५ ज्ञाना. ९ दर्शना ५ अन्तराय ध्रुवबन्धी नामकर्म, पुंवेद	१ समय	पल्यो÷असं	१ समय	पल्यो÷असं.	१ स.	संख्यात समय
2) सातावेदनीय	१ "	आवली−१स	"	अन्तर्मुहूर्त	×	×
3) असातावेदनीय	"	अन्तर्मु.	"	"	×	×
4) मिथ्यात्व	"	" अथवा आवली−१	"	६६ सा	१ स.	संख्यात समय
5) सम्यक्त्वप्रकृति	"	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	पल्यो÷असं	×	×
6) सम्यग्मिथ्यात्व	"	"	"	दो ६६ सा.	×	×
7) अनन्तानुबन्धिचतुष्टय	"	पल्यो÷असं.	१ समय	"	१ स.	संख्यात समय
8) बारह कषाय, भय, जुगुप्सा	१ समय	"	"	पल्यो÷असं	"	"
9) हास्य रति, अरति, शोक	"	अन्तर्मु.	१ स.	अन्तर्मु.	×	×

प्रकृतियों का नाम	भुजाकार काल		अल्पतर काल		अवस्थित काल	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
१०) स्त्रीवेद	१ समय	अन्तर्मु.	१ स.	दो ६६ सा.	×	×
११) नपुंसकवेद	"	"	"	दो ६६ सा + ३ पल्य	×	×
१२) नरकगतिद्विक	अन्तर्मु.	"	अन्तर्मु.	दो ६६ सा.	×	×
१३) तिर्यंचगतिद्विक	"	"	"	१ ६३ सा.	×	×
१४) वज्रऋषभ नाराचसंहनन मनुष्यगतिद्विक उपदेश से	१ स.	पल्यो÷असं.	१ स.	पल्यो÷असं.	१ स	संख्यात समय
" युक्ति से	"	३३ सा − १ स.	"	तीन पल्य	1	
१५) देवगतिद्विक, वैक्रियिक	"	पल्यो÷ असं.	"	पल्यो÷ असं.	१ स.	संख्यात समय
" हेतु से (युक्ति से)		साधिक ३ पल्य		३३ सा		
१६) औदारिकशरीर मनुष्यगति समान						
१७) समचतुरस्रसंस्थान	१ स.	पल्यो÷असं.	१ स.	पल्यो÷असं.	१ स	संख्यात समय
" हेतु से	"	३३ सा.		३३ सा.		
१८) पुसंस्थान, पुसंहनन, अप्र. विहा. दुर्भग, दुस्वर अनादेय	१ स.	अन्तर्मु.	१ स	दो ६६ सा. + ३ पल्य	×	×
१९) आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त साधारणशरीर	"	"	१ स.	१८५ सा.	×	×
२०) स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, अयश.	१ स.	"	१ स.	अन्तर्मु.	×	×
२१) उद्योत	"	"	"	१ ६३ सा + ३ पल्य	×	×
२२ परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय, यश सुस्वर	१ स.	पल्यो÷ असं	१ स.	पल्यो÷ असं.	१ स	संख्यात समय
२३) उच्चगोत्र	१ स	आवली	१ स.	३३ सा.	×	×
उद्वेलना के अंतिम स्थितिकाण्डकों	अन्तर्मु	अन्तर्मुहूर्त				
२४) नीचगोत्र	१ स	आवली				
" क्षपणा व उपशामना में	अन्तर्मु	अन्तर्मुहूर्त	१ स.	६६ सा	×	×

क्यों कि बंध के अभाव में प्रदेशों की संख्या बढ़ती नहीं है प्रत्युत संक्रमण के द्वारा घटती जाती है और बंध के अभाव से अन्य प्रकृतियों का उसमें संक्रमण नहीं होता।

2) जिन प्रकृतियों का जहांपर बंध नहीं है उनका वहाँ उतने कालतक अल्पतर संक्रमण होगा। सम्यक्त्व और मिश्र के काल में मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, प्रसंस्थानादि प्रकृतियों का बन्ध नहीं है इसलिए उनका साधिक दो छयासठ सागर अल्पतर संक्रमण का काल कहा है। मिथ्यात्व का तीसरे गुणस्थान में संक्रमण नहीं होता अतः उसका काल १६६ सागर है।

3) तिर्यंचगतिद्विक का मिश्र में, सम्यक्त्व में और नौ ग्रैवेयक की मिथ्यात्व अवस्था में भी बन्ध नहीं होता अतः उनका अल्पतर संक्रमण १३२ सा + ३१ सा = १६३ सागर कहा है।

4) मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभनाराचसंहनन इन प्रकृतियों का कर्मभूमि और भोगभूमि में सम्यक्त्व काल में बन्ध नहीं होता। कर्मभूमि का क्षायिक सम्यग्दृष्टि मरण करके भोगभूमि में उत्पन्न हुआ तो वह उत्कृष्टरूप से आठवर्ष कम पूर्वकोटि वर्ष से अधिक तीन पल्यतक उपर्युक्त प्रकृतियों का बन्ध नहीं करता इसलिए उनका अल्पतर संक्रमण का उतना काल बताया है।

5) आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण का २२ सागर छठे नरकमें + दो ६६ सागर सम्यक्त्व में + ३१ सागर नववें ग्रैवेयक में बन्ध नहीं वहाँ उनका अल्पतर संक्रमण कहा है।

6) अपूर्वकरण में बन्धवलित अप्रशस्त प्रकृतियों का गुणसंक्रमण होता है इसलिए उनका वहाँपर भुजाकार संक्रमण अंतर्मुहूर्त कहा है।

7) कर्मभूमि और भोगभूमि में सम्यक्त्व के काल में निरन्तर देवगति का बंध होता है इसलिए युक्ति से साधिक तीन पल्यतक उनका भुजाकार संक्रमण कहा है।

8) सर्वार्थसिद्धि में निरन्तर मनुष्यगतिपंचक का बंध होता है इसलिए युक्ति से ३३ सागर तक उनका भुजाकार संक्रमण कहाँ है। प्रथम समय में सब से कम संक्रमण होता है और दूसरे समय से भुजाकार संक्रमण होता है इसलिए ३३ सागर में से एक समय कम कहा है।

9) परिवर्तमान प्रकृतियों का निरन्तर बंधकाल उत्कृष्टरूप से अन्तर्मुहूर्त है जब बन्ध होगा तब उनका भुजाकारसंक्रमण होगा बंध के अभाव में अल्पतर संक्रमण होगा अतः उनका भुजाकार और अल्पतर संक्रमण का काल अन्तर्मुहूर्त बताया है।

अल्पबहुत्व

मतिज्ञानावरण ४ ज्ञाना. ३ दर्शना. ५ अंतराय १६ कषाय, भय, जुगुप्सा ध्रुवबन्धी नामप्रकृति	अवक्तव्य संक्रामक अवस्थित " अल्पतर " भुजाकार "	स्तोक अनन्तगुणे असंख्यातगुणे संख्यातगुणे
साता. असाता वेदनीय नीच और उच्चगोत्र	अवक्तव्य संक्रामक भुजाकार " अल्पतर "	स्तोक असंख्यातगुणे संख्यातगुणे
हास्य, रति, स्त्रीवेद	अवक्तव्य संक्रामक भुजाकार संक्रामक अल्पतर संक्रामक	स्तोक अनन्तगुणे संख्यातगुणे
अरति, शोक, नपुंसकवेद	अवक्तव्य " अल्पतर " भुजाकार "	स्तोक अनन्तगुणे संख्यातगुणे
पुरुषवेद	अवक्तव्य संक्रामक अवस्थित संक्रामक भुजाकार संक्रामक अल्पतर संक्रामक	स्तोक असंख्यातगुणे अनन्तगुणे संख्यातगुणे
मिथ्यात्व	अवस्थित संक्रामक अवक्तव्य संक्रामक भुजाकार " अल्पतर "	स्तोक असंख्यातगुणे " "
सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	अवक्तव्य संक्रामक भुजाकार " अल्पतर "	स्तोक असंख्यातगुणे "

नरकगति	अवक्तव्य संक्रामक भुजाकार संक्रामक अल्पतर संक्रामक	स्तोक असंख्यातगुणे "
तिर्यंचगति	अवक्तव्य संक्रामक अल्पतर संक्रामक भुजाकार संक्रामक	स्तोक असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे
मनुष्यगति, प्रथम संस्थान प्रथम संहनन	अवस्थित संक्रामक अवक्तव्य " भुजाकार " अल्पतर "	स्तोक असंख्यातगुणे अनन्तगुणे असंख्यातगुणे
देवगति	अवस्थित संक्रामक अवक्तव्य " भुजाकार " अल्पतर "	स्तोक असंख्यातगुणे " "
चार संस्थान, चार संहनन	अवक्तव्य संक्रामक भुजाकार संक्रामक अल्पतर संक्रामक	स्तोक अनन्तगुणे संख्यातगुणे
हुण्डसंस्थान, असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन	अवक्तव्य संक्रामक अल्पतर " भुजाकार "	स्तोक अनन्तगुणे संख्यातगुणे

ज्ञानावरणादि ध्रुवबन्धी प्रकृतियों के अवक्तव्य संक्रमण के स्वामी उपशमश्रेणी से उतरनेवाले जीव हैं इसलिए वे संख्यात ही हैं। अवस्थित संक्रामक एकेंद्रियादि सभी जीव हैं इसलिए अनन्तगुणे हैं। अवस्थित संक्रमण से अल्पतर संक्रमण का काल असंख्यातगुणित है इसलिए उतने कालतक संचित हुए जीव असंख्यातगुणित हैं।

संक्रमण द्रव्य में पूर्व समय से उत्तर समय में जहाँ सब से अधिक वृद्धि होती है उसे उत्कृष्ट वृद्धि कहते हैं जैसे पहले १०० का संक्रमण हुआ बाद में १०००० का संक्रमण हुआ। इसीप्रकार हानि समझना।

पु.४६१

पदनिक्षेप में स्वामित्व

प्रकृतियों का नाम		वृद्धि हानि का स्वामी
५ज्ञाना, ४दर्शना, ५अन्तराय	उत्कृष्ट वृद्धि	गुणितकर्मांशिक सातवी पृथिवी का नारकी
	उत्कृष्ट हानि	" सूक्ष्मसांपराय के अन्तिम समय में
	" अवस्थान	उत्कृष्ट वृद्धि होने पर
निद्रा प्रचला	उत्कृष्ट वृद्धि	गुणितकर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती क्षपक
	उत्कृष्ट हानि	अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसांपराय मरण कर देव हुआ उसके प्रथम समय में
	उत्कृष्ट अवस्थान	उत्कृष्ट वृद्धि होने पर
स्त्यानगृद्धि	उत्कृष्ट वृद्धि	गुणित कर्मांशिक के सर्वसंक्रमण के समय
	उत्कृष्ट हानि व अवस्थान	निद्रा के समान
सातावेदनीय	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. चौथी बार उपशमश्रेणि चढ़कर सूक्ष्मसांपरायिक के अंतिम समय में मरकर देव हुआ आवली कालवर्ती देव के उत्कृष्ट वृद्धि होती है।
	उत्कृष्ट हानि	उ. वृद्धि के अनन्तर समय में उत्कृष्ट हानि होती है।
	" अवस्थान	नहीं है।
असातावेदनीय	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. क्षपकश्रेणी पर अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसांपराय
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. उपशमश्रेणिपर सूक्ष्म सां. अनन्तर समय में मरण को प्राप्त होकर प्रथम समयवर्ती देव
	" अवस्थान	नहीं होता।
मिथ्यात्व, सम्य	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. मिथ्यात्व की अन्तिम फाली सर्वसंक्रामक
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. गुणसंक्रमण के अनन्तर विध्यात संक्रमण को प्राप्त
	उत्कृष्ट अवस्थान	गु.क. योगवृद्धि बढ़कर समयप्रबद्ध बांधता है पुनः सम्यक्त्व प्राप्त कर आवली बीताकर उत्कृष्ट संक्रम वृद्धि होती है उसका अनन्तर काल में अवस्थान होता है।
सम्यक्त्व	उत्कृष्ट वृद्धि	उत्कृष्ट क्षपितकर्मवाला गु.क. मिथ्यादृष्टि अल्प उद्वेलनकाल में उद्वेलना कर अन्तिम काण्डक की अन्तिम समय में

	उत्कृष्ट हानि	उत्कृष्ट सत्त्व के साथ मिथ्यात्व को प्राप्त द्वितीय समयवर्ती
	" अवस्थान	नहीं है।
सम्यग्मिथ्यात्व		मिथ्यात्व के समान वृद्धि, हानि है।
अनन्तानुबन्धी कषाय	उत्कृष्ट वृद्धि	सर्वसंक्रमण द्वारा अन्तिम फाली का संक्रामक गु.क.
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. सम्यक्त्व को प्राप्त प्रथम समय में
	उत्कृष्ट अवस्थान	अधःप्रवृत्त संक्रमके द्वारा उत्कृष्ट वृद्धि होने के अनन्तर समय में
आठ कषाय	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. सर्वसंक्रमण द्वारा अन्तिम फाली का संक्रामक
अप्र. प्र. क्रोध	उत्कृष्ट हानि	गु.क. दो क्रोध के अनुपशान्त रहने के अन्तिम समय में मरकर देवपर्याय के प्रथम समय में
दो मान, माया, लोभ	उत्कृष्ट हानि	दो क्रोध के समान, विशेष अपने-अपने काल में अनुपशान्त।
	उत्कृष्ट अवस्थान	अनंतानुबंधी के समान
संज्वलन क्रोध, मान, माया	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. सर्वसंक्रमण द्वारा अन्तिम फाली का संक्रामक
	उत्कृष्ट हानि	उसी के अनन्तर काल में
छह नोकषाय	उत्कृष्ट हानि	अनुपशान्त रहने के अन्तिम समय पश्चात् मरकर देव हुआ प्रथम समय में
हास्य, रति, शोक, अरति	" अवस्थान	अवस्थान नहीं है।
भय जुगुप्सा	" "	ज्ञानावरण के समान
संज्वलन लोभ	उत्कृष्ट वृद्धि	चार बार कषायों का उपशम कर क्षपणा में उद्यत, अन्तर करण समाप्ति के अंतिम समय में
	उत्कृष्ट हानि	चौथी बार कषायों का उपशामक अन्तरकरण के अंतिम समय में मरकर देव होने के पश्चात् एक समय अधिक आवली मात्र काल बीतने पर
	उत्कृष्ट अवस्थान	अनंतानुबंधी के समान
स्त्रीवेद, नपुंसकवेद	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. सर्वसंक्रमणद्वारा अन्तिम फाली का संक्रामक
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. अन्तिम समयवर्ती उपशामक मरकर देव हुआ प्रथम समय में
	" अवस्थान	नहीं है।

नरकगति, तिर्यंचगति गत्यानुपूर्वी	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. सर्वसंक्रम द्वारा अन्तिम फालि का संक्रामक
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. उपशामक सू.सां. के अंतिम समय में मरकर देव हुआ उसके प्रथम समय में
	" अवस्थान	नहीं है।
मनुष्यगति - गत्यानुपूर्वी	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. सातवी पृथ्वी में 33 सागर तक सम्यक्त्वी होकर अल्पकाल रहनेपर मिथ्यात्वी हुआ मरकर तिर्यंच के प्रथम समय में
	उत्कृष्ट हानि अवस्थान	उपर्युक्त जीव मिथ्यात्व को प्राप्त होनेपर प्रथम समय में नहीं है। दूसरे मत में नरकगति में उत्कृष्ट वृद्धि के पश्चात् अवस्थान को प्राप्त
देवगति, वैक्रियिक शरीर गत्यानुपूर्वी	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क असंख्यातवर्षायुष्क → १०००० वर्षायुष्क देव → पूर्ण बांधकर तिर्यंच मनुष्य हुआ प्रथम समय में
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. असंख्यातवर्षायुष्क में पूर्ण बांधकर मरकर देव हुआ उसके प्रथम समय में
	उत्कृष्ट अवस्थान	तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट वृद्धि से वृद्धिंगत होकर अवस्थान को प्राप्त तीन पल्योपम आयुवाले जीव के
औदारिक शरीर	उत्कृष्ट हानि	गु.क. सातवी पृथिवी से संज्ञी मिथ्यादृष्टि हुआ - लघुकाल में सम्यक्त्व को प्राप्त कर विध्यातसंक्रम के प्रथम समयमें
	उत्कृष्ट वृद्धि	जघन्य सम्यक्त्वकाल के भीतर देव हुआ, उसके प्रथम समय में अधःप्रवृत्तसंक्रामक
	" अवस्थान	मनुष्यगति के समान
आहारक शरीर, सब प्रशस्त ध्रुवबन्धी प्रकृति	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. ७ बार कषायों को उपशमा कर क्षपणा में उद्यत बंधव्युच्छित्ति से आवली मात्र जाकर
	उत्कृष्ट हानि	वृद्धि के अनन्तर काल में
तैजसकार्मण शरीर	उत्कृष्ट वृद्धि, हानि	आहारक शरीर के समान
प्रथम संहनन व प्रथम संस्थान	" "	गु.क. दो ६६ सा. तक सम्यक्त्व का पालन कर ७ बार कषायों को उपशमा कर क्षपणा में उद्यत बंधव्युच्छित्ति से एक आवली के बीतने पर समय में उत्कृष्ट वृद्धि और उसके अनन्तर उत्कृष्ट हानि

	उत्कृष्ट अवस्थान	मनुष्यगति के समान
पु संस्थान, पु संहनन अप्र. विहायोगति अस्थिर, अशुभ, अयश	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. कषायों का उपशम न कर लघुकाल में क्षपणा में उद्यत (करता हुआ) अंतिम समयवर्ती सूक्ष्मसांपराधिक
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. उपशमश्रेणिपर सूक्ष्मसांपराधिक अंतिम समय में मरकर देव के प्रथम समय में
अप्रशस्त वर्णचतुष्क, उपघात	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. उपशमन के बिना क्षपक सू.सां. अंतिम समयमें
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. प्रथमबार उपशमक सू.सां. में मरकर देव हुआ तब प्रथम समय में
	अवस्थान	तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट वृद्धि होनेपर
अप्रशस्त अध्रुवबन्धी प्रकृति		अप्रशस्त ध्रुवबन्धी के समान, विशेष यह है कि इनका अवस्थान नहीं है।
परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहा. त्रसचतुष्क, सुभगत्रय	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. दो छ्‌छ सागर तक सम्यक्त्व, ४ बार कषाय उपशमा कर क्षपणा में उद्यत बंधव्युच्छित्ति से १ आवली बीतनेपर।
	उत्कृष्ट हानि	उसके अनन्तर समय में
	अवस्थान	मनुष्यगति के समान
आतप, उद्योत	उत्कृष्ट वृद्धि	सर्वसंक्रमण के समय
	उत्कृष्ट हानि	गु.क. प्रथमबार उपशमश्रेणी चढ़ सूक्ष्मसांपराय हुआ अंतिम समय में मर कर देव हुआ प्रथम समय में
	अवस्थान	नहीं है।
स्थिर, शुभ, यशःकीर्ति	उत्कृष्ट वृद्धि	गु.क. ४बार कषाय उपशमाकर क्षपणा में उद्यत बंधमानक नामप्रकृतियों के बंधव्युच्छित्ति से आवली मात्र जाकर
	उत्कृष्ट हानि	उसी के अनन्तर समय में
यशःकीर्ति की विशेषता	उत्कृष्ट वृद्धि	परभविक नामप्रकृतियों के बंधव्युच्छेद के अंतिम समयमें
	उत्कृष्ट हानि	चतुर्थ उपशमना में सू.सां. अंतिम समय में मरकर देवों में उत्पन्न होकर एक समय अधिक आवली के बीतनेपर। अवस्थान नहीं है।

नीचगोत्र	उत्कृष्ट वृद्धि उत्कृष्ट हानि अवस्थान	अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसांपरायिक क्षपक सू.सां. के मरण को प्राप्त होकर देव के प्रथम समय में नहीं है।
उच्चगोत्र	वृद्धि हानि अवस्थान	मनुष्यगति के समान

स्पष्टीकरण → उत्कृष्ट वृद्धि

१) अपूर्वकरण से लेकर जिन प्रकृतियों का गुणसंक्रमण होता है और जो परमुखोदयसे नष्ट होती है उनके चरम समय में सर्व संक्रमण होता है वहाँ सब से अधिक वृद्धि होती है क्यों कि प्रत्येक समय में असंख्यातगुणितरूप से संक्रमण बढ़ता है। द्विचरम समय से चरम समय के संक्रमण में असंख्यात गुणकार सबसे बड़ा है। इसलिए द्विचरम समय से चरम समय में संक्रमण की उत्कृष्ट वृद्धि होती है।

२) गुणित कर्मांशिक का सत्त्वद्रव्य बहुत अधिक होता है इसलिए उसे वृद्धिका स्वामी कहा है।

उत्कृष्ट हानि →

उपशम श्रेणिपर अपूर्वकरण से लेकर अप्रशस्त बन्धरहित प्रकृतियोंका गुण-संक्रमण होता है वह जीव दसवें गुणस्थान के अंतिम समय में मरण कर देवगति को प्राप्त होता है तो वहाँ उन प्रकृतियों का विध्यातसंक्रमण प्रारंभ होता है इसलिए दसवें के अंतिम समय के संक्रमण द्रव्य से देवगति के प्रथम समय में संक्रमण द्रव्य की उत्कृष्ट हानि होती है।

पृ.463

जघन्यवृद्धि हानि का स्वामित्व

जहाँ संक्रमण द्रव्य में सब से कम वृद्धि होती है उसे जघन्यवृद्धि कहते हैं और सब से कम हानि होती है उसे जघन्य हानि कहते हैं जैसे पहले 100 का संक्रमण हुआ बाद में 110 का संक्रमण हुआ यहाँ केवल 10 परमाणु बढ़ गये। 110 का संक्रमण होकर 100 का संक्रमण हुआ यहाँ केवल 10 " घट गये। जघन्य वृद्धि और हानि के लिए सत्त्वद्रव्य कम होना चाहिए

कर्मप्रकृति	वृद्धि हानि	स्वामित्व
1) 5 ज्ञाना, 5 दर्शना, 5 अंतराय	जघन्य वृद्धि हानि, अवस्थान	जघन्य सत्त्व के साथ 4 बार उपशमश्रेणि चढ़कर एकेन्द्रियों में गया, जब बन्ध और निर्जरा समान है तब
2) सातावेदनीय	जघन्य वृद्धि	जघन्य सत्त्व, संयमासंयम संयम गुणश्रेणी निर्जरा, फिर एकेन्द्रियों में उत्पन्न – योगयवमध्य के नीचे के योगों से बन्धकर – बड़े असाताबन्धककाल – अंतिम साताबंधक काल में 1 समय कम आवली के शेष रहने पर निर्जरा से बन्ध कुछ अधिक होता है तत्पश्चात् जब असाता का बन्ध होता है उसके द्वितीय समय में
	जघन्य हानि	उसी दीर्घ असाताबंधक काल के अंतिम समय में
	" अवस्थान	नहीं है।
असातावेदनीय	वृद्धि हानि	सातावेदनीय के समान, विशेषता – 4 बार उपशामना करना चाहिये, और असाताबन्धक काल के स्थान पर साताबंधककाल लेना।
मिथ्यात्व	जघन्य वृद्धि हानि व अवस्थान	तत्प्रायोग्य जघन्य सत्त्वयुक्त जिस जीव के अवस्थान संक्रम होता है उसके
सम्यक्त्वप्रकृति सम्यग्मिथ्यात्व	जघन्य वृद्धि	जघन्य सत्त्वयुक्त सम्यक्त्व को प्राप्त कर दो 66 सागर तक रहकर च्युत हुआ सब से दीर्घ काल से उद्वेलना करता हुआ अंतिम काण्डक के प्रथम समय में
	जघन्य हानि	द्विचरम स्थितिकाण्डक के अन्तिम समय में
	अवस्थान	अवस्थान नहीं है।
अनन्तानुबंधी कषाय	जघन्य वृद्धि हानि, अवस्थान	अभव्ययोग्य जघन्य सत्त्व से आकर संयमासंयम व संयम गुणश्रेणी से कर्म निर्जरा कर कषायों का उपशमन कर एकेन्द्रियों गया उसके जघन्य योग में संक्रमण होता है उसके

दूसरे उपदेशसे	अनन्तानुबन्धी कषाय	जघन्य हानि	जघन्य सत्कर्म के साथ ४ बार कषायों का उपशम कर पुनः संयोजन कर दो ६६ सागर तक सम्यक्त्व अनन्तानुबंधी की विसंयोजना में उद्यत अधःप्रवृत्त करण के अन्तिम समय में
		जघन्य वृद्धि	दो ६६ सागरोपम काल सम्यक्त्व का पालन कर मिथ्यात्व को प्राप्त होने पर प्रथम समय में
	१२ कषाय भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद हास्य, रति, शोक, अरति	जघन्य वृद्धि हानि, अवस्थान	जघन्य सत्कर्म करके एकेन्द्रिय को प्राप्त हुए जीव का जहां जघन्य सत्कर्म का अवस्थान होता है उसके साता असाता वेदनीय के समान
	स्त्रीवेद	जघन्य हानि	जघन्य सत्कर्म, चार बार उपशमश्रेणि, दो ६६ सागर तक सम्यक्त्व का पालन कर अनन्तर काल में मिथ्यात्व को प्राप्त होनेवाला है उसके
		जघन्य वृद्धि अवस्थान	मिथ्यात्व को प्राप्त होनेपर प्रथम समय में नहीं है।
	नपुंसकवेद, अप्र.विहायो. स्थावर चतुष्क, दुर्भगत्रय, नीच गोत्र	ज.वृद्धि हानि	स्त्रीवेद के समान, विशेष → तीन पल्योपम जीवों में रहकर दो ६६ सागर तक सम्यक्त्व का पालन कराना
	नरकगति	जघन्य हानि	एकेन्द्रिय योग्य कर्म के साथ अन्तर्मुहूर्त काल नरक-गति नामकर्म का संयोजन कर पश्चात् - 22 सा. तक नरक में अन्त में सम्यक्त्व - मनुष्य - नवमे ग्रैवेयक 31 सा. - प्रारंभ में मिथ्यात्वी - अन्त में सम्यक्त्व दो ६६ सागर तक - सौधर्मकल्प में मिथ्यात्व - एकेन्द्रिय में - सब से महान् काल द्वारा उद्वेलन द्विचरम कांडक के अंतिम समय में
		जघन्य वृद्धि	उसी के अनन्तर काल में (अंतिम कांडक के प्र.समय)
	मनुष्यगति, उच्चगोत्र	जघन्य वृद्धि हानि, अवस्थान	एकेन्द्रिय योग्य सत्कर्म के साथ वर्षपृथक्त्व में अनुत्तर विमानवासी देवों में उत्पन्न तत्प्रायोग्य जघन्य सत्कर्म का जहां अवस्थान होता है उसकी

तिर्यंचगति	जघन्य वृद्धि हानि,	नरकगति के समान. विशेष → प्रारंभ में ३ पल्योपम आयुवालों में - सम्यक्त्व - पल्योपमपृथक्त्व आयुवाले देवों में - मनुष्य - फिर ३१ सागरोपम में उत्पन्न कराना
देवगति	जघन्य वृद्धि हानि अवस्थान	एकेन्द्रिय योग्य सत्कर्म के साथ तीन पल्योपम आयुवालों में उत्पन्न हुआ तत्प्रायोग्य/जघन्य सत्कर्म के साथ अवस्थान होता है तब
ध्रुवबन्धी नामप्रकृति वैक्रियिकशरीर, प्रथम संस्थान व संहनन, परघात, उच्छ्वास, प्र. विहायो. त्रसचतुष्क, सुभगत्रय	जघन्य वृद्धि हानि, अवस्थान	तत्प्रायोग्य जहां जघन्य सत्कर्म होता है वहां पर उनकी जघन्य वृद्धि, हानि, अवस्थान होते हैं।

1) जहां उस कर्म का बंध नहीं होता है वहांपर उसका संचय नहीं होता और पहले बंधा हुआ संक्रमण के द्वारा कम होता जाता है वहांपर संक्रमण द्रव्य कम कम होता हुआ अन्तमें सब से जघन्य हानि होती है। इसलिए अनन्तानुबन्धी की जघन्य हानि के लिए ६६ सागरतक बंधाबिना घुमाया, नरकगति के लिए १८पू सागरतक बंधरहित घुमाया। इसीप्रकार अन्यत्र जानना।

2) उद्वेलना में द्विचरमकांडक तक उत्तरोत्तर हानि होती है अंतिम कांडक में संक्रमणकी वृद्धि होती है क्योंकि वहांपर गुणसंक्रमण है। इसलिए अंतिम कांडक के प्रथम समय में जघन्य वृद्धि बतायी।

classmate
Date
Page 11

अल्पबहुत्व

५ ज्ञाना. ४ दर्शना., ५ अंतराय	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	" वृद्धि	विशेष अधिक
	" हानि	असंख्यातगुणी
निद्रा, प्रचला, स्त्यानगृद्धित्रिक	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	" हानि	असंख्यातगुणी
	" वृद्धि	"
सातावेदनीय	उत्कृष्ट हानि	स्तोक
	" वृद्धि	विशेष अधिक
असातावेदनीय	उत्कृष्ट हानि	स्तोक
	" वृद्धि	असंख्यातगुणी
मिथ्यात्व	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	" हानि	असंख्यातगुणी
	वृद्धि	"
सम्यक्त्वप्रकृति	उत्कृष्ट वृद्धि	स्तोक
	" हानि	असंख्यातगुणी
सम्यग्मिथ्यात्व	उत्कृष्ट हानि	स्तोक
	" वृद्धि	असंख्यातगुणी
अनन्तानुबन्धी कषाय ८ कषाय	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	उत्कृष्ट हानि	असंख्यातगुणी
	" वृद्धि	"
तीन संज्वलन कषाय, पुरुषवेद	उत्कृष्ट वृद्धि	स्तोक
	" हानि	विशेष अधिक
	व अवस्थान	

संज्वलन लोभ	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	" हानि	असंख्यातगुणी
	" वृद्धि	विशेष अधिक
छह नोकषाय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद	उत्कृष्ट हानि	स्तोक
	वृद्धि	असंख्यातगुणी
	अवस्थान	नहीं है।
नरकगति नामकर्म, तिर्यंचगति	उत्कृष्ट हानि	स्तोक
	" वृद्धि	असंख्यातगुणी
मनुष्यगति नामकर्म, देवगति, जाति गत्यानुपूर्वी गत्यानुपूर्वी वैक्रियिकद्विक	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	" वृद्धि	असंख्यातगुणी
	" हानि	विशेष अधिक
औदारिक शरीर	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	" वृद्धि	असंख्यातगुणी
	हानि	विशेष अधिक
आहारकशरीर	उत्कृष्ट हानि	स्तोक
	वृद्धि	विशेष अधिक
तैजस व कार्मण शरीर, सब ध्रुवबन्धी	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
नामप्रकृति	" हानि	असंख्यातगुणी
	" वृद्धि	विशेष अधिक
वज्रर्षभनाराचसंहनन	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
	" वृद्धि	असंख्यातगुणी
	" हानि	विशेष अधिक
समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्र.विहा.	उत्कृष्ट अवस्थान	स्तोक
त्रसचतुष्क, सुभगत्रय	" हानि	असंख्यातगुणी
	" वृद्धि	विशेष अधिक

5 संस्थान, 5 संहनन, अस्थिर, अशुभ दुर्भगचतुष्क, अप्रशस्तविहायोगति	उत्कृष्ट हानि " वृद्धि अवस्थान	स्तोक असंख्यातगुणी नहीं है
अप्रशस्त ध्रुवबन्धी प्रकृति	उत्कृष्ट अवस्थान " हानि " वृद्धि	स्तोक असंख्यातगुणी "
नरकगति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी आतप, उद्योत	उत्कृष्ट हानि वृद्धि	स्तोक असंख्यातगुणी
नीचगोत्र उच्चगोत्र	उत्कृष्ट हानि " वृद्धि " हानि " वृद्धि	स्तोक असंख्यातगुणी स्तोक विशेष अधिक

जघन्य वृद्धि हानि अवस्थान का अल्पबहुत्व

5 ज्ञाना, 9 दर्शना, मिथ्यात्व, 16 कषाय, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, 5 अंतराय } जघन्य वृद्धि, हानि, अवस्थान तीनों तुल्य

सातावेदनीय, असातावेदनीय	जघन्य हानि " वृद्धि अवस्थान	स्तोक विशेष अधिक नहीं है
सम्यक्त्व प्रकृति, सम्यग्मिथ्यात्व	जघन्य हानि " वृद्धि	स्तोक असंख्यातगुणी
हास्य, रति, अरति, शोक	जघन्य हानि " वृद्धि	स्तोक विशेष अधिक
स्त्री, नपुंसकवेद	जघन्य हानि " वृद्धि	स्तोक असंख्यातगुणी

नरकगति नामकर्म, तिर्यंचगति	जघन्य हानि " वृद्धि	स्तोक असंख्यातगुणी	
मनुष्यगति, देवगति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस, कार्मण वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहा. त्रसचतुष्क सुभगत्रय, निर्माण	जघन्य वृद्धि हानि अवस्थान " "	समान है। "	
नीचगोत्र, उच्चगोत्र	जघन्य हानि " वृद्धि अवस्थान	स्तोक असंख्यात गुणी नहीं है।	

प्रदेशसंक्रम में वृद्धिसंक्रम

किन ज्ञाना, ५, दर्शना, ५ अंतराय संज्वलन लोभ	निद्रा, प्रचला, मिथ्यात्व ८ कषाय, भय जुगुप्सा	स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी, स्त्री नपुंसक	
1) असंख्यातभागवृद्धि 2) असंख्यातभागहानि 3) अवस्थान 4) अवक्तव्य इनका गुणसंक्रमण नहीं होता इसलिए गुणवृद्धि और गुणहानि नहीं हैं	1) असंख्यातभागवृद्धि 2) " " हानि 3) " गुणवृद्धि 4) " गुणहानि 5) अवस्थान 6) अवक्तव्य	1) असंख्यात भाग वृद्धि 2) असंख्यात भागहानि 3) संख्यात भागवृद्धि 4) संख्यात गुणवृद्धि 5) असंख्यातगुणवृद्धि 6) असंख्यातगुणहानि 7) अवक्तव्य 8) अवस्थान	अवस्थान नहीं है शेष है

साता	असाता हास्यादि ४	३ संज्वलन, पुरुष वेद	नरकगति	तिर्यग्गति, मनुष्य गति	देवगति
1) असं.भा.वृ. 2) असं.भा.हा 3 अवक्तव्य	1) असं. भा. वृ 2) असं. भा. हा. 3) असं. गुण. वृ. 4) असं. गुण. हा. 5) अवक्तव्य	1) असं. भा. वृद्धि 2 असं. भा. हानि 3) सं. भा. वृद्धि 4) सं. भाग. हानि 5) सं. गुण. वृद्धि 6 सं. गुण. हानि 7) असं. गुण वृद्धि 8) असं. गुण. हानि 9) अवक्तव्य 10) अवस्थान	1) असं. भा. वृद्धि 2) सं. गुण वृद्धि 3) असं गुण. वृद्धि 4) असं. भा. हानि 5) असं. गुण हानि 6) अवक्तव्य	1) असं. भागवृद्धि 2) संख्यात भा. वृद्धि 3) " गुणवृद्धि 4) असं. गुणवृद्धि 5) असं. भागहानि 6) असं. गुणहानि 7) अवक्तव्य	1) असं. भा. वृद्धि 2) सं. भा. वृद्धि 3) सं. गुणवृद्धि 4) असं. गुणवृद्धि 5) असं. भा. हानि 6) असंख्यातगुणहानि 7) अवस्थान 8) अवक्तव्य

1) जिन प्रकृतियों का गुणसंक्रमण पाया जाता है उनकी अंतर्मुहूर्त काल तक असंख्यातगुणवृद्धि होती है। उपशम श्रेणिपर मरण कर देवगति को प्राप्त होने पर प्रथम समय में असंख्यातगुणहानि पायी जाती है।

2)

पृ. ६८४

१३ लेश्यानुयोगद्वार

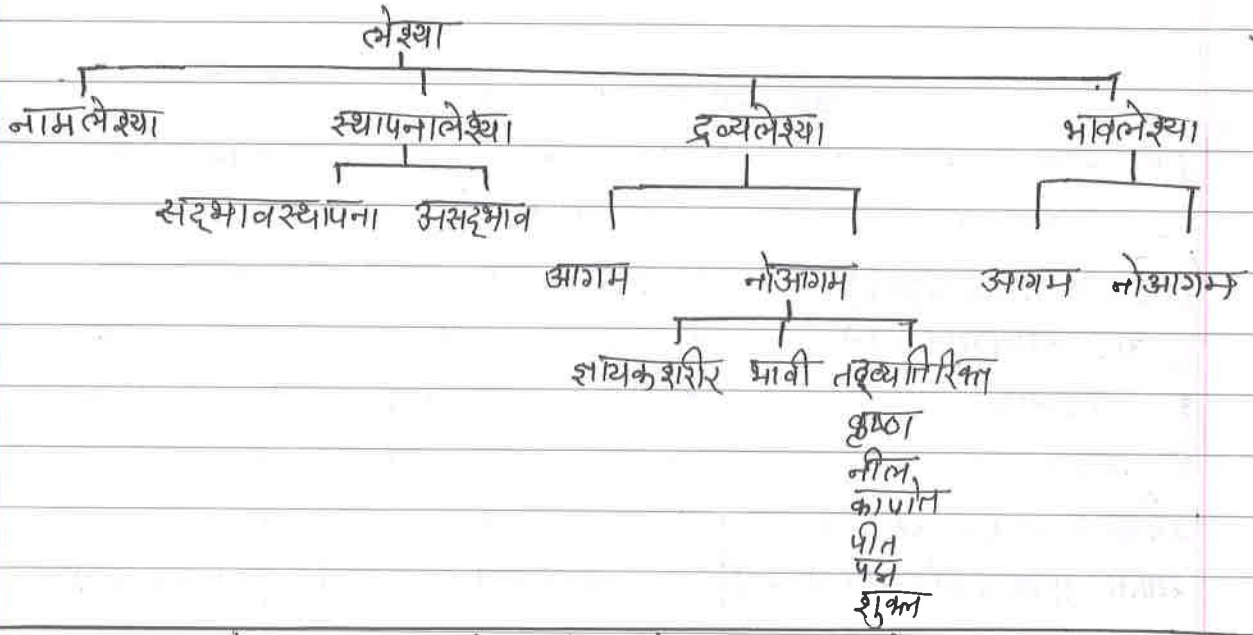

कृष्णलेश्या	नील	कापोत	पीत	पद्म	शुक्ल
भ्रमर, अंगार कज्जल	नीम, कदली दाव केपत्ते	क्षार, खर कबूतर	कुंकुम, जपाकुसुम	तउबडा पद्मपुष्प	हंस बलाका।

1) तद्व्यतिरिक्त द्रव्यलेश्या → चक्षु इंद्रिय के द्वारा ग्रहण करने योग्य पुद्गलस्कंधों के वर्ण को तद्व्यतिरिक्त द्रव्यलेश्या है।

2) नोआगमभावलेश्या → कर्मपुद्गलों के ग्रहण करनें में कारणभूत मिथ्यात्व, असंयम और कषाय से अनुरंजित योगप्रवृत्ति होती है उसे नोआगम भावलेश्या कहते हैं।

मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग से उत्पन्न हुए जीव के संस्कार को भावलेश्या कहते हैं।

कापोतलेश्या → तीव्रसंस्कार	तेजोलेश्या → मन्दसंस्कार
नीललेश्या → तीव्रतर "	पद्म " → मन्दतर "
कृष्ण " → तीव्रतम "	शुक्ल " → मन्दतम "

कापोत का	जघन्यस्थान	सब से मन्द
नीललेश्या	"	अनन्तगुणा
कृष्णलेश्या	"	"
तेजलेश्या	"	"
पद्मलेश्या	"	"
शुक्ललेश्या	"	"
कापोत	उत्कृष्टस्थान	"
नील	"	"
कृष्ण	"	"
तेज	"	"
पद्म	"	"
शुक्ल	"	"

शरीर का आश्रय करके छह लेश्याओं की प्ररूपणा

तिर्यंचयोनिवाले जीवों के शरीर	छहों लेश्यावाले
मनुष्य, मनुष्यनियों के "	" "
देवों के शरीर	तेज, पद्म, शुक्ल उत्तरशरीर की अपेक्षा → छहों लेश्याएं
देवियों के शरीर	तेजोलेश्या, उत्तरशरीर → छहों लेश्याएं
नारकियों के शरीर	कृष्णलेश्या
पृथिवीकायिकों के शरीर	छहों लेश्याओं में से कोई एक
अप्कायिक जीवों के "	शुक्ललेश्या युक्त
अग्निकायिक " "	तेजलेश्या "
वायुकायिक " "	कापोतलेश्यावाले,
वनस्पतिकायिक " "	छहों लेश्यावाले

सब सूक्ष्म जीवों के शरीर	कापोतलेश्यायुक्त
बादर अपर्याप्तों के शरीर	बादरपर्याप्त के समान
औदारिक "	छह लेश्यायुक्त
वैक्रियिक "	कृष्ण, तेज, पद्म, शुक्ललेश्यायुक्त
तैजस शरीर	तेजलेश्यायुक्त
कार्मण शरीर	शुक्लम "

शरीर सब वर्णवाले पुद्गलों से संयुक्त होते हैं परंतु जिस शरीर में जिस वर्ण की उत्कृष्टता है वह उसलेश्यायुक्त कहा जाता है।

चक्षु से ग्रहण किये जानेवाले लेश्यायुक्त द्रव्य के गुणों का अल्पबहुत्व →

कृष्णलेश्यायुक्त द्रव्यके शुक्लगुण	सबसे स्तोक	नीललेश्यायुक्त द्रव्यके शुक्लगुण	स्तोक
हारिद्र (पीला) गुण	अनन्तगुणे	हारिद्र गुण	अनन्तगुणे
लोहित (लाल) गुण	"	लोहित गुण	"
नील गुण	"	श्याम गुण	"
श्याम गुण	"	नील गुण	"

कापोतलेश्या के विषय में तीन विकल्प →

प्रथम विकल्प		द्वितीय विकल्प		तृतीय विकल्प	
शुक्लगुण	स्तोक	शुक्लगुण	स्तोक	श्यामगुण	स्तोक
हारिद्रगुण	अनन्तगुणे	श्यामगुण	अनन्तगुणे	शुक्लगुण	अनन्तगुणे
श्यामगुण	"	हारिद्रगुण	"	नीलगुण	"
लोहितगुण	"	नीलगुण	"	हारिद्र "	"
नीलगुण	"	लोहितगुण	"	लोहित "	"

पद्मलेश्यावाले के विषय में तीन विकल्प →

प्रथमविकल्प		द्वितीय विकल्प		तृतीय विकल्प	
1) श्यामगुण	स्तोक	श्यामगुण	स्तोक	श्यामगुण	स्तोक
नीलगुण	अनन्तगुणे	नीलगुण	अनन्तगुणे	नीलगुण	अनन्तगुणे
शुक्लगुण	"	लोहितगुण	"	लोहितगुण	"
लोहितगुण	"	शुक्लगुण	"	हारिद्रगुण	"
हारिद्रगुण	"	हारिद्रगुण	"	शुक्लगुण	"

तेजलेश्यावालों में श्यामगुण	स्तोक
नीलगुण	अननगुणे
शुक्लगुण	»
हारिद्रगुण	»
लोहितगुण	»

शुक्ललेश्या के विषय में श्यामगुण	स्तोक
नीलगुण	अननगुणे
लोहितगुण	»
हारिद्रगुण	»
शुक्लगुण	»

पृ. ४९०

१४ लेश्याकर्म अनुयोगद्वार

लेश्याओं का कर्म जो मारण, विदारण और चोरी आदि क्रियाविशेष रूप है वह लेश्या-कर्म कहलाता है।

कृष्णलेश्याकर्म	नीललेश्या	कापोतलेश्या
१) तीव्रक्रोधी	१) विवेकरहित	१) रुष्ट होना
२) झगडालु	२) मन्द	२) दूसरों की निन्दा करना
३) वैरपरम्परा से संयुक्त	३) बुद्धिविहीन	३) बहुत प्रकार से दोष लगाना
४) चोर	४) अभिमानी	४) शोक व भय से संयुक्त
५) असत्यभाषी	५) मायाचारी	५) दूसरों से ईर्षा करना, तिरस्कार करना
६) परस्त्री अभिलाषी	६) आलसी, निद्रालु	६) अपनी प्रशंसा करना
७) मधु, मांस, मद्य में आसक्त	७) अभेद्य	७) युद्ध में मरण की प्रार्थना
८) जिनवचन श्रवण न करनेवाला	८) विषयलोलुप	८) दूसरों पर विश्वास न करना
९) दुसरों के वश न होनेवाला	९) अधिक आरंभ करनेवाला	९) कर्तव्य अकर्तव्य के विवेक से रहित

तेजलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्ललेश्या
१) अहिंसक	१) त्यागी	१) पक्षपात न करना
२) कर्तव्य अकर्तव्य का जानकार	२) भद्र	२) निदान न करना
३) सेव्य असेव्य का जानकार	३) पवित्र	३) सर्वजीव समभाव
४) मधु मांस मद्य के सेवन से रहित	४) निष्कपट	४) रागद्वेष स्नेह से रहित
५) समस्त जीवों में समबुद्धि	५) भारी अपराध को क्षमा	
६) दयादान में लीन	६) साधुपूजा में तत्पर	
७) सत्यबुद्धी		
८) चोरी व परदारा का त्यागी		

पृ.४५३ १५ लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वार

कौन लेश्यायें किस स्वरूप से और किस वृद्धि अथवा हानि के द्वारा परिणमन करती है इस बातके ज्ञापनार्थ 'लेश्यापरिणाम' अनुयोगद्वार आया है।

संक्लेश से संक्रमण		विशुद्धि से संक्रमण
स्वस्थान षड्स्थानवृद्धिरूप परस्थान संक्रमण नहीं	← कृष्णलेश्या →	स्वस्थान षड्स्थानहानिरूप परस्थान अनन्त गुणहानिरूप नीललेश्यामें
स्वस्थान षड्स्थानवृद्धिरूप परस्थान अनन्तगुणवृद्धि कृष्णलेश्यामें	← नीललेश्या →	स्वस्थान - षड्स्थानहानिरूप परस्थान अनन्तगुणहानि कापोतलेश्या में
स्वस्थान षड्स्थानवृद्धिरूप परस्थान अनन्तगुणवृद्धिरूप नीललेश्या में	← कापोतलेश्या →	स्वस्थान - षड्स्थानहानिरूप परस्थान अनन्तगुणहानि तेजलेश्या में
स्वस्थान षड्स्थानवृद्धिरूप परस्थान अनन्तगुणवृद्धिरूप कापोतलेश्यामें	← तेजलेश्या →	स्वस्थान षड्स्थानहानिरूप परस्थान अनन्तगुणहानि पद्मलेश्या में
स्वस्थान षड्स्थानवृद्धिरूप परस्थान अनन्तगुणवृद्धिरूप तेजलेश्यामें	पद्मलेश्या →	स्वस्थान षड्स्थानहानिरूप परस्थान अनन्तगुणहानि शुक्ललेश्या में
स्वस्थान षड्स्थानवृद्धिरूप परस्थान अनन्तगुणवृद्धिरूप पद्मलेश्यामें	← शुक्ललेश्या →	स्वस्थान षड्स्थानहानिरूप परस्थान संक्रमण नहीं

पृ.४५५ जघन्य उत्कृष्ट संक्रम और प्रतिग्रह का अल्पबहुत्व
कृष्ण व नील लेश्याओं के आश्रयसे

स्थान का नाम	अल्पबहुत्व
१) नीललेश्या का जघन्य स्थान	सब से स्तोक
२) नीललेश्या का जघन्य प्रतिग्रहस्थान	अनन्तगुणा
३) कृष्ण का जघन्य संक्रमस्थान व जघन्यलेश्यास्थान	"
४) नील का जघन्य संक्रमस्थान	"
५) कृष्ण का जघन्य प्रतिग्रहस्थान	"
६) नील का उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान	"
७) कृष्ण का उत्कृष्ट संक्रमस्थान	"

८) नील का उत्कृष्ट संक्रमस्थान, उत्कृष्ट नीलस्थान	अनन्तगुणा
९) कृष्णा का उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान	अनन्तगुणा
१०) कृष्णा का " लेश्यास्थान	"

संक्रमस्थान → किसी विवक्षित लेश्या से अन्य लेश्या में संक्रमण जिस स्थान से होता है उसे संक्रमस्थान कहते हैं। दूसरे को देना संक्रमण।
प्रतिग्रहस्थान → अन्य लेश्याको विवक्षित लेश्या में जिस स्थान पर ग्रहण हो जाता है उसे प्रतिग्रह स्थान कहते हैं। जैसे कृष्णा लेश्या का जघन्य स्थान से संक्रमण होकर नीललेश्या के जिस स्थान में परिवर्तित होती है वह नीललेश्या का ~~संक्रम~~ प्रतिग्रह स्थान है। दूसरे का ग्रहण करना प्रतिग्रह।

यहाँ नील व कापोत लेश्याओं के संक्रम और प्रतिग्रह का अल्पबहुत्व कृष्णा और नील लेश्याओं के सम्बन्ध में भी कथन करना चाहिये।

कापोत और तेज लेश्याओं के आश्रय से अल्पबहुत्व	
१) कापोतलेश्या का जघन्य संक्रमस्थान और जघन्यस्थान दोनों तुल्य	स्तोक
२) तेजलेश्या का जघन्य स्थान व जघन्य संक्रमस्थान " "	अनन्तगुणे
३) कापोत का जघन्य प्रतिग्रहस्थान	अनन्तगुणा
४) तेज का जघन्य "	"
५) कापोत का उत्कृष्ट संक्रमस्थान	"
६ तेज का उत्कृष्ट "	"
७ कापोत का उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान	"
८ तेज का " "	"
९ कापोत का " लेश्यास्थान	"
१० तेज का " "	"

तेज और पद्मलेश्याओं के आश्रय से अल्पबहुत्व

१) तेज का जघन्य स्थान	सब से स्तोक
" " प्रतिग्रहस्थान	अनन्तगुणा
पद्म का जघन्य स्थान और जघन्य संक्रमस्थान तुल्य	अनन्तगुणे

तेज का जघन्य संक्रमस्थान	अनन्तगुणा
पद्म का जघन्य प्रतिग्रहस्थान	"
तेज का उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान	"
पद्म का उत्कृष्ट संक्रमस्थान	"
तेज का उत्कृष्ट संक्रमस्थान व उत्कृष्ट लेश्यास्थान	"
पद्म का उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान	"
पद्म का उत्कृष्ट स्थान	"

पद्म और शुक्ल लेश्याओं के आश्रय से अल्पबहुत्व

१) पद्म का जघन्य लेश्यास्थान	स्तोक
२) पद्म का " प्रतिग्रह स्थान	अनन्तगुणा
३) शुक्ल का जघन्य संक्रम और जघन्य लेश्यास्थान	"
४) पद्म का जघन्य संक्रमस्थान	"
५) शुक्ल का जघन्य प्रतिग्रहस्थान	"
६) पद्म का उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान	"
७) शुक्ल का उत्कृष्ट संक्रमस्थान	"
८) पद्म का उत्कृष्टस्थान और संक्रमस्थान	"
९) शुक्ल का उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान	"
१०) शुक्ल का " लेश्यास्थान	"

इस प्रकार तीन, चार, पांच और छह संयोग के भी अल्पबहुत्व का कथन जानकर कहना चाहिए।

१६ सातासातानुयोगद्वार

1) एकान्तसात → सातास्वरूपसे बांधा गया जो कर्म संक्षेप व प्रतिक्षेप से रहित होकर सातास्वरूपसे वेदा जाता है उसका नाम एकान्तसात है।

२) अनेकान्तसात → सातास्वरूप से बांधा गया जो कर्म असातारूप से संक्रमित होकर पुनः सातास्वरूप होकर वेदा जाता है वह और जो असातास्वरूप से बांधा गया कर्म संक्रमित होकर सातास्वरूप से वेदा जाता है वह अनेकान्त सात है

3) एकान्त असात → जो कर्म असातारूप से बांधा जाकर संक्षेप व प्रतिक्षेप से रहित होकर असातास्वरूप से वेदा जाता है उसका नाम एकान्त असात है।

४) अनेकान्त असात → जो कर्म असातास्वरूप से बांधा जाकर सातास्वरूप से संक्रमित होकर पुनः असातारूप से प्रतिसंक्रमित होकर वेदा जाता है वह और जो कर्म सातारूप से बांधा जाकर असातारूप से संक्रमित होकर वेदा जाता है वह अनेकान्त असात है।

स्वामित्व (अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य के आश्रयसे)

उत्कृष्ट एकान्त सात	सातवी पृथिवी का नारकी गु.क. सर्वलघु काल में नववें ग्रैवेयक मे उत्पन्न होगा उसके नरकभव के अन्तिम समय मे
उत्कृष्ट अनेकान्त सात	सातवी पृथिवी का नारकी गु.क. पल्योपम के असंख्यातवें भाग मात्र शेष आयु के रहनेपर (शेष सब जीवन पर्यंत साता से रहित होगा)
उत्कृष्ट एकान्त असात	जिस प्रकार के नारकी के उत्कृष्ट अनेकान्त सात किया गया है उस प्रकार के ही नारकी के
उत्कृष्ट अनेकान्त असात	देवलोक में उत्पन्न होनेवाले उसी अन्तिम समयवर्ती नारकी के
जघन्य एकान्त सात	प्रथम समयवर्ती नारकी सर्वजघन्य योगसे साताको बांधता है, अधःप्रवृत्तसंक्रमसे असंक्रम के उत्कृष्ट अवहारकाल उससे एक समय कम साता रहित होगा उसके
जघन्य अनेकान्त सात	जघन्य सूक्ष्म सत्कर्म के साथ त्रसों मे उत्पन्न हुआ चिरकालतक असाता को बांधता है उस अन्तिम समयवर्ती असातबन्धक के
जघन्य एकान्त असात	उपर्युक्त जीव, विशेष → उत्कृष्ट सातबंधककालतक उत्कृष्ट बन्ध करके अन्तिम समयवर्ती सातबन्धक हुआ है उसके
जघन्य अनेकान्त असात	सूक्ष्म योग्य जघन्य असातकर्म के साथ आकर त्रसों में उत्पन्न होकर उत्कृष्ट सातबन्धक कालतक बन्ध करके अन्तिम समयवर्ती सातबन्धक

भव्यसिद्धिकप्रायोग्य के आश्रय से ~~अल्पबहुत्व~~

	स्वामित्व
उत्कृष्ट एकान्त सात	सातवी पृथिवी से सर्वलघु काल में मनुष्य होकर सर्वलघु काल में अंतिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक होता हुआ सातवेदक होगा उस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक के होता है।
उत्कृष्ट एकान्त असात	चरमशरीरी अन्तिम समयवर्ती असातबन्धक होनेपर (वह भी अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक स्थान में असातवेदक होता है)
उत्कृष्ट अनेकान्त सात	वह सातवेदक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक के होता है।
उत्कृष्ट अनेकान्त असात	गुणितकर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक असातवेदक के होता है।
जघन्य स्वामित्व	अभव्यसिद्धिक के समान

अभव्यसिद्धिक का उत्कृष्ट एकान्त सात } समयप्रबद्ध का असंख्यात पल्योपम वर्गमूल प्रमाण
" एकान्त असात }
भव्यसिद्धिक का उत्कृष्ट एकान्त सात } अन्तर्मुहूर्त समयप्रबद्ध मात्र
" एकान्त असात }

अभव्यप्रायोग्य के आश्रय से अल्पबहुत्व

उत्कृष्ट एकान्त सात	सब से स्तोक
" एकान्त असात	असंख्यातगुणा
" अनेकान्त सात	"
" " असात	"

जघन्य एकान्त सात	सब से स्तोक
" एकान्त असात	असंख्यातगुणा
" अनेकान्त सात	"
" " असात	संख्यातगुणा

भव्यसिद्धिकप्रायोग्य के आश्रय से अल्पबहुत्व

उत्कृष्ट एकान्त सात	सब से स्तोक
" एकान्त असात	संख्यातगुणा
" अनेकान्त असात	असंख्यातगुणा
" अनेकान्त सात	विशेष अधिक

नरकगति में उत्कृष्ट एकान्त सात	सब से स्तोक
" एकान्त असात	संख्यातगुणा
" अनेकान्त सात	असंख्यातगुणा
" अनेकान्त असात	"

मनुष्यगति को छोड़कर सब गतियों मे, एकेन्द्रियों में नरकगति के समान
मनुष्य, मनुष्यनियों में ओघ के समान है।

पृ.५०३ संक्षिप्त → साता का बांधा हुआ द्रव्य असातारूपसे संक्रमित होना। असाता रूप से बांधे हुए द्रव्य का सातारूप संक्रमित होना।
प्रतिसांक्षिप्त → असातारूप से संक्रमित हुआ द्रव्य पुनः सातारूपसे " " "
जब असाता का बंध होता है तब साता का कुछ द्रव्य अधःप्रवृत्त संक्रमण के द्वारा असातारूप से संक्रमित होता है और जब साता का बंध होता है उस समय असाता का द्रव्य सातारूपसे संक्रमित होता है।
जब संक्रमित प्रतिसंक्रमित न होते हुए भी साता का द्रव्य असातारूप से वेदा जाता है ऐसा कहा है तब स्तिबुक संक्रमण के द्वारा समझना। स्तिबुक संक्रमण को संक्रमणकरण में नहीं गिनाया है। जब साता का उदय रहता है तब असाता का उस स्थिति का द्रव्य सातारूप होकर उदय में आता है उसे स्तिबुक संक्रमण कहते है।

आठ पदो का अल्पबहुत्व

1) सातस्वरूप से बंधद्रव्य असंक्षिप्त अप्रतिसंक्षिप्त होकर सातारूपसे वेदा गया द्रव्य	स्तोक
2) " " " " " असातारूपसे " " द्रव्य	विशेष अधिक
3) असातारूप से बांधा गया " " " सातारूपसे " " द्रव्य	संख्यातगुणा
4) " " " " " " असातारूप से " " द्रव्य	विशेष अधिक
5) सातारूप से बांधा जाकर संक्षिप्त प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातरूपसे " " द्रव्य	असंख्यातगुणा
6) " " " " " " " असातारूपसे " " द्रव्य	विशेष अधिक
7) असातरूप से " " " " " " सातरूप से " " द्रव्य	संख्यातगुणा
8) असातरूप से " " " " " " असातस्वरूप वेदा गया द्रव्य	विशेष अधिक

विपच्चित → नरकगति में उत्पन्न हुआ जो नरकगति में ही विपाक को प्राप्त होता है उसका नाम विपच्चित है।
विपाक रहित सब गतियों और एकेन्द्रियो में प्रकृत अल्पबहुत्व की प्ररूपणा ओघ के समान है।

विपाच्चित का अल्पबहुत्व

नरकगति में अल्पबहुत्व →

1) सातस्वरूप से बांधा जाकर असंक्षिप्त अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातारूप से वेदा गया द्रव्य	स्तोक
2) असातरूप से " " " " " " सातारूप से " " "	संख्यातगुणा
3) सातारूप से " " " " " " असातारूप से " " "	असंख्यातगुणा
4) असातारूप से " " " " " " असातारूप से " " "	संख्यातगुणा
5) सातारूप से " " संक्षिप्त प्रतिसंक्षिप्त " " सातारूप से " " "	"
6) असातारूप से " " " " " " सातारूप से " " "	असंख्यातगुणा
7) असातारूप से " " " " " " असातरूप से " " "	संख्यातगुणा
8) सातारूप से " " " " " " असातारूप से " "	असंख्यातगुणा

मनुष्यगति में असातवेदककाल स्तोक
सातबंधक काल संख्यातगुणा
असाताबंधक काल "
सातवेदक काल "

इसी प्रकार नरकगति को छोड़कर शेष सब त्रसों में समझना।

एकेन्द्रियों में सातबन्धककाल और सातवेदक काल दोनों समान स्तोक
असातवेदककाल और असातबन्धक काल दोनों समान असंख्यातगुणे

मनुष्यगति में विपाच्चित का अल्पबहुत्व	
1) सातारूप से बांधा जाकर असंक्षिप्त अप्रतिसंक्षिप्त होकर असातारूप से वेदा गया द्रव्य	स्तोक
2) असातारूप " " " " असातारूप से " " "	संख्यातगुणा
3) सातारूप से " " " " सातारूप से " " "	"
4) असातारूप " " " " सातारूप से " " "	"
5) सातारूप से " " संक्षिप्त प्रतिसंक्षिप्त होकर असातारूप से वेदा गया द्रव्य	असंख्यातगुणा
6) असातारूप से " " " " " असातारूप से " " "	संख्यातगुणा
7) सातारूप से " " " " " सातारूप से " " "	"
8) असातारूप से " " " " " सातारूप से " " "	"

इसीप्रकार मनुष्यनियों, पंचेन्द्रिय, तिर्यंचों, तिर्यंचनियों, देव देवियों में भी अल्पबहुत्व जानना चाहिये।

एकेन्द्रियों में विपच्चित का अल्पबहुत्व

1)	सातास्वरूप से बांधा जाकर असंक्षिप्त अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातास्वरूप से वेदा गया द्रव्य	स्तोक
2)	" " " " " " " असातारूप " " "	संख्यातगुणा
3)	असातारूप से " " " " " " सातारूप से " " "	उतना ही
4)	असातारूप से " " " " " " असातारूप " " "	संख्यातगुणा
5)	सातारूप से " " संक्षिप्त प्रतिसंक्षिप्त " " सातारूप से " " "	असंख्यातगुणा
6)	" " " " " " " असातारूप से " " "	संख्यातगुणा
7)	असातारूप से " " " " " " सातारूप से " " "	उतना ही
8)	असातारूप से " " " " " " असातारूप से " " "	संख्यातगुणा

द्वीन्द्रियों में विपच्चितस्वरूप से अल्पबहुत्व

1)	सातारूप से बांधा जाकर संक्षिप्त प्रतिसंक्षिप्त हुआ असातारूप से वेदा गया द्रव्य	स्तोक
2)	असातारूप से " " " " " असातारूप से " " "	संख्यातगुणा
3)	सातारूप से " " " " सातारूप से " " "	"
4)	असातारूप से " " " " " सातारूप से " " "	"
5)	सातारूप से " " असंक्षिप्त अप्रतिसंक्षिप्त " असातारूप से " " "	असंख्यातगुणा
6)	असातारूप से " " " " " " " "	"
7)	सातारूप से " " " " सातारूप से " " "	"
8)	असातारूप से " " " " सातारूप से " " "	"

द्वीन्द्रिय पर्याय का काल अल्प होने से यहींपर बांधा हुआ संक्रमण होकर यहींपर उदय होनेवाला द्रव्य कम पाया जाता है।

इसीप्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रियों में अल्पबहुत्व जानना।

पृ. ५०७ — १७ दीर्घह्रस्व अनुयोगद्वार

सब से उत्कृष्ट को दीर्घ कहते हैं। सब से जघन्य को ह्रस्व कहते हैं।
दीर्घ और ह्रस्व ४ प्रकारका है।
1) प्रकृति 2) स्थिति 3) अनुभाग 4) प्रदेश।
प्रत्येक के मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृति की अपेक्षा दो-दो भेद हैं।
मूलप्रकृति दीर्घ दो प्रकार – 1) प्रकृतिस्थानदीर्घ – 2) एक-एकप्रकृति स्थान दीर्घ

	प्रकृतिदीर्घ	नोप्रकृतिदीर्घ	प्रकृतिह्रस्व	नोप्रकृतिह्रस्व
बन्ध अपेक्षा –	८ प्रकृतिक	७, ६, १	१	६, ७, ८
उदय "	८ प्रकृतिक	७, ४	४	७, ८
सत्त्व अपेक्षा	८ प्रकृतिक	७, ४	४	७, ८

दर्शनावरण	९ प्रकृतिक प्रकृतिदीर्घ	स्थितिदीर्घ	अनुभागदीर्घ	प्रदेशदीर्घ
1) ज्ञानावरण	×	३० को.को.सा.	उत्कृष्ट अनुभाग स्थान	अपमेयोग्य उत्कृष्ट प्रदेश
2) दर्शनावरण	९ प्रकृतिक	३० को.को.सा.	"	"
3) वेदनीय	2 प्रकृतिक सत्त्व अपेक्षा	"	"	"
4) मोहनीय	२८ सत्त्व 22 बन्ध १० उदय	७० को.को.सा	"	"
5) आयु	2 सत्त्व	३३ सागरोपम	"	"
6) नामकर्म	९३ सत्त्व 3१ बन्ध 3१ उदय	२० को.को.सा	"	"
7) गोत्र	2 सत्त्व	२० को.को.सा	"	"
8) अन्तराय	×	३० को.को.सा	"	"

	प्रकृतिह्रस्व	स्थितिह्रस्व	अनुभागह्रस्व जघन्य अनुभाग	प्रदेशह्रस्व जघन्य प्रदेशबन्ध
दर्शनावरण	४ प्रकृतिक	अन्तर्मुहूर्त		
मोहनीय	१ "	"	"	"
आयु	१ सत्त्वअपेक्षा	"	"	"
नामकर्म	१ प्रकृतिकबन्ध	आठ मुहूर्त	"	"
गोत्र	×	"	"	"
ज्ञाना, अंतराय	×	अन्तर्मुहूर्त	"	"
वेदनीय	×	१2 मुहूर्त	"	"

सत्व की अपेक्षा स्थितिह्रस्व का कथन प्रकृतियों के नाम	स्थितिह्रस्व १ स्थिति
१) ५ ज्ञाना, ९ दर्शना, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व १२ कषाय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, ४ आयु, २ गोत्र ५ अंतराय	
२) संज्वलन क्रोध	२ मास - अन्तर्मुहूर्त
३) संज्वलन मान	१ मास - "
४) संज्वलन माया	१५ दिन - "
५) पुरुषवेद	८ वर्ष-कुछ कम
६) ६ नोकषाय	संख्यात वर्ष

पृ.५१२

१८ भवधारणीयानुयोगद्वार

भव ३ प्रकारका

१) ओघभव → आठ कर्म अथवा आठ कर्मजनित जीव का परिणाम
२) आदेशभव → चार गतिनामकर्म अथवा उनसे उत्पन्न जीवपरिणाम
३) भवग्रहणभव → पूर्व शरीर के परित्यागपूर्वक उत्तर शरीर के ग्रहण करने को

इसभवसम्बन्धी आयुकर्म के द्वारा भव धारण किया जाता है।
जिसप्रकार बत्तीसे उत्पन्न प्रदीप तेल के द्वारा धारण किया जाता है।

१९ पुद्गलात्तानुयोग द्वार

आत्त शब्द का अर्थ गृहीत है। ग्रहण किये गये पुद्गलों को पुद्गलात्त कहते हैं।
पुद्गल ६ प्रकार से आत्मसात् किये जाते हैं -

१) ग्रहण से → दण्ड आदि पुद्गल हाथ अथवा पैर से ग्रहण किये गये पुद्गलत्व
२) परिणाम से - मिथ्यात्वादि परिणामों के द्वारा ग्रहण किये गये पुद्गल
३) उपभोग से — गन्ध तांबूल आदि पुद्गल उपभोग स्वरूप से अपने किये गये पुद्गल
४) आहार से → भोजन पान आदि विधान से अपने किये गये पुद्गल
५) ममत्व से → अनुराग से गृहीत पुद्गल
६) परिग्रह से → आत्माधीन पुद्गल (घर, खेत आदि)

५.

२० निधत्त-अनिधत्त अनुयोगद्वार

निधत्त → जो प्रदेशाग्र उदय में देने के लिए, अन्य प्रकृति में संक्रमण करने के लिए अशक्य है किन्तु अपकर्षण व उत्कर्षण करने के लिए शक्य है उनकी निधत्त संज्ञा है। शेष की अनिधत्त संज्ञा है।

	अनिधत्त	निधत्त
1) अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में प्रविष्ट जीव के	सब कर्म	×
2) अनन्तानुबन्धी विसंयोजना करनेवाले के अनिवृत्तिकरण में	अनन्तानुबन्धिचतुष्क	शेष सर्व
3) दर्शनमोह उपशामक के अनिवृत्तिकरण में	दर्शनमोहनीय	,,
,, क्षपक ,,	,,	,,

21 निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वार

निकाचित → जो प्रदेशाग्र अपकर्षण, उत्कर्षण, संक्रमण और उदीरणा करने के लिये शक्य नहीं है उस प्रदेशाग्र को निकाचित कहते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में प्रविष्ट हुए जीव के सब कर्म अनिकाचित हैं।

किसी भी कर्मप्रदेश की उपशान्त, निधत्त और निकाचित में से कोई एक अवस्था होती है अर्थात जो उपशान्त हैं वे निधत्त निकाचित नहीं है। जो निधत्त हैं वे उपशान्त व निकाचित नहीं है। जो निकाचित है वे उपशान्त व निधत्त नहीं हैं।

अल्पबहुत्व

अधः प्रवृत्त संक्रम	स्तोक
उपशान्त प्रदेशाग्र	असंख्यातगुणा
निधत्त ,,	,,
निकाचित ,,	,,

22 कर्मस्थिति अनुयोगद्वार

नागहस्ती → जघन्य और उत्कृष्ट स्थितियों के प्रमाण की प्ररूपणा कर्मस्थितिप्ररूपणा है।

आर्यमंक्षु → कर्मस्थितिसंचित सत्कर्म की प्ररूपणा का नाम कर्मस्थितिप्ररूपणा है।

२३ पश्चिमस्कन्धानुयोगद्वार

आन्तिम भवग्रहण में सिद्धि को प्राप्त होनेवाले जीव की प्ररूपणा

आयु के अन्तर्मुहूर्त शेष रह जानेपर होनेवाले कार्यविशेष

1) आवर्जितकरण → केवलिसमुद्घात के लिए उद्यत होना। अंतर्मुहूर्त काल है।

2) केवलिसमुद्घात

			अप्रशस्त कर्मों के
1) दण्डसमुद्घात →	असंख्यात बहुभाग। स्थितिघात		अनन्त बहुभाग अनुभागघात
2) कपाट समुद्घात →	शेषस्थिति के "	" "	" " "
3) मंथसमुद्घात (प्रतर) →	"	" " "	" " "
4) लोकपूरण समुद्घात →	अंतर्मुहूर्त। स्थिति शेष रखकर शेष "		" " "

अंतर्मुहूर्त जाकर

3) वचनयोग निरोध → वचनयोग की शक्ति को नष्ट करता है। प्रथम बादर योग को नष्ट करता है।

4) मनोयोग निरोध मनो " " " " ।

5) उच्छ्वासनिश्वास निरोध उच्छ्वासनिश्वास " " " ।

6) काययोग निरोध

1) अपूर्वस्पर्धककरण जगश्रेणी÷असंख्यात अपूर्व स्पर्धकों की रचना कर योगशक्ति कम करता

2) कृष्टिकरण पूर्व अपूर्व स्पर्धकों को भी नष्ट करता है।

3) कृष्टिवेदन कृष्टिगत योग होता है

7) सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यान

8) योगनिरोध होनेपर कर्मों को आयु के समान करता है

9) शैलेश्यभाव को प्राप्त → समुच्छिन्नक्रियानिवृत्ति ध्यान

10) सब कर्मों से मुक्त होकर एक समय में सिद्धि को प्राप्त होता है।

पृ. 522

२४ अप्पाबहुअणुयोगद्वारं

सत्कर्म की मार्गणा →

सत्कर्म चार प्रकार का → 1) प्रकृतिसत्कर्म 2) स्थितिसत्कर्म 3) अनुभागसत्कर्म 4) प्रदेशसत्कर्म

उत्तरप्रकृति सत्कर्म स्वामित्व

प्रकृतिनाम	
1) 5 ज्ञाना. 4 दर्शनावरण, 5 अंतराय	सब छद्मस्थ जीव (1 से 12 गुणस्थानवर्ती)
2) निद्रा, प्रचला	द्विचरम छद्मस्थ तक (चरमसमय में सत्त्व नहीं)
3) स्त्यानगृद्धि त्रिक	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान 16 प्रकृति क्षपक तक सब जीव
4) साता, असाता वेदनीय	सब संसारी जीव (अन्तिम समय में एक का सत्त्व)
5) दर्शनमोहनीय,	क्षायिक सम्यग्दृष्टि को छोड़कर शेष छद्मस्थ
6) शेष 11 कषाय, 9 नोकषाय	अनिवृत्तिकरण क्षपक तक सब छद्मस्थ, उपशामक सब
7) संज्वलन लोभ	सूक्ष्मसांपराय क्षपक तक सब छद्मस्थ "
8) 4 अनंतानुबंधी कषाय	क्षायिक सम्यग्दृष्टि, विसंयोजक के बिना शेष छद्मस्थ
9) नारकायु	नारकी, मनुष्य और तिर्यंच
10) मनुष्यायु, तिर्यगायु	देव, नारकी, तिर्यंच, मनुष्य
11) देवायु	देव, मनुष्य, तिर्यंच
12) नरकद्विक, तिर्यंचद्विक, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण	16 प्रकृति संक्रामक तक कोई जीव (अनिवृत्तिकरण क्षपक तक)
13) देवगतिद्विक, वैक्रियिकचतुष्क आहारकचतुष्क	सत्कर्म की उद्वेलना करनेवाले द्विचरम समयवर्ती अयोगकेवली तक
14) मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति	उद्वेलना न करनेवाले अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक
15) मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी	" " द्विचरम " "
16) औदारिकचतुष्क, तैजसचतुष्क, कार्मणचतुष्क, 6 संस्थान, 6 संहनन, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, विहायोगतिद्विक, अपर्याप्त, प्रत्येक शरीर, स्थिरद्विक, शुभद्विक, दुर्भगचतुष्क, निर्माण, नीचगोत्र	द्विचरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक सब संसारी जीव
17) त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय यशकीर्ति, उच्चगोत्र	सब संसारी प्राणी
18 तीर्थंकर नामकर्म	अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक तीर्थंकर प्रकृति का बंधकरनेवाले सम्यग्दृष्टि और नरक में जाते समय मिथ्यात्व अवस्था में

परस्थान अल्पबहुत्व →

	प्रकृतियों का नाम	अल्पबहुत्व
1)	आहारक शरीर की सत्तावाले	सब से स्तोक
2)	सम्यक्त्व प्रकृति की "	असंख्यातगुणे
3)	सम्यग्मिथ्यात्व की "	विशेष अधिक
4)	मनुष्यायु की "	असंख्यातगुणे
5)	नारकायु की "	असंख्यातगुणे
6)	देवायु की "	"
7)	देवगति की "	असंख्यातगुणे
8)	नरकगति की "	विशेष अधिक
9)	वैक्रियिक शरीर की "	" "
10)	उच्चगोत्र की "	अनन्तगुणे
11)	मनुष्यगति की "	विशेष अधिक
12)	तिर्यंचायु की "	" "
13)	अनन्तानुबन्धिचतुष्क की "	" "
14)	मिथ्यात्व की "	" "
15)	आठ कषायों की "	" "
16)	तिर्यंचगति, स्त्यानगृद्धित्रिक की "	" "
17)	नपुंसकवेद की "	" "
18	स्त्रीवेद की "	" "
19	छह नोकषायों की "	" "
20	पुरुषवेद की "	" "
21	संज्वलन क्रोध की "	" "
22	संज्वलन मान की "	" "
23	संज्वलन माया की "	" "
24	संज्वलन लोभ की "	" "
25	निद्रा, प्रचला की "	" "
26	5 ज्ञाना, 4 दर्शना, 5 अंतराय की "	" "
27	औदा. तैजस, कार्मण, अयश, नीचगोत्र के सत्कर्मिक	" "
28	असातावेदनीय	" "
29	सातावेदनीय	" "
30	यशकीर्ति	" "

नरकगति में अल्पबहुत्व

1) मनुष्यायु के सत्कर्मिक	सब से स्तोक	संख्यात ही होते हैं।
2) आहारक शरीर के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे	
3) सम्यक्त्व प्रकृति के सत्कर्मिक	"	
4) सम्यग्मिथ्यात्व के सत्कर्मिक	विशेष अधिक	मोहनीय 27 की सत्तावाले अधिक
5) तिर्यगायु के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे	अनादि मिथ्यादृष्टि बद्धायुष्क अधिक
6) अनन्तानुबन्धिचतुष्टय के सत्कर्मिक	संख्यातगुणे	अबद्धायुष्क अधिक
7) मिथ्यात्व के सत्कर्मिक	विशेष अधिक	अनन्तानुबन्धी के विसंयोजक अधिक
8) शेष सब कर्मों के सत्कर्मिक तुल्य	विशेष अधिक	क्षायिक सम्यग्दृष्टि अधिक
तिर्यंचगति में		
1) आहारशरीर सत्कर्मिक	स्तोक	
2) सम्यक्त्व प्रकृति के सत्कर्मिक	असंख्यात गुणे	
3) सम्यग्मिथ्यात्व के "	विशेष अधिक	
4) मनुष्यायु के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे	
5) नारकायु "	"	
6) देवायु "	"	
7) देवगति के "	"	
8) नरकगति के "	विशेष अधिक	देवगति के उद्वेलक अधिक
9) वैक्रियिक शरीर के "	" "	नरकगति के उद्वेलक देवगति के अधिक
10) उच्चगोत्र के "	अनन्तगुणे	वैक्रियिक शरीर सत्वरहित एकेन्द्रिय अधिक
11) मनुष्यगति के "	विशेष अधिक	उच्चगोत्र के उद्वेलक अधिक
12) अनन्तानुबन्धिचतुष्टय के सत्कर्मिक	विशेष अधिक	मनुष्यगति के उद्वेलक अधिक
13) मिथ्यात्व के सत्कर्मिक	" "	विसंयोजक जीव "
14) शेष कर्मों के सत्कर्मिक तुल्य	" "	क्षायिक सम्यग्दृष्टि "
तिर्यंचयोनिमातियों में		
1) आहारकशरीर के सत्कर्मिक	सब से स्तोक	
2) सम्यक्त्वप्रकृति के "	असंख्यातगुणे	
3) सम्यग्मिथ्यात्व के "	विशेष अधिक	
4) मनुष्यायु के "	असंख्यातगुणे	

5) नारकायु के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे
6) देवायु के ,,	,,
7) अनन्तानुबन्धिचतुष्टय के सत्कर्मिक	संख्यातगुणे
8) शेष कर्मों के सत्कर्मिक तुल्य	विशेष अधिक अनन्तानुबन्धि के विसंयोजक अधिक

मनुष्यगति में

1) आहारक शरीर नामकर्म के सत्कर्मिक	सब से स्तोक
2) नारकायु के सत्कर्मिक	संख्यातगुणे
3) देवायु के ,,	संख्यातगुणे
4) सम्यक्त्व प्रकृति के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे
5) सम्यग्मिथ्यात्व के ,,	विशेष अधिक सम्यक्त्वप्रकृति के उद्वेलक अधिक
6) देवगति नामकर्म के ,,	असंख्यातगुणे
7) नरकगति ,, ,,	विशेष अधिक देवगति के उद्वेलक अधिक
8) वैक्रियिक शरीर नामकर्म के सत्कर्मिक	,, ,,
9) तिर्यगायु के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे
10) अनन्तानुबन्धिचतुष्टय के सत्कर्मिक	संख्यातगुणे
11) मिथ्यात्व के सत्कर्मिक	विशेष अधिक अनन्तानुबन्धि के विसंयोजक अधिक
12) शेष कथन ओघ के समान	

विशेष यशकीर्ति के साथ मनुष्यायु, मनुष्यगति उच्चगोत्र कहना

मनुष्यनियों में

1) आहारक शरीर नामकर्म के सत्कर्मिक	सब से स्तोक
2) सम्यक्त्व के सत्कर्मिक	~~3~~ संख्यातगुणे
3) सम्यग्मिथ्यात्व के ,,	विशेष अधिक
4) नारकायु के ,,	संख्यातगुणे
5) देवायु के ,,	,,
6) तिर्यगायु के ,,	,,
7) अनन्तानुबन्धिचतुष्टय के सत्कर्मिक	विशेष अधिक
8) मिथ्यात्व के सत्कर्मिक	
9) शेष कर्मों के सत्कर्मिक प्ररूपणा	मनुष्यगति के समान

विशेष छह नोकषायों के साथ पुरुषवेद लेना

	असंज्ञी जीवों में	
1)	आहारक शरीर नामकर्म के सत्कर्मिक	सब से स्तोक
2)	सम्यक्त्व के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे
3)	सम्यग्मिथ्यात्व के सत्कर्मिक	विशेष अधिक
4)	मनुष्यायु के सत्कर्मिक	असंख्यातगुणे
5)	नारकायु के "	"
6)	देवायु के "	"
7)	देवगति के "	संख्यातगुणे
8)	नरकगति के "	विशेष अधिक
9)	वैक्रियिक शरीर नामकर्म के सत्कर्मिक	" "
10)	उच्चगोत्र के सत्कर्मिक	" "
11)	मनुष्यगति नामकर्म के सत्कर्मिक	" "
12	शेष प्रकृतियों के सत्कर्मिक	" "

स्पष्टीकरण

1) आहारकशरीर नामकर्म का बंध सातवें आठवें गुणस्थान में ही होता है। वे जीव असंयम में आनेपर पल्य के असंख्यातवें भाग काल तक उसकी उद्वेलना करते हैं। इसलिए इतने काल में संचित जीव आहारक शरीर के सत्कर्मिक हैं। आहारकशरीर की सत्तावाले जीव एकेन्द्रियादि असंज्ञी जीवों में भी उत्पन्न होते है इसलिए वहाँ भी उसका सत्त्व पाया जाता है।

उद्वेलना की समाप्ति का क्रम — स्वामी

1) आहारकद्विक 2) सम्यक्त्वप्रकृति 3) सम्यग्मिथ्यात्व — सभी सत्कर्मिक मिथ्यादृष्टि
4) देवद्विक 5) नारकद्विक व वैक्रियिकद्विक — एकेन्द्रिय, विकलत्रय
6) उच्चगोत्र 7 — तेजकायिक वायुकायिक

2) देवगतिद्विक और नारकचतुष्क की उद्वेलना किया हुआ जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त में उत्पन्न होने के अन्तर्मुहूर्त बाद देवगति का बन्ध करता है तो उस जीव को नरकद्विक का सत्त्व नहीं है किन्तु वैक्रियिक द्विक का सत्त्व है। तथा नरकद्विक का सत्त्व नववें गुणस्थान के प्रथम भाग में नष्ट होता है और वैक्रियिक द्विक का नाश चौदहवें गुणस्थान में होता है इसलिए नरकगति के सत्कर्मिक से वैक्रियिक द्विक के सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं।

पृ.५२८

स्थितिसत्कर्म

जस्थिति = जितनी स्थितियों में कर्मनिषेक का सत्त्व पाया जाता है उसे जस्थिति कहते हैं।

जस्थितिसत्कर्म=आबाधासहित संपूर्ण स्थिति को जस्थिति सत्कर्म कहते हैं। बंध होने के पश्चात जितने काल तक विवक्षित प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है वह जस्थितिसत्कर्म है।

जिस उत्तर प्रकृति का उत्कृष्ट स्थितिबंध पाया जाता है उसका जस्थितिकर्म संपूर्ण उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण बताया है। जिन उत्तरप्रकृतियों का स्थितिबंध उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण न होकर संक्रमण के द्वारा उनका उत्कृष्ट स्थितिसत्त्व हो जाता है उनका जस्थिति कर्म एक आवली से कम उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण कहा है। क्योंकि बंधावली बीतनेपर ही संक्रमण होता है।

जैसे साता का १५ कोडाकोडीसागर स्थिति का बंध हुआ। एक आवली के पश्चात असाता का ३० कोडाकोडीसागरप्रमाण बंध हुआ तब साता के प्रदेश असातारूपसे ३० कोडाकोडी तक स्थिति में संक्रमित हुए तो साता की जस्थिति १ आवली कम ३० कोडाकोडी सागरप्रमाण होती है।

	प्रकृतियों का नाम	उत्कृष्टस्थिति का प्रमाण
१)	५ ज्ञाना, ९ दर्शनावरण, ५ अंतराय उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म जस्थितियाँ	३० को. को. सागर
२)	निद्रादिक ५ दर्शनावरण जस्थितिसत्कर्म	३० को. को. "
३)	" " जस्थितियाँ	३० को. को. सा – १ समय
४)	सातावेदनीय जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियाँ	३० को. को. सा – १ आवली
५)	असातावेदनीय " "	३० को. को. सा.
६)	मिथ्यात्व " "	७० को. को. सा.
७)	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व " "	७० को. को. सा. – अन्तर्मुहूर्त
८)	१६ कषाय " "	४० को. को. सा.
९)	९ नोकषाय " "	४० को. को. सा. – आवली
१०)	देवायु, नरकायु का जस्थितिसत्कर्म	३३ सागर + एक पूर्वकोटि का त्रिभाग
११	" " की जस्थितियाँ	३३ सागरोपम
१२)	मनुष्यायु, तिर्यगायु का जस्थितिसत्कर्म	३ पल्योपम + एक पूर्वकोटि का त्रिभाग
१३	" " की जस्थितियाँ	३ पल्योपम
१४)	नरकगति-गत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गति-गत्यानुपूर्वी, एकेंद्रिय, →	२० को. को. सागरोपम (जस्थिति सत्कर्म)
१५	पंचेंद्रिय, औदारिक चतुष्क, वैक्रियिक चतुष्क, तैजस चतुष्क	२० को. को. सागरोपम – १ समय जस्थितियाँ

16) असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, हुण्डकसंस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुचतुष्क, आतप, उद्योत, अप्र. विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थावर, आस्थिरषट्क, निर्माण इनका जस्थितिसत्कर्म जस्थितियाँ	20 को-को-सागर 20 को-को-सागर-1 समय (अधोरेखित प्रकृतियों की जस्थिति)
17 मनुष्यगति, 5 संस्थान, 5 संहनन, स्थिरषट्क जस्थितिसत्कर्म जस्थितियाँ	20 को.को. सागर - 1 आवली
18) देवगतिद्विक, 2 जाति, मनुष्यानुपूर्वी सूक्ष्मत्रय जस्थितिसत्कर्म जस्थितियाँ	20 को.को सागर - 1 आवली 20 को. को. सागर - (आवली + 1 स)
19) प्रशस्त विहायोगति जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियाँ	20 को.को. सागर - 1 आवली
20) आहारकशरीर नामकर्म, तीर्थंकर की जस्थितिसत्कर्म	अन्तः कोडाकोडीसागरोपम
21) " " जस्थितियाँ	अन्तः को.को. सागर - 1 समय
22) उच्चगोत्र की जस्थितियाँ, जस्थितिसत्कर्म	20 को. को. सागर - 1 आवली
23) नीचगोत्र " "	20 को. को. सागर

जिन प्रकृतियों का उदय नहीं है उनका वर्तमान निषेक पूर्व समय में स्तिबुक संक्रमण से अन्य में संक्रमित हो गया है इसलिए वर्तमान बंध समय में उनकी जस्थितियाँ एक समय कम होती हैं।

जघन्य स्थितिसत्कर्म प्रमाणानुगम

प्रकृतियों का नाम	जघन्य स्थितिसत्कर्म
1) 5 ज्ञाना, 4 दर्शना, साता, असाता, सम्यक्त्व, सं-लोभ, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, 4 आयु, मनुष्यद्विक, त्रसत्रिक, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, तीर्थंकर, 5 अंतराय, उच्चगोत्र	1 समयस्थितिक 1 स्थिति
2) 5 दर्शना, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, 12 कषाय	2 समयकालस्थितिक 1 स्थिति
3) संज्वलन माया जघन्यस्थितिसत्कर्म " " जस्थितियाँ	आधा मास - (2 आवली - 1 समय) आधा मास - अन्तर्मुहूर्त
4) संज्वलन मान ज स्थितिसत्कर्म " " जस्थितियाँ	एक मास - (2 आवली - 1 समय) एक मास - अन्तर्मुहूर्त
5) संज्वलन क्रोध जस्थितिसत्कर्म " " जस्थितियाँ	दो मास - (2 आवली - 1 समय) दो मास - अन्तर्मुहूर्त
6) पुरुषवेद जस्थितिसत्कर्म " जस्थितियाँ	8 वर्ष - (2 आवली - 1 समय) 8 वर्ष - अन्तर्मुहूर्त
7) 6 नोकषाय जघन्यस्थितिसत्कर्म व जस्थितियाँ	संख्यातवर्ष
8) नरकगतिद्विक, तिर्यग्गतिद्विक, देवद्विक, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, 3. शेष सर्व नामप्रकृति	दो समय कालवाली 1 स्थिति

स्पष्टीकरण

जो प्रकृतियाँ स्वमुखोदय से नष्ट होती हैं उनकी जघन्य स्थिति एक समयवाली एक स्थितिरूप होती है और जो प्रकृतियाँ परमुखोदय से नष्ट होती हैं उनकी जघन्य स्थिति दो समयवाली एक स्थितिरूप है। अर्थात् उन प्रकृतियों का स्तिबुक संक्रमण द्विचरम समय में होता है अतः काल तो दो समय शेष रहता है लेकिन निषेक एक स्थिति में ही पाया जाता है।

संज्वलन क्रोध, मान, माया का अन्तिम समय में क्रम से 2 मास, 1 मास, आधा मास प्रमाण स्थितिबन्ध होता है उसकी अन्तरायाम से ऊपर आबाधा अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है अतः जस्थितियाँ अन्तर्मुहूर्त कम दो मास, 1 मास, आधा मास कही हैं। और इनका अंतिम समय को जघन्य स्थितिबंध होकर शेष एक समय कम दो आवली प्रमाण काल बीतने पर अन्तिम समयप्रबद्ध की एक फाली नष्ट होती है उस समय सब से जघन्य स्थितिसत्कर्म होता है इसलिए उनके अन्तिम स्थितिबंध में से 1 समय कम दो आवली कम की है।

पृ. 531 स्वामित्व अधिकार

	प्रकृतियों का नाम	उत्कृष्ट स्थितिकर्म स्वामित्व
1)	5 ज्ञाना. 4 दर्शना. ध्रुवबन्धी प्रकृति,	उत्कृष्ट स्थिति के बंधक
2)	5 निद्रा	उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर, एक समय कम वेदक
3)	सातावेदनीय	सातावेदनीय के उत्कृष्ट स्थिति का संक्रामक सातावेदक
4)	असातावेदनीय	उत्कृष्ट स्थिति बंधक असातावेदक
5)	मिथ्यात्व, 16 कषाय	" " " मिथ्यादृष्टि उस प्रकृति का वेदक
6)	सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व	सम्यक्त्व की उत्कृष्ट स्थिति के साथ प्रथम समयवर्ती सम्यग्दृष्टि
7)	हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, 3 वेद	कषायों की उत्कृष्ट स्थिति को नोकषायों में संक्रामक
8)	नारकायु, देवायु, मनुष्यायु, तिर्यंचायु	पूर्वकोटि के तृतीय भाग के प्रथम समय में उत्कृष्ट स्थिति का बंधक
-	" " " जस्थिति का स्वामी	उत्कृष्ट स्थिति बांधकर प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ
9)	नरकगति नामकर्म, वैक्रियिकशरीरचतुष्क	" " बंधक मनुष्य तिर्यंच संज्ञी पंचे पर्याप्त
10)	तिर्यंचगति नामकर्म, औदारिक शरीर, बंधन संघात	" " बंधक देव व नारकी
11)	मनुष्यगति "	मनुष्यगति बांधकर उत्कृष्ट स्थिति को संक्रांत करनेवाले
12)	देवगति "	देवगति बांधकर उत्कृष्ट स्थिति का संक्रम करनेवाले मनुष्य
13)	औदा. अंगोपांग, असंप्राप्ता. संहनन	उत्कृष्ट स्थितिबंधक नारकी व 3-8 स्वर्ग के देव मनुष्य तिर्यंच के
14)	5 संस्थान, 5 संहनन	इन प्रकृतियों को बांधते हुए उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम में वर्तमान जीव
	" " जस्थितियों का स्वामी	इसी उक्त जीव के - विशेष -> विवक्षित प्रकृति का वेदक

प्रकृतियों का नाम	उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म का स्वामित्व
१५) हुण्डसंस्थान	नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, उत्तरशरीर विक्रियायुक्त देव
१६) तीन आनुपूर्वी	विवक्षित प्रकृति बंधक उत्कृष्ट स्थिति संक्रामक
तिर्यग्गानुपूर्वी की जस्थितियाँ	उसके उत्कृष्ट स्थितिबंधक के
१७) नारकानुपूर्वी	" " " मनुष्य, तिर्यंच
" जस्थितियाँ	नरक के विग्रहगति में वर्तमान उक्त जीव के
१८ उच्छ्वास, त्रस, पर्याप्ति, प्रत्येकशरीर	उत्कृष्ट स्थितिबंधक त्रसकायिक जीव
१९) उद्योत	" " देव
२०) आतप, स्थावर	" " सौधर्म, ऐशान कल्पवासी देव
" जस्थितियाँ	देवों में से पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती एकेन्द्रिय

पृ. ५३५ जघन्य स्थितिसत्कर्म का स्वामित्व

प्रकृतियों का नाम	जघन्य स्थितिसत्कर्म का स्वामी
१) ५ ज्ञाना. ४ दर्शना. ५ अन्तराय	अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ (१२वाँ गुणस्थानवर्ती)
२) निद्रा, प्रचला	द्विचरम " "
३) स्त्यानगृद्धि त्रिक	अनिवृत्तिकरण में स्त्यानगृद्धि त्रिक की अन्तिम फाली का
८	निक्षेपण कर एक समय कम आवली बीतनेपर
४) साता, असाता वेदनीय	विवक्षित प्रकृति का वेदक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक
५) मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, १२ कषाय	अंतिम फाली का निक्षेपण कर १समय कम आवली बीतनेपर
६) सम्यक्त्वप्रकृति, संज्वलन लोभ	अंतिम समयवर्ती वेदक
७) तीन संज्वलन, पुरुषवेद	अनिवृत्तिकरण क्षपक जीव, जो इन प्रकृतियों के निक्षिप्त होनेपर
	एक समयकम दो आवलियों को बिता चुका है
८) स्त्रीवेद, नपुंसकवेद	अनिवृत्तिकरण क्षपक अन्तिम समयवर्ती वेदक
९) मनुष्यायु, तिर्यगायु	इन आयुओं का अबन्धक अंतिम समयवर्ती तद्भवस्थ
१०) देवायु, नारकायु	अंतिम समयवर्ती तद्भवस्थ
११) नरकद्विक, तिर्यग्द्विक, ४जाति, आतप	स्त्यानगृद्धि त्रिक के समान
उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण	
१२) मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसत्रिक, सुभग आदेय यश तीर्थंकर	अंतिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक
१३) शेष नामकर्म, नीचगोत्र	द्विचरम " "
१४) उच्चगोत्र	अन्तिम " "

पृ. ५३६

उत्कृष्ट अल्पबहुत्व

प्रकृतियों का नाम			
1) मनुष्यायु, तिर्यगायु	जस्थितियाँ	स्तोक	३ पल्योपम
2) ,, ,,	जस्थितिसत्कर्म	विशेष अधिक	३ पल्योपम + पूर्वकोटि/३
3) देवायु, नारकायु	जस्थितियाँ	संख्यातगुणी	३३ सागरोपम
4) ,, ,,	जस्थितिकर्म	विशेष अधिक	३३ सागर + पूर्वकोटि/३
5) आहारशरीरनामकर्म	जस्थितियाँ	संख्यातगुणी	अन्तः को. को. - अन्तर्मुहूर्त
6) ,,	जस्थितिकर्म	विशेष अधिक	अन्तः को. को.
7) देवगति नामकर्म	जस्थितियाँ	संख्यातगुणी	२० को. को. सा - (आवली+१स
8) ,, ,,	जस्थितिकर्म	विशेष अधिक	२० को. को. सा - आवली
9) मनुष्यगति, उच्चगोत्र, यशकीर्ति	जस्थिति, जस्थितिकर्म	उतना मात्र	२० को. को. सागर - १ आवली
10) नरकगति, तिर्यग्गति, औदा. शरीर	जस्थितियाँ	विशेष अधिक	२० को. को. सागर - १ स
11) ,, ,,	जस्थितिकर्म	,, ,,	२० को. को. सागर
12) तैजस कार्मणशरीर अयश नीचगोत्र	जस्थिति, जस्थितिकर्म	उतना मात्र	,,
13) सातावेदनीय	,, ,,	विशेष अधिक	३० को. को. सागर - १ आवली
14) ५ निद्रादि दर्शनावरण	,,	,, ,,	३० को. को. सागर - १ समय
15) ,,	जस्थितिकर्म	,, ,,	३० को. को. सागर
16 ५ ज्ञा. ४ दर्शना. ५ अंतराय	जस्थितियाँ, जस्थिति कर्म	उतना मात्र	,,
17 नोकषाय	,, ,,	विशेष अधिक	४० को. को. सागर - १ आवली
18) १६ कषाय	,, ,,	,, ,,	४० को. को. सागर
19) सम्यग्मिथ्यात्व	जस्थितियाँ	,, ,,	७० को. को. सागर - अन्तर्मुहूर्त
20) ,,	जस्थितिसत्कर्म	विशेष अधिक	७० को. को. सागर - अन्तर्मुहूर्त
21) सम्यक्त्वप्रकृति	जस्थितियाँ, जस्थितिकर्म	उतनामात्र	७० को. को. सागर - अन्तर्मुहूर्त
22) मिथ्यात्व	,, ,,	विशेष अधिक	७० को. को. सागर

पृ. ५३७

जघन्य अल्पबहुत्व

1) ५ ज्ञाना. ४ दर्शना, साता, असाता सम्यक्त्व, सं. लोभ, स्त्रीवेद, नपुं ४आयु, मनुष्यगति, यश, उच्चगोत्र, ५ अंतराय	जस्थितियाँ जस्थितिकर्म	स्तोक	१ समयवाली १ स्थिति
2) ५ दर्शना, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, १२ कषाय, ३ गति, ५ शरीर, अयश, नीच	जस्थितियाँ	उतनीमात्र	१ समयवाली १ स्थिति

प्रकृतियों का नाम		अल्पबहुत्व	स्थिति का प्रमाण
पूर्वोक्त प्रकृतियों का	जस्थितिकर्म	संख्यातगुणा	2 समयवाली 1 स्थिति
संज्वलन माया	जस्थितियाँ	असंख्यातगुणी	15 दिवस - अन्तर्मुहूर्त
" "	जस्थितिकर्म	विशेष अधिक	15 दिवस - (2 आवली - 1 स)
संज्वलन मान	जस्थितियाँ	"	1 मास - अन्तर्मुहूर्त
" "	जस्थितिकर्म	"	1 मास - (2 आवली - 1)
संज्वलन क्रोध	जस्थितियाँ	"	2 मास - अन्तर्मु.
" "	जस्थितिकर्म	"	2 मास - (2 आवली - 1)
पुरुषवेद	जस्थितियाँ	संख्यातगुणी	8 वर्ष - अन्तर्मुहूर्त
"	जस्थितिसत्कर्म	विशेष अधिक	8 वर्ष - (2 आवली - 1 स)
6 नोकषाय	जस्थितियाँ	संख्यातगुणी	संख्यातवर्ष - अन्तर्मुहूर्त
	जस्थितिसत्कर्म	विशेष अधिक	संख्यातवर्ष

नरकगति में सम्यक्त्वप्रकृति	जघन्यस्थिति	स्तोक	1 समय 1 स्थिति
" उद्वेलित प्रकृतियाँ	"	उतनी ही	" "
" "	जस्थितिकर्म	संख्यातगुणा	2 समय 1 स्थिति

अनुभागसत्कर्म

स्पर्धकों की प्ररूपणा पृ. 28 देखें।

जघन्य अनुभागसत्कर्म की घाति और स्थान संज्ञाओं का कथन –

1) मतिज्ञाना, श्रुतज्ञाना, चक्षुदर्शना, अचक्षुदर्शना, सम्यक्त्व चार संज्वलन, तीन वेद, 5 अंतराय का जघन्य अनुभाग सत्कर्म	देशघाति व एकस्थानिक
2) अवधिज्ञाना, अवधिदर्शनावरण " " "	" "
3) मनःपर्ययज्ञानावरण " " "	" द्विस्थानिक
✱ 4) शेष सब कर्मों का " " "	सर्वघाति "

✱ मूल में पाठ स्खलित है इसलिए महाबंध पु.4 में उत्कृष्ट जघन्य अनुभाग बन्ध के स्वामित्वादि की प्ररूपणा की है उसका आधार लेकर यहाँ मतिज्ञानावरणादि के उत्कृष्ट स्वामित्व की और शेष सब कर्मों के जघन्य अनुभाग सत्कर्म की प्ररूपणा की है

उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्म स्वामित्व

प्रकृतियों का नाम	उत्कृष्ट अनुभाग सत्त्व का स्वामित्व
1) 5 ज्ञाना, 9 दर्शना, 5 अंतराय, मिथ्यात्व 16 कषाय, 9 नोकषाय, अप्रशस्त नामप्र. नीचगोत्र	पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि उत्कृष्ट अनुभाग बन्ध करके जब तक अनुभागकाण्डक घात नहीं करता है तबतक वह मरकर, सूक्ष्म बादर एकेन्द्रिय, विकलत्रय संज्ञी, असंज्ञी पर्याप्त अपर्याप्त में भी उत्पन्न हो सकता है।
2) सातावेदनीय, उच्चगोत्र, यशकीर्ति	अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म सांपरायिक क्षपक से लेकर द्विचरमवर्ती भव्यासिद्धिक तक
3) मनुष्यगतिपंचक	सर्वविशुद्ध देव उत्कृष्ट अनुभाग बंधकर उसका घात न करते हुए किसी भी गति में वर्तमान
4) प्रशस्त नामप्रकृतियाँ	आठवे गुणस्थान क्षपक के छठे भाग के अन्तिम समय को आदि करके द्विचरम समयवर्ती भव्यासिद्धिक तक
5) आयु	उत्कृष्ट अनुभाग बन्धक प्रथम से तद्भवस्थ रहने के द्विचरम समय तक
नरकगति में सातावेदनीय, यशकीर्ति	उपशामक सू.सां. के अंतिम समय में उत्कृष्ट अनुभाग बांधकर घात न करते हुए नरकगति में उत्पन्न हुआ जीव
" तीर्थंकर	अपूर्वकरण गुणस्थान में छठे भाग में उत्कृष्ट अनुभाग बंध करके घात न करते हुए नरकगति में उत्पन्न जीव
" अप्रशस्त कर्मों का स्वामित्व	ओघ के समान
इसीप्रकार सब गतियों में जानना।	

जघन्य अनुभाग सत्कर्म स्वामित्व

प्रकृतियों का नाम	जघन्य अनुभाग सत्त्व का स्वामी
1) मतिज्ञाना., श्रुतज्ञाना. चक्षु-अचक्षुदर्शनावरण	चौदह पूर्वधारक उत्कृष्ट श्रुतार्थलब्धियुक्त द्विचरम समयवर्ती छद्मस्थ
2) अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण	परमावधि धारक उत्कृष्ट लब्धियुक्त अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ

प्रकृतियों का नाम	जघन्य अनुभाग सत्त्व का स्वामी
३) मन:पर्ययज्ञानावरण	उत्कृष्ट लब्धियुक्त विपुलमति मन:पर्ययधारक अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ
४) केवलज्ञाना, केवलदर्शना; ५ अंतराय	अन्तिमसमयवर्ती छद्मस्थ
५) निद्रा, प्रचला	द्विचरम " "
६) स्त्यानगृद्धित्रिक	हतसमुत्पत्तिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय से लेकर, अन्य एकेन्द्रिय
७)	विकलचतुष्क, संज्ञी पर्याप्त अपर्याप्त जीव उत्पत्ति की अपेक्षा
८) साता व असातावेदनीय	जघन्य उदयस्थान में वर्तमान अन्तिम समयवर्ती भव्य
८) सम्यक्त्व प्रकृति	अन्तिमसमयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह जीव
९) सम्यग्मिथ्यात्व	अन्तिम अनुभागकाण्डक में वर्तमान जीव
१०) मिथ्यात्व	हतसमुत्पत्तिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव
११) अनन्तानुबन्धी कषाय	विसंयोजन करके पुन: जघन्य बन्ध में वर्तमान जीव
१२) आठ कषाय	हतसमुत्पत्तिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव
१३) हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा	अन्तिम अनुभागकाण्डक में वर्तमान जीव
१४) नपुंसकवेद	अन्तिम समयवर्ती नपुंसक वेदक क्षपक
१५) स्त्रीवेद	" " स्त्रीवेदक "
१६) पुरुषवेद	अपगतवेदी होकर अन्तिम समयप्रबद्ध का अन्तिम समयवर्ती संक्रामक पुरुषवेदोदययुक्त क्षपक
१७) संज्वलन क्रोध	क्रोध के उदय से श्रेणि चढ़कर अन्तिम समयप्रबद्ध का अन्तिम समयवर्ती संक्रामक
१८ संज्वलन मान	मान के उदय से श्रेणि चढ़कर अन्तिम समय-प्रबद्ध का अन्तिम समयवर्ती संक्रामक
१९) संज्वलन माया	माया से श्रेणि चढ़ा हुआ अन्तिम समयप्रबद्ध का अन्तिम समयवर्ती संक्रामक
२०) संज्वलन लोभ	तीव्रतर हतसमुत्पत्तिक अन्तिम समयवर्ती संक्रामक

*सूचना यहाँ पर ओघ से अल्पबहुत्व न बताकर आदेश से ही अल्पबहुत्व बताया गया है। बीच में कई पन्ने नष्ट हो गये है ऐसा प्रतीत होता है।

उत्कृष्ट अल्पबहुत्व में सब से तीव्र अनुभागवाली प्रकृति पहले बताकर कम अनुभागवाली प्रकृतियाँ बाद में बताकर उसका अनन्तगुणहीन अनुभाग कहना चाहिए। यहाँ अनन्तगुणा बताया है। यहाँ पर भी लिपिकार के निमित्त से गलत पाठ लिखा गया होगा ऐसा लगता है।

पृ. ५४४ उत्कृष्ट अनुभाग का अल्पबहुत्व

नरकगति में नारकियों में

१)	सातावेदनीय	तीव्र अनुभागवाली
२)	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	अनन्तगुणी हीन
३)	कार्मणशरीर	अनन्तगुणा हीन
४)	तैजसशरीर	" "
५)	वैक्रियिकशरीर	" "
६)	मिथ्यात्व	" "
७)	अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण	अनन्तगुणे हीन
८)	सम्यग्मिथ्यात्व	अनन्तगुणा हीन
९)	दानान्तराय	" "
१०)	लाभान्तराय	" "
११)	भोगान्तराय	" "
१२)	परिभोगान्तराय	" "
१३)	अचक्षुदर्शनावरण	" "
१४)	चक्षुदर्शनावरण	" "
१५)	वीर्यान्तराय	" "
१६)	सम्यक्त्व	" "

तिर्यन्चगति में

१)	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	सब से तीव्र अनुभागवाली
२)	कार्मणशरीर	अनन्तगुणा हीन
३)	तैजसशरीर	" "
४)	वैक्रियिकशरीर	अनन्तगुणा हीन
५)	मिथ्यात्व	" "
६)	केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण	" "
७)	अनन्तानुबन्धिचतुष्क अन्यतर	" "
८)	अन्यतर संज्वलन कषाय	" "
९)	अन्यतर प्रत्याख्यानावरण	" "
१०)	अप्रत्याख्यानावरण	" "
११)	मतिज्ञानावरण	" "
१२	श्रुतज्ञानावरण	" "
१३)	अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण	" "

	प्रकृतियों के नाम	अल्पबहुत्व
१४	मनःपर्ययज्ञानावरण	अनन्तगुणा हीन
१५	स्त्यानगृद्धि	,,
१६	निद्रानिद्रा	,,
१७	प्रचलाप्रचला	,,
१८	निद्रा	,,
१९	प्रचला	,,
२०	रति	,,
२१	हास्य	,,
२२	औदारिकशरीर	,,
२३	तिर्यगायु	,,
२४	असातावेदनीय	,,
२५	नपुंसकवेद	,,
२६	स्त्रीवेद	,,
२७	पुरुषवेद	,,
२८	अरति	,,
२९	शोक	,,
३०	भय	,,
३१	जुगुप्सा	,,
३२	नीचगोत्र, अयशकीर्ति	,,
३३	तिर्यग्गति	,,
३४	चक्षुदर्शनावरण	,,
३५	सम्यग्मिथ्यात्व	,,
३६	दानान्तराय	,,
३७	लाभान्तराय	,,
३८	भोगान्तराय	,,
३९	परिभोगान्तराय	,,
४०	अचक्षुदर्शनावरण	,,
४१	वीर्यान्तराय	,,
४२	सम्यक्त्व	

	मनुष्यों में अल्पबहुत्व	अनुभाग
१)	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	सबसे तीव्र
२)	कार्मणशरीर	अनन्तगुणा हीन
३)	तैजसशरीर	,,
४)	आहारकशरीर	,,
५)	वैक्रियिकशरीर	,,
६)	मिथ्यात्व	,,
७)	केवलज्ञाना. केवलदर्शना.	,,
८)	कषायों का अल्पबहुत्व	ओघ के समान
९)	मतिज्ञानावरण	अनन्तगुणा हीन
१०)	श्रुतज्ञानावरण	,, ,,
११)	अवधिज्ञाना. अवधिदर्शना	,, ,,
१२)	मनःपर्ययज्ञानावरण	,,
१३)	स्त्यानगृद्धि	,,
१४)	निद्रानिद्रा	,,
१५)	प्रचलाप्रचला १६ निद्रा	,,
१६)	सातावेदनीय १७ प्रचला	,,
१७)	रति	,,
१८)	हास्य	,,
१९)	मनुष्यगति	,,
२०)	औदारिकशरीर	,,
२१)	मनुष्यायु	,,
२२)	असातावेदनीय	,,
२३)	नपुंसकवेद	,,
२४)	स्त्रीवेद	,,
२५)	पुरुषवेद	,,
२६)	अरति	,,
२७)	शोक	,,
२८)	भय	,,
२९)	जुगुप्सा	,,
३०)	नीचगोत्र	,,
३१)	अयशकीर्ति	,,

32	सम्यग्मिथ्यात्व	अनन्तगुणा हीन
33	दानान्तराय	"
34	लाभान्तराय	"
35	भोगान्तराय	"
36	परिभोगान्तराय	"
37	अचक्षुदर्शनावरण	"
38	चक्षुदर्शनावरण	"
39	वीर्यान्तराय	"
40	सम्यक्त्व	"

देवगति में

1	सातावेदनीय	सब से तीव्र अनुभाग
2	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	अनन्तगुणा हीन
3	मिथ्यात्व	"
4	केवलज्ञाना. केवलदर्शनावरण	"
5	अनन्तानुबन्धी	"
6	शेष कषाय	"
7	मतिज्ञानावरण	"
8	श्रुतज्ञानावरण	"
9	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
10	निद्रा	"
11	प्रचला	"
12	देवगति	"
13	रति	"
14	हास्य	"
15	कार्मणशरीर	"
16	तैजसशरीर	"
17	वैक्रियिकशरीर	"
18	देवायु	"
19	असातावेदनीय	"
20	स्त्रीवेद	"
21	पुरुषवेद	"
22	अरति	अनन्तगुणा हीन
23	शोक	"
24	भय	"
25	जुगुप्सा	"
26	अयशकीर्ति	"
27	अवधिज्ञाना. अवधिदर्शनावरण	"
28	सम्यग्मिथ्यात्व	"
29	चार दानान्तराय आदि क्रमसे	"
30	अचक्षुदर्शनावरण	"
31	वीर्यान्तराय	"
32	सम्यक्त्व	"

भवनवासी देवों में

1	मिथ्यात्व	सब से तीव्र अनुभाग
2	केवलज्ञाना, केवलदर्शनावरण	अनन्तगुणा हीन
3	कषायों का अल्पबहुत्व	ओघ के समान
4	मतिज्ञानावरण	अनन्तगुणा हीन
5	श्रुतज्ञानावरण	"
6	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
7	निद्रा	"
8	प्रचला	"
9	स्त्यानगृद्धि	"
10	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	"
11	देवगति	"
12	रति	"
13	हास्य	"
14	आगे सामान्य देवों के समान	

एकेन्द्रियजीवों में

1	मिथ्यात्व	सब से तीव्र अनुभाग
2	केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण	अनन्तगुणा हीन

	प्रकृतियों के नाम	अल्पबहुत्व
१४	मनःपर्ययज्ञानावरण	अनन्तगुणा हीन
१५	स्त्यानगृद्धि	"
१६	निद्रानिद्रा	"
१७	प्रचलाप्रचला	"
१८	निद्रा	"
१९	प्रचला	"
२०	रति	"
२१	हास्य	"
२२	औदारिकशरीर	"
२३	तिर्यगायु	"
२४	असातावेदनीय	"
२५	नपुंसकवेद	"
२६	स्त्रीवेद	"
२७	पुरुषवेद	"
२८	अरति	"
२९	शोक	"
३०	भय	"
३१	जुगुप्सा	"
३२	नीचगोत्र, अयशकीर्ति	"
३३	तिर्यग्गति	"
३४	चक्षुदर्शनावरण	"
३५	सम्यग्मिथ्यात्व	"
३६	दानान्तराय	"
३७	लाभान्तराय	"
३८	भोगान्तराय	"
३९	परिभोगान्तराय	"
४०	अचक्षुदर्शनावरण	"
४१	वीर्यान्तराय	"
४२	सम्यक्त्व	

	मनुष्यों में अल्पबहुत्व	अनुभाग
१	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	सबसे तीव्र
२	कार्मणशरीर	अनन्तगुणा हीन
३	तैजसशरीर	"
४	आहारकशरीर	"
५	वैक्रियिकशरीर	"
६	मिथ्यात्व	"
७	केवलज्ञाना. केवलदर्शना.	"
८	कषायों का अल्पबहुत्व	ओघ के समान
९	मतिज्ञानावरण	अनन्तगुणा हीन
१०	श्रुतज्ञानावरण	" "
११	अवधिज्ञाना. अवधिदर्शना	" "
१२	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
१३	स्त्यानगृद्धि	"
१४	निद्रानिद्रा	"
१५	प्रचलाप्रचला १६ निद्रा	" "
१६	सातावेदनीय १७ प्रचला	"
१७	रति	"
२०	हास्य	"
२१	मनुष्यगति	"
२२	औदारिकशरीर	"
२३	मनुष्यायु	"
२४	असातावेदनीय	"
२५	नपुंसकवेद	"
२६	स्त्रीवेद	"
२७	पुरुषवेद	"
२८	अरति	"
२९	शोक	"
३०	भय	"
३१	जुगुप्सा	"
३२	नीचगोत्र	"
३३	अयशकीर्ति	"

32	सम्यग्मिथ्यात्व	अनन्तगुणा हीन
33	दानान्तराय	"
34	लाभान्तराय	"
35	भोगान्तराय	"
36	परिभोगान्तराय	"
37	अचक्षुदर्शनावरण	"
38	चक्षुदर्शनावरण	"
39	वीर्यान्तराय	"
40	सम्यक्त्व	"

देवगति में

1	सातावेदनीय	सब से तीव्र अनुभाग
2	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	अनन्तगुणा हीन
3	मिथ्यात्व	"
4	केवलज्ञाना. केवलदर्शनावरण	"
5	अनन्तानुबन्धी	"
6	शेष कषाय	"
7	मतिज्ञानावरण	"
8	श्रुतज्ञानावरण	"
9	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
10	निद्रा	"
11	प्रचला	"
12	देवगति	"
13	रति	"
14	हास्य	"
15	कार्मणशरीर	"
16	तैजसशरीर	"
17	वैक्रियिकशरीर	"
18	देवायु	"
19	असातावेदनीय	"
20	स्त्रीवेद	"
21	पुरुषवेद	"
22	अरति	अनन्तगुणा हीन
23	शोक	"
24	भय	"
25	जुगुप्सा	"
26	अयशकीर्ति	"
27	अवधिज्ञाना. अवधिदर्शनावरण	"
28	सम्यग्मिथ्यात्व	"
29	चार दानान्तराय। दि क्रमसे	"
30	अचक्षुदर्शनावरण	"
31	वीर्यान्तराय	"
32	सम्यक्त्व	"

भवनवासी देवों में

1	मिथ्यात्व	सब से तीव्र अनुभाग
2	केवलज्ञाना, केवलदर्शनावरण	अनन्तगुणा हीन
3	कषायों का अल्पबहुत्व	ओघ के समान
4	मतिज्ञानावरण	अनन्तगुणा हीन
5	श्रुतज्ञानावरण	"
6	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
7	निद्रा	"
8	प्रचला	"
9	स्त्यानगृद्धि	"
10	उच्चगोत्र, यशकीर्ति	"
11	देवगति	"
12	रति	"
13	हास्य	"
14	आगे सामान्य देवों के समान	

एकेन्द्रियजीवों में

1)	मिथ्यात्व	सब से तीव्र अनुभाग
2)	केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण	अनन्तगुणा हीन

पृ. ५४८

कषायों का अल्पबहुत्व	ओघ के समान
मतिज्ञानावरण	अनन्तगुणा हीन
चक्षुदर्शनावरण	"
श्रुतज्ञानावरण	"
अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण	"
मनःपर्ययज्ञानावरण	"
स्त्यानगृद्धि	"
निद्रानिद्रा	"
प्रचलाप्रचला	"
निद्रा	"
प्रचला	"
असातावेदनीय	"
नपुंसकवेद	"
अरति	"
शोक	"
भय	"
जुगुप्सा	"
नीचगोत्र	"
अयशकीर्ति	"
तिर्यंचगति	"
सातावेदनीय	"
यशकीर्ति	"
रति	"
हास्य	"
कार्मणशरीर	"
तैजसशरीर	"
वैक्रियिकशरीर	"
औदारिकशरीर	"
तिर्यगायु	"
दानान्तरायादि चार	"
अचक्षुदर्शनावरण	"
वीर्यान्तराय	"

जघन्य अनुभाग सत्कर्म अल्पबहुत्व

1)	संज्वलन लोभ	सबसे मन्द
2)	संज्वलन माया	अनन्तगुणी
३	संज्वलन मान	अनन्तगुणा
४	संज्वलन क्रोध	"
५	वीर्यान्तराय	"
६	सम्यक्त्व	"
७	चक्षुदर्शनावरण	"
८	श्रुतज्ञानावरण	"
९	मतिज्ञानावरण	"
10	अचक्षुदर्शनावरण	"
11	अवधिज्ञाना. अवधिदर्शना	"
12	परिभोगान्तराय	"
13	भोगान्तराय	"
14	लाभान्तराय	"
15	दानान्तराय	"
16	पुरुषवेद	"
17	स्त्रीवेद	"
18	नपुंसकवेद	"
19	रति	"
20	हास्य	"
21	अरति	"
22	जुगुप्सा	"
23	भय	"
24	शोक	"
25	केवलज्ञाना. केवलदर्शनावरण	"
26	प्रचला	"
27	निद्रा	"
28	प्रचलाप्रचला	"
29	निद्रानिद्रा	"
30	स्त्यानगृद्धि	"
31	प्रत्याख्यानावरण कषाय	"
32	अप्रत्याख्यानावरण "	"

३३	सम्यग्मिथ्यात्व	अनन्तगुणा
३४	अनन्तानुबन्धी कषाय	”
३५	संज्वलनचतुष्क	”
३६	मिथ्यात्व	”
३७	औदारिक शरीर	”
३८	वैक्रियिक शरीर	”
३९	तिर्यगायु	”
४०	मनुष्यायु	”
४१	आहारकशरीर	”
४२	तैजसशरीर	”
४३	कार्मणशरीर	”
४४	तिर्यग्गति	”
४५	नरकगति	”
४६	मनुष्यगति	”
४७	देवगति	”
४८	नीचगोत्र	”
४९	अयशकीर्ति	”
५०	असातावेदनीय	”
५१	उच्चगोत्र	”
५२	यशकीर्ति	”
५३	सातावेदनीय	”
५४	नारकायु	”
५५	देवायु	”
	ओघ जघन्यदण्डक समाप्त	”

नरकगति में

1)	सम्यक्त्व	सब से मन्द अनुभाग
2)	चक्षुदर्शनावरण	अनन्तगुणा
3)	अचक्षुदर्शनावरण	”
4)	हास्य	”
5)	रति	”
6)	जुगुप्सा	”
7	शोक	अनन्तगुणा
8	अरति	”
9	नपुंसकवेद	”
10	संज्वलन अन्यतर कषाय	”
11	वीर्यान्तराय	”
12	परिभोगान्तराय	”
13	भोगान्तराय	”
14	लाभान्तराय	”
15	दानान्तराय	”
16	अवधिज्ञाना. अवधिदर्शना.	”
17	मनःपर्ययज्ञानावरण	”
18	श्रुतज्ञानावरण	”
19	मतिज्ञानावरण	”
20	अप्रत्याख्यानावरण कषाय	”
21	प्रत्याख्यानावरण ”	”
22	केवलज्ञाना. केवलदर्शनावरण	”
23	प्रचला	”
24	निद्रा	”
25	सम्यग्मिथ्यात्व	”
26	अनन्तानुबन्धी कषाय	”
27	मनुष्यगति	”
28	वैक्रियिकशरीर	”
29	तैजसशरीर	”
30	कार्मणशरीर	”
31	नरकगति	”
32	नीचगोत्र	”
33	अयशकीर्ति	”
34	असातावेदनीय	”
35	सातावेदनीय	”
36	नारकायु	”

इसीप्रकार दूसरी पृथ्वी में जानना विशेष इतना वीर्यान्तराय और भोगान्तराय के बीच में सम्यक्त्व को करना चाहिये.

तिर्यग्गति में	जघन्य अनुभाग
1) सम्यक्त्वप्रकृति	सब से मन्द
2) चक्षुदर्शनावरण	अनन्तगुणा
3 अचक्षुदर्शनावरण	»
4 अवधिज्ञाना. अवधिदर्शनावरण	»
5 हास्य	»
6 रति	»
7 जुगुप्सा	»
8 भय	»
9 शोक	»
10 अरति	»
11 पुरुषवेद	»
12 स्त्रीवेद	»
13 नपुंसकवेद	»
14 संज्वलन कषाय	»
15 वीर्यान्तराय	»
16 श्रुतज्ञानावरण	»
17 मतिज्ञानावरण	»
18 अप्रत्याख्यानावरण कषाय	»
19 प्रत्याख्यानावरण कषाय	»
20 केवलज्ञाना. केवलदर्शनावरण	»
21 प्रचला	»
22 निद्रा	»
23 प्रचलाप्रचला	»
24 निद्रानिद्रा	»
25 स्त्यानगृद्धि	»
26 सम्यग्मिथ्यात्व	»
27 अनन्तानुबन्धी कषाय	»
28 मिथ्यात्व	»
29 औदारिक शरीर	»
30 वैक्रियिक शरीर	»
31 तिर्यगायु	»
32 तैजसशरीर	अनन्तगुणा
33 कार्मणशरीर	»
34 तिर्यग्गति	»
35 नीचगोत्र	»
36 अयशकीर्ति	»
37 असातावेदनीय	»
38 यशाकीर्ति	»
39 सातावेदनीय	»
40 उच्चगोत्र	»
मनुष्यगति में	ओघ के समान जानना
देवगति में	
1) सम्यक्त्व	सब से मन्द अनुभाग
2) चक्षुदर्शनावरण	अनन्तगुणा
3) श्रुतज्ञानावरण	»
4) मतिज्ञानावरण	»
5) अचक्षुदर्शनावरण	»
6) अवधिज्ञाना. अवधिदर्शना	»
7) हास्य	»
8) रति	»
9) जुगुप्सा	»
भय	»
शोक	»
अरति	»
पुरुषवेद	»
स्त्रीवेद	»
संज्वलन कषाय	»
कार्मण शरीर	»
⋮	
दानान्तराय तक	»
मनःपर्ययज्ञानावरण	»
अप्रत्याख्यानावरण कषाय	»

प्रत्याख्यानावरण कषाय	अनन्तगुणा	लाभान्तराय	अनन्तगुणा
केवलज्ञाना. केवलदर्शना	"	दानान्तराय	"
प्रचला	"	मनःपर्ययज्ञानावरण	"
निद्रा	"	अवधिज्ञाना. अवधिदर्शनावरण	"
सम्यग्मिथ्यात्व	"	श्रुतज्ञानावरण	"
अनन्तानुबन्धी कषाय	"	चक्षुदर्शनावरण	"
मिथ्यात्व	"	मतिज्ञानावरण	"
औदारिकशरीर	"	अप्रत्याख्यानावरण कषाय	"
कार्मणशरीर	"	प्रत्याख्यानावरण कषाय	"
देवगति	"	अनन्तानुबन्धी कषाय	"
अयशकीर्ति	"	केवलज्ञाना. केवलदर्शनावरण	"
असातावेदनीय	"	मिथ्यात्व	"
उच्चगोत्र	"	प्रचला	"
यशकीर्ति	"	निद्रा	"
सातावेदनीय	"	प्रचलाप्रचला	"
देवायु	"	निद्रानिद्रा	"
		स्त्यानगृद्धि	"
एकेन्द्रियों में		औदारिकशरीर	"
1)	सब से स्तोक	वैक्रियिकशरीर	"
2) हास्य	अनन्तगुणा	तिर्यगायु	"
3) रति	"	आहारकशरीर	"
4) जुगुप्सा	"	तैजसशरीर	"
5) भय	"	कार्मणशरीर	"
6) शोक	"	तिर्यग्गति	"
अरति	"	नीचगोत्र	"
नपुंसकवेद	"	अयशकीर्ति	"
संज्वलन कषाय	"	असातावेदनीय	"
वीर्यान्तराय	"	यशकीर्ति	"
अनन्तानुबन्धी कषाय	"	सातावेदनीय	"
परिभोगान्तराय	"		
भोगान्तराय	"		
~~लाभान्तराय~~			

प्रदेशउदीरणा में उत्कृष्ट मूलप्रकृतिदण्डक

	प्रकृति नाम	उत्कृष्ट उदीर्ण प्रदेशाग्र
१)	आयुकर्म	सब से स्तोक
२	वेदनीय	असंख्यातगुणा
३	मोहनीय	,,
४	ज्ञानावरण, दर्शनावरण अंतराय	,, तुल्य
५	नाम व गोत्र	,, तुल्य

	नरकगति में	संक्रान्त प्रदेशाग्र
१	आयु	सब से स्तोक
२	नाम, गोत्र	असंख्यातगुणा
३	ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय	विशेष अधिक
४	मोहनीय	,,
५	वेदनीय	,,

इसप्रकार सब गतियों में जानना चाहिए। विशेष इतना मनुष्यगति में मूल ओघ के समान है।

उदय की अपेक्षा जघन्य मूलप्रकृति दण्डक :-

आयु	स्तोक
नाम, गोत्र	असंख्यातगुणा
ज्ञानो, दर्शना, अन्तराय	विशेष अधिक
मोहनीय	,,
वेदनीय	,,

classmate
Date
Page

मनुष्यगति में प्रदेशाग्र

1. मिथ्यात्व
2. सम्यग्मिथ्यात्व
3. सम्यक्त्व